कलिमे की दावत

मौलाना
मोहम्मद साद कान्धलवी

भाग 1

मुरत्तिब
मौलाना मोहम्मद सिराज अररयावी

रहमानिया बुक डिपो नई दिल्ली

कलिमे की दावत

(हिस्सा अव्वल)

जब तक हमारे दर्मियान हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात नहीं रहेंगे, मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि ख़ुदा की क़सम दावत की सतह बुलन्द न होगी।

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़्द साहब कान्धलवी

किताब का नाम : कलिमे की दावत (भाग-1)
बयान : दाई इलल्लाह मौलाना मुहम्मद सअद साहब कान्धलवी
ज़ेरे निगरानी :
नज़्रे सानी :
नाशिर :
मत्बा :
कम्पोज़िंग
टाइटल :
सफ्हात 108
तादादे किताब : 1100

अस्बाब का मिल जाना भी इम्तिहान
और
अस्बाब से काम बन जाना भी इम्तिहान

इसी किताब में है मौलाना मुहंम्मद सअ्द साहब कान्धलवी का वह बयान जो 22.09.2001 को ईदगाह, नई दिल्ली में हुआ।

कहाँ पर क्या है

بسم الله الرحمٰن الرحيم

बयान
मौलाना मुहम्मद सअ़्द साहब कान्धलवी

तारीख़ : 2-11-2001 जगह : रायविन्ड, पाकिस्तान

بسم الله الرحمٰن الرحيم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुज़ुर्गो! इस वक़्त एक बहुत अहम ज़िम्मेदारी है और वह ज़िम्मेदारी यह है कि बात को ध्यान से सुनना और जो सुना इसको अपनी दावत में लाना, अगर बात ध्यान से न सुनी गयी तो बात दावत में अधूरी आयेगी।

इसलिये बात को ध्यान से सुनना और फिर इसको अपनी दावत में लाना, क्योंकि जो बात दावत में

आयेगी वही बात यक़ीन में आयेगी जो बात दावत में नहीं आयेगी वह यक़ीन में नहीं आयेगी और जब यक़ीन में नहीं आयेगी तो वह अ़मल में आ ही नहीं सकती।

दीन के अ़मल में आने का रास्ता यक़ीन है और यक़ीन में आने का रास्ता दावत है।

इसलिये सबसे पहली बात अ़र्ज़ है कि बात को ख़ूब ध्यान के साथ सुना जाये, पूरी बात सुनी जाये और पूरी बात दावत में लायी जाये, क्योंकि दीन ज़िन्दगियों में यक़ीन के रास्ते से आयेगा, मालूमात के रास्ते से नहीं आयेगा और यक़ीन दावत से हासिल होगा। दावत का ख़ास्सा है यक़ीन का पैदा करना।

अभी तक दीन कहने-सुनने में आ रहा हैं, अभी तक दीन पढ़ने-लिखने में आ रहा है।

जब दीन दावत में आयेगा तो यक़ीन में आयेगा और दीन दावत में जब आयेगा, जब कलिमा "ला इलाह इल्लल्लाह" की हक़ीक़त दावत से हासिल की जायेगी।

इसलिये बात को ध्यान से सुनना है और इसी बात को अपनी दावत और मेहनत में लाना है, क्योंकि जो चीज़ मेहनत में आयेगी वही यक़ीन मे आयेगी।

यक़ीन सबसे पहली शर्त है क्योंकि बग़ैर यक़ीन के वादे पूरे नहीं होते। जब दीन से वादे पूरे होते नज़र नहीं आते तो बावुजूद दीन का इ़ल्म होंने के, दीन निगाहों में गिरी हुई चीज़ और ज़हनी तौर पर हल्की चीज़ और माहौल के अन्दर एक रस्मी चीज़ बन जाता

है।

दीन से कामयाबी यक़ीन के बक़द्र मिलेगी, इसलिये कि अल्लाह के वादे उसके हुक्मों के साथ हैं और अल्लाह की कुदरत, वादों के साथ है।

अगर अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो आमाल के ज़रीये अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा नहीं मिल सकता, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात-ए-आ़ली से बराहे रास्त इस्तिफ़ाद के लिये।

"कायनात का यक़ीन निकलना शर्त है"

कायनात के यक़ीन के साथ अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाने का कोई रास्ता नहीं, इसलिये सबसे पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को जो दावत दी गयी है और जो कलिमा देकर भेजा गया है, वह कलिमा "ला इलाह-इल्लल्लाह" है।

मेरे बुजुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो। "यह सबसे बड़ी माया और यह सबसे बड़ी दौलत" जिसको हासिल किये बग़ैर, इन्सानों की हर क़िस्म ज़िल्लत में, परेशानियों में, तक्लीफ़ों में पड़ी हुई है और हमेशा पड़ी रहेगी, वह क़ीमती चीज़ सीखने की ईमान है। कभी उम्मत ज़िल्लत में से बग़ैर ईमान के नहीं निकली।

जितना भी सामान हुआ, जितने भी हथियार हुए उन सबके साथ ज़िल्लत यक़ीनी रही, इज़्ज़त अगर उम्मत को मिली है तो सिर्फ़ ईमान से, इज़्ज़त अगर मिली है तो कलिमे से, इज़्ज़त अगर मिली है तो आमाल से।

लेकिन उम्मत ईमान के बनाने और कलिमे की दावत से इतनी नावाक़िफ़ हो गई है कि गोया ईमान की

दावत ईमान वालों के लिए ज़रूरी न रही, बल्कि ईमान की दावत कलिमे की दावत ग़ैरों के लिए समझी जाने लगी। अल्लाह ने कलिमे की दावत पर जिन को जमाया था जिन्हें कलिमे की दावत का मुकल्लफ़ बनाया था, वे ख़ुद ईमान वाले थे।

सबसे बड़ी भूल और चूक यह हुई कि ईमान वालों ने ईमान की दावत, ईमान वालों ने ईमान की मेहनत और ईमान वालों ही ने ईमान के बनाने से ग़फ़्लत बरती।

ईमान वालों ही ने ईमान की दावत छोड़ दी और इस ग़लतफ़ह्मी में छोड़ दी कि इन्होंने ईमान की दावत को ग़ैरों के लिए समझा, कलिमे की दावत को ग़ैरों के लिए समझा, हालाँकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ुद ईमान वालों से कह रहे हैं कि "ईमान वालो ईमान लाओ"

" या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू" (कुरआन)

ईमान वालों से कह रहे हैं ईमान लाओ, काफ़िरों से नहीं कह रहे ईमान लाओ

" या अय्युहल्लज़ीन कफ़रू आमिनू"

यह नहीं कह रहे।

ईमान वालों से कह रहे हैं कि "ऐ वे लोगों जो ईमान लाये हो, वह ईमान जो हमारे यहां मतलूब है, ऐ लोगो इस तरह ईमान लाओ जिस तरह सहाबा किराम ईमान लाये हैं।

"आमिनू कमा आमनन्नासु" (कुरआन)

तमाम उ़लमा का इत्तिफ़ाक़ है कि "नास" से मुराद सहाबा किराम हैं।

इस लिए क़यामत तक आने वाले इन्सानों को क़यामत तक आने वाले ईमान वालों को, ईमान-ए-सहाबा की दावत है अल्लाह की तरफ़ से "आमिनू कमा आमनन्नासु" अल्लाह ख़ुद ईमान-ए-सहाबा की दावत दे रहे हैं।

ईमान से ग़फ़लत, तमाम ज़िल्लतों का और परेशानियों का सबसे बड़ा सबब है, इसलिए मेरे दोस्तो! बग़ैर ईमान के जितने भी वादे अल्लाह के अवामिर (हुक्मों) के साथ हैं, वे बग़ैर ईमान के कभी पूरे नहीं होते, यानी बग़ैर ईमान के अल्लाह के वादे कभी पूरे नहीं होते।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जितने भी वादे किये हैं, वे तमाम वादे "आमाल" के साथ हैं, लेकिन उन अ़मलों पर अल्लाह के वादे जब पूरे होंगे, जब अल्लाह के वादों का उन अ़मलों पर पूरा होने का यक़ीन होगा, अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो फिर अ़मल के कर लेने पर वादे पूरे नहीं होते, अ़मल के इ़ल्म पर भी वादे पूरे नहीं होते कि हाँ, हमें अ़मल का इ़ल्म है।

"अ़मल है पर उस अ़मल पर अल्लाह के वादे पूरे होने का यक़ीन नहीं है तो वह अ़मल इन्तिहाई रस्मी, वह अ़मल बेजान, जिस अ़मल पर अल्लाह के वादों का यक़ीन न हो जिस अ़मल में एहतिसाब न हो कि अल्लाह इस अ़मल पर हमें क्या देंगे?

इसलिए मेरे दोस्तो! याद रखें इस बात को सब, जितने भी नये-पुराने हैं कि बग़ैर ईमान के न अ़मल बन सकता है न बग़ैर ईमान के आमाल पर अज्र मिल

सकता है न बग़ैर ईमान के पूरा दीन ज़िन्दगियों में आ सकता है।

ज़िन्दगी में पूरा दीन आने के लिए उस दीन से पूरी कामयाबी लेने के लिए एक ही शर्त है और एक ही रास्ता है कि अल्लाह के वादों का यक़ीन सीखा जाये, ईमान, ईमान की हक़ीक़त के साथ हासिल किया जाये। जब ईमान नहीं होता तो आमाल करने की बहुत सी वुजूहात होती हैं।

या अ़मल करेगा हालात की वजह से या अ़मल करेगा आ़दत की वजह से या अ़मल करेगा ख़्वाहिश की वजह से या अ़मल करेगा माहौल की वजह से या अ़मल करेगा सियासत की वजह से।

इन वुजूहात की वजह से अ़मल करना यह दीन नहीं है बल्कि दीन के साथ खेल है। दीन का तक़ाज़ा यह है कि इसके अन्दर अल्लाह के हुक्म को पूरा करके दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का यक़ीन हो यानी अपने दीन से इसे कामयाबी का यक़ीन हो, यह अ़लामत ईमान की हैं। जब ईमान नहीं होगा तो आमाल न जाने किन-किन वुजूहात से किये जायेंगे।

अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में जो रूकावट आयेगी मैं उन रूकावटों की कोई परवाह नहीं करूंगा, क्योंकि रूकावट अल्लाह की तरफ़ से हमें आज़माने के लिए भेजी गयी है मुझे कामयाब करने के लिए, कि इससे हमारी तरबियत भी अल्लाह करेंगे और तरक़्क़ी भी होगी हमारी, ये ज़ाब्ते हैं अल्लाह के करने के। ये ईमान का तक़ाज़ा है ये ईमान की अ़लामत है।

जब यह ईमान नहीं रहता मेरे दोस्तो! तो आमाल अन्दर का तक़ाज़ा नहीं रहते बल्कि वे आमाल माहौल की वजह से या आ़दत और हा[illegible] की वजह से किये जाते हैं इसलिए यह सारी मेहनत ही ईमान बनाने की है।

इस काम की बुनियाद इस काम का मक़सद नबियों की बेअ़सत का मक़सद नबियों की मेहनत की इब्तिदा।

शरीअ़त तो हर नबी को बाद में मिली, सबसे पहले हर नबी ने कलिमे की दावत दी, अल्लाह तआ़ला ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि "हमने जो नबी भेजा उसको सबसे पहले कलिमे की दावत दी है" बल्कि अल्लाह की तरफ़ से ख़ुद सबसे पहली दावत कलिमे की है:

"इन्ननी अनल्लाहु ला इलाह इल्लल्लाहु फ़अ़बुदनी"

हर नबी को अल्लाह ने यही दावत दी और फिर इसी दावत को नबियों ने अपनी क़ौमों को दिया, मूसा अ़लै० को सबसे पहले अल्लाह ख़ुद इसी कलिमे की दावत दे रहे हैं।

बयान

मौलाना मुहम्मद सअ़्द साहब कांधलवी

तारीख़ : 22.09.2001

जगह : ईदगाह, नई दिल्ली

मुबल्लिग़े अव्वल दाई-ए-अव्वल ख़ुद अल्लाह की ज़ात है, अल्लाह तआ़ला ख़ुद कलिमे की दावत दे रहे हैं, फिर नबियों से कलिमे की दावत दिलवाई।

जितने भी यक़ीन बिगड़े हुए-हुए, जितने भी अ़क़ाइद

बिगड़े हुए-हुए, जितनी भी ज़ुल्मतों में क़ौमें पड़ी हुई-हुई, हर नबी ने अपनी इब्तिदा कलिमे से की है।

ये वे क़ौमें होती थीं, जो क़ौमें पहले ईमान पर थीं जिस नबी की भी क़ौम हुई, होता यह था कि जब नबी जाते थे तो दावत भी उनके साथ जाती थी, जब दावत गयी तो यक़ीन बिगड़े जब यक़ीन बिगड़े तो आमाल बिगड़े।

फिर आमाल के बिगड़ने पर यक़ीन आमाल से हटकर अस्बाब पर आया फिर अस्बाब के तक़ाज़े की वजह से आमाल बिलकुल छोड़ दिये।

जब दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं रहा करता तब दीन ज़िन्दगियों से निकल जाया करता है यह दीन का हम पर हक़ है कि उससे कामयाबी का यक़ीन हमारे अन्दर हो, हर ज़माने की कारगुज़ारी है यह, यानी हर नबी के ज़माने की यही कारगुज़ारी है कि, नबी आये साथ में कलिमे की दावत लाये तो कलिमे की दावत दीन को ज़िन्दगी में खींच लायी नबी गये साथ में उनके दावत गयी, दावत के जाते ही दीन ज़िन्दगी से निकलना शुरू हो गया। यक़ीन क्या गया दीन को साथ ले गया। इसलिए कि कलिमे की दावत से यक़ीन था और यक़ीन से दीन था, हाँ यक़ीन होगा तो दीन आ जावेगा।

यक़ीन यानी ईमान, दीन यानी इस्लाम, हाँ नबी गये तो दावत गयी, दावत गयी तो ईमान गया, ईमान गया तो इस्लाम भी गया सिर्फ़ इस्लाम की शक्ल रह गयी तो अगले नबी ने आकर फिर उस क़ौम पर मेहनत

की, हर दो नबियों के दरमियान का जो वक़्फ़ा होता था, उस वक़्फ़े में दावत के न होने की वजह से क़ौम गुमराह हो जाया करती थी, इसलिए कि ईमान के बनाने का सामान ख़त्म हो गया और ईमान के बनाने का जो सबसे बड़ा यक़ीनी सबब है, "दावत इलल्लाह" वह ख़त्म हो गया।

जब "दावत इलल्लाह" ख़त्म हो गयी तो फिर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन भी दिल से निकल गया, ख़त्म हो गया, इसलिए कि यह बात तो यक़ीनी है कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन बनेगा, यह बात तो फ़ितरत में है इन्सान की कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन बनेगा, दावत मुल्क व माल की हो, या दावत अस्बाब की हो, या दावत तिजारतों की हो, या दावत सेहत के लेने में डाक्टरों की हो, या दावत अमन के लेने में हुकूमतों की हो, या दावत हिफ़ाज़त करने में हथियारों की हो, यह बात तो यक़ीनी है कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन आयेगा।

ऐसा नहीं हो सकता कि दावत अस्बाब की हो और यक़ीन आमाल का हो और ऐसा कभी नहीं होगा कि दावत अस्बाब की हो और यक़ीन आमाल का हो और ऐसा भी कभी नहीं होगा कि दावत अस्बाब की हो और उन अस्बाब में अल्लाह की मदद आवे, ऐसा क़भी नहीं होगा, अस्बाब के रास्ते अल्लाह की मदद जब आती है जब अस्बाब का यक़ीन निकल जावे।

जब अस्बाब का यक़ीन निकला हुआ होगा तो

जितने अस्बाब हमारी राहत के हैं, ग़ैरों के लिए ये हलाकत के अस्बाब बन जावेंगे और ग़ैरों की हलाकत के अस्बाब ईमान वालों के लिए राहत के अस्बाब बना दिये जावेंगे यानी बात ही फिर पलट जावेगी कि अल्लाह ने जितने हलाकत के अस्बाब बनाये हैं वे सारे के सारे अस्बाब, ईमान वालों के लिए राहत में इस्तिमाल होंगे और ईमान वालों के राहत के अस्बाब बातिल के लिए हलाकत में इस्तिमाल होंगे कि अल्लाह तआला यक़ीन वालों के लिए अपनी कुदरत का इस्तिमाल करके अस्बाब की शक्लों को बदल देते हैं कि, लाठी को साँप में बदल देते हैं, आग को बाग़ में बदल देते हैं, उहद में अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० की टहनी को तलवार में बदल देते हैं।

तमाम नबियों के साथ जो वाक़िआत हुए, उसमें यही मिलेगा कि यक़ीन वालों के लिए पानी में रास्ते और न मानने वालों के लिए यह पानी हलाकत का ज़रीया।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बनाकर इन्सानों के हाथ में नहीं दे दिये बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बना कर अपनी कुदरत में रखे हैं, उन अस्बाब से ईमान वाले फ़ायदा उठा सकेंगे, अगर ईमान नहीं है तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ज़ानों से फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता।

क्योंकि अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाने के लिए मेरे दोस्तों कायनात का यक़ीन निकालना शर्त है अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए अस्बाब का यक़ीन निकालना शर्त है।

यह बात नहीं है कि अल्लाह ने किसी को दुकान दे दी तो उसे कमाने की कुदरत दे दी या किसी को ज़मीन दे दी तो उसे उगाने की भी कुदरत दे दी या किसी को हथियार दे दिये तो उसके इस्तिमाल पर कुदरत दे दी या किसी को बीवी दे दी तो उसे बच्चा पैदा करने की कुदरत दे दी।

कितने बे औलाद हैं, कितने है जो हथियार में परेशान हैं, कितने हैं जो दवाओं से बीमार हैं, कितने हैं जो अस्बाब के होते हुए भी मोहताज हैं, कितने ऐसे मिलेंगे जिनकी दुकान पर कर्ज़ा उनकी दुकान के सामान से ज़्यादा होगा कि सामान पूरी दुकान का 50,000/- और कर्ज़ा दुकान पर 75,000/-तो मेरे दोस्तों अल्लाह ने किसी को कुदरत नहीं दी है बल्कि अस्बाब दिये हैं और कुदरत अस्बाब में है ही नहीं, कि कुदरत अस्बाब में हरगिज़ नहीं है, जो यूँ समझे कि अस्बाब में कुदरत है वह तो दुनिया में अस्बाब बनायेगा और जो यक़ीन करेगा की कुदरत अल्लाह की ज़ात में है वह अल्लाह की ज़ात से फ़ायदा उठाने के अस्बाब बनायेगा यानी आमाल बनायगा की अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने का यह रास्ता है कि आमाल बनाओ, अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए अस्बाब नहीं हैं कि मैं अल्लाह की कुदरत से ग़ल्ला लेने के लिए ज़मीन बनाँऊ, तो सैलाब आयेगा या सूखा पड़ेगा और मैं अल्लाह की कुदरत से औलाद लेने के लिए बीवी रखूँ तो बाँझ ही रहेगी।

मेरे बुजुर्गो, दोस्तो! एक है कुदरत को साथ लेना,

और एक है अस्बाब को साथ लेना। अस्बाब के साथ लेने में अल्लाह का कोई वादा नहीं, चाहे तो वक़्ती तौर पर काम बना दे, कामयाब करदे फिर हमेशा के लिए नाकाम कर दे, यही बात है कि तुम में से जो दुनिया चाहेगा वह हमेशा के लिए नाकाम होगा और जो आख़िरत चाहेगा हम उसकी दुनिया बनादेंगे, चाहे बक़द्र-ए-ज़रूरत बनायें या चाहे ज़रूरत से ज़्यादा दे दें, जो आख़िरत चाहेगा उसकी दुनिया बन जायेगी और जो दुनिया चाहेगा उसकी आख़िरत बिगड़ेगी।

इसलिए याद रखो मेरे दोस्तो कि अल्लाह की कुदरत अस्बाब में नहीं है और हालात का ताल्लुक़ भी अस्बाब से नहीं है, तो जब न हालात का ताल्लुक़ अस्बाब से है और कुदरत भी अस्बाब में नहीं है तो फिर हमारी मेहनत बेकार है, क्यों बेकार है?

इसलिए बेकार है कि कुदरत हमारे ख़िलाफ़ है, कुदरत अस्बाब बनाने वालों के साथ नहीं होती कि अस्बाव बना लो तो कुदरत साथ हो जाये।

हाँ लोग यही कहते हैं कि तुम पहले अस्बाब बनाओ फिर तुम अल्लाह से दुआ मांगो, उल्टी बात करते हैं अल्लाह को न पहचानने की वजह से ये बिलकुल उल्टी बात करते हैं।

कुरआन के भी ख़िलाफ़, और हदीस के भी ख़िलाफ़ है ये बात कि पहले तुम अस्बाब बनाओ, फिर अल्लाह से दुआ मांगो क्यों? क्योंकि सही बात यह है कि तुम अल्लाह से माँगो उसके देने के ज़ाब्तों के ज़रीए, उसके देने के ज़ाब्ते क्या हैं?

"इय्या-क-नअ्बुदु व इय्या-क-नस्तईन"

यह उसके देने का ज़ाब्ला है कि मैं तेरी इबादत करके तुझसे लेता हूँ।

मेरे दोस्तो! एक इस कलिमे के अल्फ़ाज़ हैं, और एक इस कलिमे का इख़्लास है।

कलिमे की दावत कलिमे का इख़्लास हासिल करने के लिये है और हदीस यह बतला रही है कि हराम से क़लिमें के इख़्लास के बग़ैर नहीं बचा जा सकता।

कलिमे का इख़्लास यह है कि यह कलिमा इसे हराम से रोक दे, यह कलिमे का इख़्लास है। कलिमे का इख़्लास कलिमे की दावत से हासिल होगा।

कलिमे की दावत के बारे में मुसलमानों के अन्दर आम ग़लत फ़हमी यह है कि कलिमे की दावत तो ग़ैरों के लिये है हम तो हैं ही कलिमे वाले, यह आम ग़लत फ़हमी है। यह ग़लत फ़हमी इस वजह से पैदा हुई कि ख़ुद ईमान वालों के दरमियान ईमान की दावत ख़त्म हो गयी।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिये थी; क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से ईमान लाने का हुक्म ख़ुद ईमान वालों के लिये है:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

और ग़ैरों को दावत, इस्लाम की है, अपनों को दावत ईमान की है। जब ख़ुद ईमान वालों ने ईमान की दावत छोड़ी तो ईमान की हक़ीक़त को हासिल करने और कलिमे की हक़ीक़त को हासिल करने का सामान ख़ुद ईमान वालों में से ख़त्म हो जायेगा।

अब तो इस बात की मेहनत की ज़रूरत है कि जिन ईमान वालों को ईमान लाने का हुक्म दिया गया था कि:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

ईमान वालो ईमान लाओ कैसा ईमान लायें,

"आमिनू कमा आमनन्नास"

कि क़यामत तक के आने वाले ईमान वालों को यह अल्लाह की तरफ़ से दावत है कि "ईमान लाओ जैसा ईमान सहाबा-ए-किराम लाये हैं। बड़ी ग़लत फ़हमी यह हुई कि ईमान वालों ने ईमान की दावत को ग़ैरों के लिये समझा, जब कि इनको बनाया था ईमान का दाई मगर ये बन बैठे ईमान के मुद्दई, कि ईमान की दावत तो हो गयी ख़त्म ईमान वालों में से तो इस दावत की जगह दावा आ गया, हाँ सच्ची अर्ज़ कर रहा हूँ कि ईमान वालों में ईमान का दावा आ गया।

अब जब ईमान का दावा आया तो हर मुसलमान अपने ईमान से पूरी तरह मुत्मइन हो गया, हालाँकि हक़ीक़त यह है कि जितना ईमान इसके अन्दर आता जायेगा उसी के बक़द्र यह अपने ईमान की तरफ़ से फ़िक्र-मन्द होगा और निफ़ाक़ का ख़ौफ़ इसके अन्दर बढ़ता जायेगा, लेकिन जितना-जितना इसका ईमान कमज़ोर होता जायेगा, उतना ही यह ईमान से बेफ़िक्र रहेगा और अलामात-ए-निफ़ाक़ इसके नज़दीक ख़ूबियाँ बनती जायेगीं।

झूठ बोलना ख़ूबी होगी, ख़यानत करना ख़ूबी होगी, वादा-ख़िलाफ़ी करना ख़ूबी होगी।

वादा-ख़िलाफ़ी करने वाले को अक़्लमन्द कहा जायेगा।

यानी सहाबा के ज़माने में जो अ़लामात-ए-निफ़ाक़ थीं वे अ़लामात ईमान वालों के दरमियान ख़ूबियाँ बन जायेंगी।

अबू बकर और हन्ज़ला रज़ि० ने कोई निफ़ाक़ का क़ाम नहीं किया था कि न झूठ बोला न वादा-ख़िलाफ़ी क़ी थी, न ख़्यानत की थी इन दोनों ने इस में से कोई काम नहीं किया था, सिर्फ़ यक़ीन की वह कैफ़ियत जो हुज़ूर सल्ल० के साथ रहने में होती थी, जब वह कैफ़ियत यक़ीन की अपने माहौल में न पायी गयी, तो इस पर यह ख़तरा हुआ कि "हन्ज़ला तू मुनाफ़िक़ हो गया और अबूबकर तू मुनाफ़िक़ हो गया।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! हुक्म तो अल्लाह की तरफ़ से यह है कि इतना ईमान लाओ, जितना ईमान सहाबा किराम लाये हैं, लेकिन ईमान की दावत के निकल जाने से कलिमे के बोल का नाम ईमान हो गया, कि यह हराम काम करे और इसको इतना भी एहसास नहीं कि यह हराम है, यह बात नहीं है कि इसको हराम का इल्म नहीं है इसे हराम का इल्म है लेकिन ईमान की सबसे अदना अ़लामत है कि बुराई को दिल से बुरा समझना, हदीस का मफ़्हूम है कि इसके बाद ईमान का कोई ज़र्रा भी इसके अन्दर नहीं बचा।

यह सबसे आख़िरी दर्जा है ईमान का कि एक आदमी गुनाह को गुनाह न समझे, हराम को हराम न समझे तो अब इसके अन्दर ईमान का ज़र्रा भी नहीं

बचा इसलिये सबसे पहले तो यह सोचना पड़ेगा कि ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिये है, इसी का हुक्म है:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

ईमान की मज्लिसें अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० ख़ुद ईमान वालों के साथ लगाते थे कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुज़ुर्गो! ईमान ज़र्फ़ है और अह्कामात बहैसियत मज़रूफ़ के हैं, ज़र्फ़ कहते हैं बर्तन को और मज़रूफ़ कहते हैं बर्तन में रखी जाने वाली चीज़ को कि जब बर्तन होगा तो चीज़ ज़ाया नहीं होगी अगर ज़र्फ़ से यानी ईमान से ग़फ़्लत है तो बग़ैर बर्तन ईमान के अहकामात से फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता क्योंकि बग़ैर ईमान के अल्लाह के वादे पूरे नहीं हो सकते।

आमाल होंगे लेकिन अगर इन आमाल से कामयाबी का यक़ीन नहीं है, तो अस्बाब-आमाल में ग़फ़्लत लायेंगे अस्बाब-आमाल की महरूमी का सबब बनेंगे अगर आमाल से कामयाबी का यक़ीन नहीं आया तो सबसे बड़ा आमाल से महरूमी का जो सबब है, वह अस्बाब का यक़ीन है, इसलिये बुनियादी तौर पर सबसे पहले सहाबा किराम ने ईमान सीखा कि "तअ़ल्लम्नल ईमान क़ब्ल तअ़ल्लम्नल कुरआन" हमने ईमान सीखा कुरआन सीखने से पहले जब ईमान सीखा तो जो हुक्म जिस वक़्त नाज़िल हुआ, वह सीधा इनके अ़मल में आया, हाँ हुक्म किताबों में नहीं आया।

मेरे दोस्तो! शरीअ़त के निफ़ाज़ का सबसे बड़ा सबब हर ईमान वाले का अपना यक़ीन है, हर ईमान वाले पर उसका निगराँ उसका ईमान है कि मेरा अल्लाह मुझको देख रहा है, मेरे अल्लाह ने इस अ़मल पर यह वादा और इस बदअ़मली पर ये वईदें उतारी हैं, बग़ैर ईमान के वादे पूरे नहीं हो सकते और न ही एहतिसाब पर अ़मल ही हो सकता है क्योंकि ईमान के बक़द्र ही एह़तिसाब आयेगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस अ़मल पर यह देने वाले हैं और इस अ़मल के छोड़ने पर ये वईदें हैं, फिर अल्लाह के ख़ज़ानों से सहाबा किराम ने बराहेरास्त किस तरह फ़ायदा उठाया।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को ईमान सिखलाया है, यह ईमान–ईमान की दावत से बनता है लेकिन हुआ यह कि ईमान की दावत ईमान वालों में से निकल गयी, इस ख़्याल से कि हम तो हैं ही ईमान वाले कलिमे की दावत तो दूसरों के लिये है जब कि अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं कि ईमान वालो ईमान लाओ,

"आमिनू कमा आमनन्नासु"

जैसा ईमान सहाबा किराम लाये हैं, उनके जैसे ईमान लाओ, इसलिये सहाबा वाले ईमान की दावत है और सहाबा वाले ही ईमान की मेहनत है और सहाबा वाला ईमान ही मत्लूब है।

हम अपने ईमान से इसलिये मुत्मइन हैं कि हम अपने आपको ग़ैरों के मुक़ाबले में देख रहे हैं, हालाँकि हमें ईमान की अल्लाह की तरफ़ से जो दावत दी गयी

है सहाबा को नमूना बना कर:

"आमिनू कमा आमनन्नासु"

कि ईमान लाओ जैसा सहाबा किराम लाये हैं तो ऐसी मददें, ऐसी नुसरतें और अल्लाह के वादे पूरे होंगे, जो वादे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सहाबा किराम के साथ पूरे किये हैं फिर जो ईमान व यक़ीन इस कैफ़ियत के साथ बनेगा उस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने वादों को पूरा फ़रमायेंगे।

क्योंकि अल्लाह के वादे उसके हुक्मों के साथ हैं, और अल्लाह की कुदरत वादों के साथ है, अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है।

अस्बाब तो कुदरत से बने हुए हैं अल्लाह ने अस्बाब बना कर अपनी कुदरत में रखे हैं।

यह बात नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब बना कर इन्सानों के हवाले कर दिये हों, इस वक़्त तो हमने अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब को असल ठहरा लिया है कि ख़ुद ईमान वाले अस्बाब में कामयाबी मांगेंगे।

यह रास्ता नाकामी का है

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कुदरत ईमान वालों के साथ आमाल पर यक़ीन की शर्त के साथ है।

अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है कि जैसे इस वक़्त अस्बाब बना कर लोग दुआऐं मांगते हैं।

ताजिर के ज़हन में यह है कि दुकान बनाना मेरे जिम्मे है इसमे कामयाबी अल्लाह देंगे।

ज़मीनदारों के ज़हन में यह है कि ज़मीन बनाना मेरे

ज़िम्मे है इसमें कामयाबी अल्लाह देंगे।

डाक्टरों के ज़हन में यह है कि दवा बनाना और इलाज करना मेरे ज़िम्मे है सेहत और शिफ़ा अल्लाह देंगे।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो जब इन बातों का इन्कार किया जायेगा तो आप लोगों को इन्तिहाई हैरत होगी कि देखो अल्लाह के कामयाब करने के ज़ाब्ते ये अस्बाब नहीं हैं, यह हैरत इस वजह से होगी कि बार-बार इन अस्बाबों को सोचा गया है, बोला गया है, कि अल्लाह ने अस्बाब बनाये हैं अब इन अस्बाब को इख़्तियार करके अल्लाह से इनमें कामयाबी माँग लो, नहीं हरगिज़ नहीं यह रास्ता नहीं है कामयाबी का अल्लाह ने अपने वादे अस्बाब के साथ नहीं किये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जितने अस्बाब बनाये हैं, वे तमाम अस्बाब ईमान वालों के इम्तिहान के लिये हैं, ग़ैरों के इत्मीनान के लिये हैं, अगर दुनिया में कोई सबब न होता तब भी ईमान वाला कहता कि हमारी ज़रूरतों को हमारे अल्लाह पूरा करेंगे कि पालने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह ही की है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अस्बाब बनाये हैं ये सारे अस्बाब कुदरत से बने हैं पर कुदरत को अपनी ज़ात में रखा है, अल्लाह ने कुदरत को अस्बाब बनाने के बाद अस्बाब में रखा नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब बनाये और उसमे कुदरत भी रख दी ऐसा नहीं है।

इसलिये यह बात नहीं है कि अस्बाब बनाना हमारा

काम और इनमें कामयाबी देना अल्लाह का काम बल्कि बात यह कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म को पूरा करना हमारे ज़िम्मे है और कामयाब करना अल्लाह के ज़िम्मे है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब दें या न दें यह उनकी मर्ज़ी है, यह बात नहीं है कि अल्लाह ने अपने ख़ज़ाने से फ़ायदे उठाने के लिये दुनिया का यह कारखाना बना दिया ताजिर के ज़हन में यह है कि दुकान मैं बनाउँगा कामयाब अल्लाह करेंगे।

यही बात चल रही है पूरे आलम में हाँ, हमारे साथी जो दावत इलल्लाह की मेहनत में लगे हुए हैं तो वे भी यही बात चला रहे हैं, मुझे तो ताज्जुब होता है उस वक़्त जब हमारा साथी यूँ कहता है भाई दुनिया दारूल अस्बाब है इसलिये दुकान ज़रूरी है या तिजारत और ज़िराअ़त ज़रूरी है इसको कर के अल्लाह से कहो वह इस सबब में कामयाबी डाल देंगे, कि इन्सान को अल्लाह ने अस्बाब का मुकल्लफ़ किया है और कामयाबी अल्लाह के हाथ में है पर हरगिज़ यह बात नहीं है, बल्कि मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! अल्लाह के कामयाबी देने के ज़ाब्ते कामयाब करने के ज़ाब्ते, अल्लाह के अहकामात हैं,

"इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तईन"

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को वह यक़ीन सिखलाया था जिस यक़ीन की बुनियाद पर उनका अल्लाह के साथ गुमान, अल्लाह के वादों के एतिबार से था कि अल्लाह का वादा हमारे साथ यह है, अब सहाबा किराम को यक़ीनी अस्बाब सिखला दिये गये।

क्या सिखलाया गया? कि जो शख़्स पाँच नमाजों को एहतिराम से पढ़ेगा, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इसकी रिज़्क़ की तंगी दूर कर देंगे, इसकी बीमारियों को रफ़ा कर देंगे, इसको तन्दुरूस्ती अ़ता फ़रमायेंगे, इसके चेहरे को नूरानी बना देंगे, या जिस शख़्स के घर में सूरत वाक़िआ़ तिलावत होगी तो उस घर में फ़ाक़ा नहीं आयेगा, या जो शख़्स अपने हाथों से सदक़ा करेगा, उसकी बीमारी दूर हो जायेगी, 70 बलाओं और मुसीबतों से महफ़ूज़ रहेगा और जो शख़्स सुबह या शाम यह दुआ़ पढ़ ले उस पर कोई मुसीबत नहीं आयगी।

अल्लाहुम्म अन्–त रब्बी लाइलाह इल्ला अन्–त अ़लै–क तवक्कलतु व अन्–त रब्बुल अ़र्शिल करीमि माशाअल्लाहु का–न वमा लम यशअ् लम यकुन वला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम० अअ्लमु अन्नल्ला–ह अ़ला क़ुल्लि शैइन क़दीरूव् व अन्नल्लाह क़द अहा त बि कुल्लि शैइन इल्मा० अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बि–क मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आख़िज़ुम् बिनासिय–तिहा० इन्न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम''

मेरे मोहतरम दोस्तो–बुज़ुर्गो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ईमान वालों के अस्बाब पर, इनकी जान पर, इनके माल पर जब ये ईमान वाले यक़ीनी अस्बाब सीखेंगे तब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इन्हें आज़माने के लिये इन पर हालात डालेंगे, ये देखने के लिये कि इनका यक़ीन अस्बाब ही पर हैं या अहकामात पर, अल्लाह तआ़ला ईमान को परखते रहेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ईमान के मुअ़ल्लिम भी हैं और ईमान के मुम्तहिन भी हैं।

आप सल्ल० सहाबा को ईमान सिखला भी रहे हैं और उनके ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं।

एक सहाबी का इम्तिहान लिया, हाँ, जिसे ईमान सिखलाया था उसका अब इम्तिहान ले रहे हैं,

"कै फ़ अस बह् त या हारिसतु"

तो हज़रत हारिसा रज़ि० कह रहे हैं:

कि मैं सुबह कर रहा हूँ ईमान की हक़ीक़त के साथ हर चीज़ की कोई अ़लामत होती है, हर दावे की कोई दलील होती है, तो हज़रत हारिसा रज़ि० के जवाब का मुख़्तसर सा ख़ुलासा और मफ़हूम यह है कि मैं अपनी रोज़ी को, अल्लाह के ख़ज़ाने से जो उतर रही है उसमें से पानी के हर क़तरे के साथ, हर खजूर और ग़ल्ले के दाने के साथ जो फ़रिश्ते अल्लाह ने लगा कर भेजे हैं, इनकी आमद को देख रहा हूँ, तो आप सल्ल० ने हज़रत हारिसा रज़ि० से फ़रमाया कि ऐ हारिसा तुमने ईमान की हक़ीक़त को हासिल कर लिया है अब इस पर तुम जमे रहियो।

अब सारी दुनिया आकर यह कहे कि वहाँ यह हुआ, यहाँ वह हुआ, वहाँ आग लगी, वहाँ तुम्हारा मकान जल गया, तो यह यूँ यहाँ पर बैठे हुए कहें कि नहीं मेरा मकान नहीं जला।

मेरे मोहतरम दोस्तो! बात इन ख़बर को लाने वालों के यक़ीन की नहीं है जो आकर ख़बर दे रहे हैं आग लग जाने की, यहाँ पर तो बात ख़बर के सुनने वाले

अबूदर्दा रज़ि० की है कि जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दुआ के पढ़ लेने पर वादा किया हुआ है कि नुक़सान नहीं होगा तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेरा मकान कैसे जला सकते हैं जब कि मैं दुआ पढ़ कर घर से चला था, अल्लाह तो वादा ख़िलाफ़ी करेंगे नहीं, इसलिये मेरा मकान नहीं जल सकता, ऐसा नहीं हो सकता।

क्योंकि वादा ख़िलाफ़ी तो मोहताजगी की दलील है तो मोहताज ख़ालिक़ नहीं हो सकता, मख़्लूक़ मोहताज है, हर वक़्त, हर आन मख़्लूक़–ख़ालिक़ की मोहताज है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो ख़ालिक़ होने की वजह से मोहताजगी से पाक हैं, अल्लाह ने किसी सबब को भी कुदरत से बनाने के बाद कुदरत से ख़ारिज नहीं कर दिया, हर सबब अल्लाह की कुदरत में है, यहाँ मस्अला यह नहीं है कि कहने वाले क्या कह रहे हैं यहाँ तो मस्अला इस बात पर अटकता है कि अल्लाह ने मुझसे जब यह वादा कर लिया है तो हम पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी, मेरा मकान फिर कैसे जल सकता है, यह अल्लाह का वादा है, अब अबू दर्दा रज़ि० मकान के जलने की ख़बर देने वालों का यक़ीन कैसे कर लें, अल्लाह तो अपने बन्दे के गुमान के साथ हैं कि जैसा अल्लाह के साथ गुमान है वैसा ही उसके साथ अल्लाह का मामला है।

जब अबू दर्दा रज़ि० का गुमान अल्लाह के वादे पर है, चाहे एक आदमी आकर ख़बर दे या दो आदमी आकर मकान के जलने की ख़बर दें पर इनका गुमान

अल्लाह के वादे पर है फिर मकान कैसे जल सकता है।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुजुर्गो! ईमान लुग़त में कहते ही इसी को हैं कि अल्लाह की ख़बरों को मुहम्मद सल्ल० के भरोसे पर यक़ीनी मानना।

"ला इलाह, इल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

इसका तर्जुमा, इसका मतलब ही यह बनता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० जितनी भी ख़बरें लेकर आये हैं उन सारी ख़बरों को आप सल्ल० के एतिमाद और भरोसे पर यक़ीनी मानना,

"ला इलाह, इल्लल्लाहु-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

का यह ख़ुलासा है कि आप की लायी हुई सारी ख़बरों को आप के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, यह है कलिमा तय्यिबा का असल मफ़हूम।

इस यक़ीन को हासिल करना है कलिमे की दावत से, यह यक़ीन कलिमे की दावत से बनेगा, हुज़ूर सल्ल० ने हर सहाबी को कलिमे की दावत पर उठाया था, ईमान की मज्लिसें क़ायम होती थीं।

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुज़ुर्गो! इस वक़्त जितनी भी मज्लिसें दुनिया में क़ायम हो रही हैं, वे सारी की सारी मज्लिसें अस्बाब की बुनियाद पर, अस्बाब के बनाने पर, अस्बाब के फैलाने पर इन मज्लिसों से न कभी यक़ीन बना है न आइन्दा कभी बनेगा ईमान हासिल करने के लिये तो ईमान की मज्लिसें क़ायम करनी होंगी अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० की तरह इन मज्लिसों में ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे मलाइका के तज़्किरे बर्ज़ख़ के

तीनों सवालों के तज़्किरे अल्लाह के करने के ज़ाब्ते और अल्लाह की कुदरत वादों के साथ है कुदरत अल्लाह की ज़ात में है अल्लाह के वादे हुक्मों के साथ हैं हुक्म को पूरा करना यक़ीन के साथ और यक़ीन के लिये कायनात का यक़ीन निकलना शर्त है।

हर आन हर लम्हा हर मज्लिस की बुनियाद इन्हीं तज़्किरों को करना या हम इसकी दावत दे रहे हों या इन्हीं तज़्किरों को सोच रहे हों, अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा की तरह कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें।

एक सहाबी ने इसकी शिकायत की कि अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा यूँ कहते हैं कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें, तो क्या हम ईमान नहीं लाये हैं, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि नहीं यह अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा ईमान के लिये सबको फ़िक्र मन्द कर रहे हैं कि कहीं ईमान से बे फ़िक्र कोई न हो जाये इसलिये ईमान की मज्लिसें लगाता है और ईमान की मज्लिसों को पसंद करता है ये ईमान की मज्लिसें क़ायम की जाती थीं सहाबा के ज़माने में।

क्योंकि मेरे दोस्तो! दावत का ख़ास्सा यक़ीन को पैदा करना है, जब तक इस कलिमे की दावत आम न होगी, उस वक़्त तक इस कलिमे का यक़ीन हासिल नहीं होगा, इसलिये कि कलिमे की दावत अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी करती है, कलिमे की दावत अल्लाह की ज़ात से इस बात का तक़ाज़ा करती है जब तक यह कलिमा दावत में नहीं आयेगा, और यह कलिमा मुजाहदे में नहीं आयेगा, उस वक़्त तक कलिमे की हक़ीक़त

का हासिल करना मुश्किल है।

इसलिये कि मेहनत में अस्बाब आये हुए हैं, दिलों में अस्बाब का यक़ीन उतरा हुआ है, वह तो जो चीज़ मेहनत में आयेगी, वह चीज़ यक़ीन में आयेगी जो चीज़ दावत में आयेगी वह चीज़ यक़ीन में आयेगी इसलिये कि मुजाहदे से मुकाशफ़ा हुआ करता है, जो चीज़ भी इन्सान की समझ में आती है वह चीज़ उस लाइन के मुजाहदे से समझ में आती है और जो चीज़ समझ में आयेगी तो यही समझ यक़ीन में तब्दील हो जायेगी लेकिन कोई भी चीज़ जब समझ में आनी शुरू होगी तो उसी चीज़ का शक भी आना शुरू होगा यह अलामत है यक़ीन के आने की कि पहले समझ का और शक का आपस में मुक़ाबला होगा अब जितनी ज्यादा कुरबानियों के साथ मुजाहदा किया जायेगा शक दूर होता जायगा और समझ में आयी हुई बात यक़ीन में तब्दील होती रहेगी।

अगर कलिमा " ला इलाह– इल्लल्लाह" की दावत और इसकी लाइन का मुजाहदा नहीं है तो कलिमा

"लाइलाह–इल्लल्लाह"

के अल्फ़ाज़ पर ही इक्तिफ़ा करेंगे, अगर यह ज़बान पर है तो यह अल्फ़ाज़ हैं अगर दिमाग़ में है तो मफ़हूम है अगर कानों में हैं तो यह इसकी आवाज़ है अगर किताबों में है तो यह इसके हुरूफ़ हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो–बुजुर्गो! यह कलिमा 'लाइलाह इल्लल्लाह" अपने यक़ीन के साथ जब होगा, जब यह दिल के अन्दर दाख़िल हो, जब यह ईमान दिल का

ईमान बनेगा तब यह ईमान तक़्वा लायेगा।

इस ईमान के असरात इसके आज़ा व जवारेह पर पड़ेंगे, इसकी आँख ईमान के एतिबार से देखेगी इसकी ज़बान ईमान के एतिबार से बोलेगी इसके कान ईमान के एतिबार से सुनेंगे इसका दिमाग़ ईमान के एतिबार से सोचेगा इसके हाथ-पैर ईमान के एतिबार से हरकत करेंगे।

जब इसके दिल में यक़ीन न होगा तो इसके आज़ा-जवारेह बावुजूद हराम का इल्म होने के हराम से न रूक पायेंगे, यह बात नहीं है कि उम्मत को हराम-हलाल का इल्म नहीं है पर दिल में यक़ीन न होने की वजह से इसके अन्दर हराम से बचने की ताक़त न होगी, हराम से बचने की कुव्वत न होगी ईमान होने की अलामत ही यह है कि ईमान इसे हराम से रोक दे।

हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में एक सहाबी ने हुज़ूर सल्ल० से एक सहाबी की ग़ीबत की, तो आप ने फ़रमाया कि कुरआन के साथ खेल रहे हो, तो उन सहाबी ने कहा कि नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० मैं कुरआन से खेल नहीं रहा हूँ मैं तो कुरआन पर ईमान लाया हूँ आपने फ़रमाया! कि वह शख़्स कुरआन पर ईमान नहीं लाया जो शख़्स कुरआन के हराम को अपने अमल से हलाल साबित कर रहा है।

यह बात नहीं है कि हराम के हराम होने का इल्म नहीं है, सवाल तो अमल का है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! इल्म तो सिर्फ़ रहबरी करेगा और

अ़मल यक़ीन कर वावेगा, इल्म रहबरी करेगा, कि यह हलाल है, यह हराम है, यह सुन्नत है, यह बिदअ़त है यह शिर्क है, यह कुफ़्र है, यह जाइज़ है, यह नाजाइज़ है, लेकिन इसके मुताबिक़ कौन चलायेगा?

यूँ कहें कि वह तो अन्दर की ताक़त, यक़ीन ही है, इस के अ़लावा कोई कुव्वत नहीं है जो इसके अन्दर शरई अहकाम को नाफ़िज़ करा दे।

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुजुर्गो! हुकूमतों से नहीं शरीअ़तें चला करतीं वह तो अन्दर का यक़ीन शरीअ़त का तक़ाज़ा करता है कि मेरा रब मुझसे इस वक़्त यह चाहता है, अव्वल तो यह, कि ईमान वाले से गुनाह होगा नहीं, अगर ईमान वाले से गुनाह होगा तो इसका ईमान इसे गुनाह से पाक कराने के लिये लायेगा।

एक सहाबी थे उनसे ज़िना हो गया तो अपने आप को लाकर ख़ुद पेश किया कि "या रसूलल्लाह" सल्ल० मुझसे ज़िना हो गया आप सल्ल० ने यह सुन कर एक तरफ़ मुंह फेर लिया, वह सहाबी जिधर हुज़ूर सल्ल० ने चेहरा अपना किया था, अब उस तरफ़ से आये और फिर कहा कि "या रसूलल्लाह" सल्ल० मुझसे ज़िना हो गया है।

लेकिन आप सल्ल० चाह रहे हैं कि किसी तरह बात टल जाये, लेकिन वह सहाबी कह रहे हैं कि मुझसे ज़िना हो गया, तो आप सल्ल० उससे कह रहे हैं कि तुझे क्या मालूम कि ज़िना क्या होता है।

यह सहाबी कह रहे हैं कि मैंने ज़िना कर लिया, यह क्यों ऐसा कह रहे हैं? यह इनके अन्दर का

यक़ीन ऐसा करा रहा है कि यहाँ पाक हो जाओगे तो आख़िरत में बच जाओगे।

मेरे दोस्तो! भला किसने देखा था इन सहाबी को ज़िना करते हुऐ अरे वह तो ख़ुद आकर कह रहे हैं। इसी तरह एक चोर हज़रत अ़ली रज़ि० से आकर ख़ुद कह रहा कि अमीरूल मोमिनीन, मैंने ऊँट चुराया है, हज़रत अ़ली ने फ़रमायाः तूने उस ऊँट को अपना समझ के खोला होगा, तो वह चोर कह रहा हैः कि नहीं मैंने चुराया है, दूसरे का समझ कर ही उसे खोला है।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुजुर्गो! जब सुबह से शाम तक ईमान की इस तरह दावत दी जाती थी तो अन्दर इस तरह का यक़ीन बना हुआ था, "कि आदमी गुनाह कर के बेचैन होता था"

क्योंकि आप सल्ल० ने फ़रमाया है कि जिस आदमी को नेक अ़मल से खुशी हो और बुरा काम जो उससे हो गया, उसका ग़म हो तो यह उसके ईमान की अ़लामत है, और जिसे नेक काम कर लेने पर खुशी न हो और बुरा काम करके कोई ग़म न हो तो उसके निफ़ाक़ की अ़लामत है वह तो मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुजुर्गो! हर शख़्स अपने ईमान को ख़ुद नाप सकता है।

अपने आमाल देख ले, अपना यक़ीन देख ले, जब ईमान का माहौल होता है, तो गुनाह हो जाने के बाद गुनाहगार ख़ुद को लाकर पेश करता है, और यह बात नहीं है कि यह चीज़ सहाबा के ज़माने के साथ मख़्सूस थी।

इसलिये यह ग़लतफ़हमी है कि हम अस्बाब बनायें और फिर अल्लाह कामयाब करें, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो अस्बाब के बनाने पर उनको कामयाब करेगा जिनको अल्लाह ने अहकामात नहीं दिये और उन्हें भी उनके अस्बाब में तभी तक कामयाब करेगा, जब तक दुनिया में बसने वाले मुसलमानों में ईमान की दावत नहीं आ जाती, जिस दिन मुसलमानों में दावत-ए-हक़ आ जायेगी, कलिमे की दावत आ जावेगी, उसी दिन अल्लाह तआ़ला बातिल को नाकाम करेंगे, यह बात हरगिज़ नहीं कि हम अल्लाह के सामने अस्बाब बनाके पेश करें फिर दुआ़ माँगें कि ऐ अल्लाह तू इस सबब में कामयाबी डाल दे।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अस्बाब में कामयाबी डालने की वजह अस्बाब नहीं हैं बल्कि अल्लाह के अस्बाब में कामयाबी डालने की वजह जो है और वादा जो है वह उन अस्बाब में अहकामात का पूरा होना है कि तुम हुक्म को पूरा करो हम कामयाब करेंगे, चाहे अस्बाब देकर कामयाब करें चाहे बराहेरास्त अपनी कुदरत से कामयाब करें मोजिज़ा दिखला के या करामात ज़ाहिर करके कि उम्मती के साथ करामात और नबी के साथ मोजिज़ा यानी ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होना, इसका अस्बाब में कोई दख़ल नहीं है।

ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होना, इसका ताल्लुक़ अल्लाह की कुदरत से है, कुदरत का ताल्लुक़ वादों के यक़ीन के साथ है। अस्बाब के साथ कुदरत नहीं है, अस्बाब बनाकर भले ही काम न हो यह तो मुमकिन है, लेकिन

कुदरत साथ हो और काम न बने यह मुमकिन नहीं है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो! बहुत ठन्डे दिमाग़ से इस को सोचो कि अल्लाह के सामने क्या चीज़ बना कर पेश करनी है। अस्बाब बनाकर दुआएं माँगनी हैं या आमाल बनाकर पेश करके दुआएं मांगनी हैं। मेरे दोस्तो! दुआओं का ताल्लुक़ अस्बाब से नहीं है कि अस्बाब बनाओ फिर दुआ मांगो, दुआ और अस्बाब का कोई जोड़ नहीं है। दुआओं की क़ुबूलियत तो आमाल के साथ है, अस्बाब के साथ नहीं है।

जो लोग ग़ार के अन्दर फंस गये थे और चट्टान ने रास्ता बन्द कर दिया था। तो उनमें से हर एक ने अपना अ़मल पेश किया, इनमें इबादात का कोई अ़मल नहीं था एक का अ़मल अख़्लाक़ का है दूसरे का अ़मल मामलात का है तीसरे का अ़मल मुआ़शरत का है। तीनों ने अपने अ़मल पेश किये एक ने कहा कि ऐ अल्लाह तेरे ख़ौफ़ की वजह से तुझे ख़ुश करने के लिए मैंने एहसान किया, दूसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह मैं तेरे ख़ौफ़ की वजह से ज़िना से रूका तीसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह मैंने तेरी वजह से अपनी बीवी बच्चों के हक़ को पीछे करके अपने वालिदैन का एहतिराम किया, अपनी औलाद के हक़ से मुक़द्दम किया।

तू यहां से हमारे निकलने का रास्ता बना दे और हमें इस मुसीबत से नजात दे दे। इन्होंने अल्लाह के सामने अ़मल बना कर पेश किये सबब बना कर नहीं पेश किया कि कोई क्रेन बना कर पेश करते कि इस

पत्थर को उठा दे।

नहीं अमल बना कर पेश किया है, इन्हीं अमलों पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बग़ैर किसी ज़ाहिरी शक्ल के बराहेरास्त अपने हुक्म से चट्टान को हटाया, क्योंकि मेरे दोस्तो! जब क़ुदरत साथ होती है तो अल्लाह का अम्र बराहेरास्त आता है फिर अल्लाह से अस्बाब नहीं मांगे जाते हैं, जब यक़ीन बन जाता है तो फ़िर वह अल्लाह से बराहेरास्त माँगता है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बराहेरास्त उसकी हाजत को पूरा करते हैं जैसे इब्राहीम अलै० के लिए किया।

इब्राहीम अलै० के लिए क्या किया?

आग को बराहेरास्त हुक्म दिया कि तू ठण्डी हो जा, यह नहीं कि अल्लाह ने पानी भेजा हो, देखो याद रखना मेरे दोस्तो! जो अस्बाब अल्लाह ने बनाये हैं वे ख़ुद अपने बनाये हुए अस्बाब के भी पाबन्द नहीं हैं। हम यह समझें कि अल्लाह की क़ुदरत नये अस्बाब लायेगी, जो अस्बाब अल्लाह ने हमेशा से बनाये हुए हैं, "हवा और पानी"

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आज भी उन अस्बाबों के पाबन्द नहीं हैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो अस्बाब पर बराहेरास्त अपने हुक्म को इस्तिमाल करते हैं कि फ़िरऔन के खाने और पानी पर बराहेरास्त मेंढक और ख़ून का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया।

सालेह अलै० की क़ौम के लिए पहाड़ी पर ऊँटनी का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया आदम अलै० की पसली पर बराहेरास्त हव्वा का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया।

इब्राहीम अ़लै० के लिए बराहेरास्त आग पर अपना अम्र इस्तिमाल फ़रमाया कि ऐ आग ठन्डी हो जा।

यह नहीं कि उसको ठन्डा करने के लिए पानी लाते या कोई केमिकल लाते, उसको ठन्डा करने के लिए बराहेरास्त अम्र लाये इसकी वजह यह है कि मेरे दोस्तो! यक़ीन वाला अपने और अल्लाह के दर्मियान अस्बाब नहीं रखता, इब्राहीम अ़लै० ने यह नहीं कहा कि ऐ अल्लाह तू जिब्रील के ज़रीये मेरी मदद करदे, या इसराफ़ील, मीकाईल के ज़रीये मेरी मदद कर दे, या जो समन्दरों का फ़रिश्ता है उसके ज़रीये या हवा के फ़रिश्ते के ज़रीये मेरी मदद कर दे, हाँ यह नहीं कि इब्राहीम अ़लै० ने अल्लाह से अस्बाब माँगे हों बल्कि यक़ीनी सबब का भी इन्कार किया हाँ यक़ीनी सबब जिब्रील यह बहुत मज़बूत सबब है, लेकिन अल्लाह का ग़ैर है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि बहुत मोतबर सबब है कि जिब्रील अल्लाह के और रसूलों के दर्मियान, यह सफ़ीर हैं, अल्लाह के और नबियों के दर्मियान पैग़ाम पहुंचाने वाले, लेकिन मस्अला यहां यक़ीन का है और मस्अला यहां ईमान के इम्तिहान का है, अल्लाह तआ़ला यहां नबियों का इम्तिहान लेते हैं और अल्लाह तआ़ला नबी के ज़रीये सहाबा का इम्तिहान लेते हैं।

हुज़ूर सल्ल० सहाबा किराम को ईमान सिखला भी रहे हैं और ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं।

आप सल्ल० सहाबा किराम के मुअ़ल्लिम भी हैं

और मुम्तहिन भी हैं, आप सल्ल० सहाबा किराम को ईमान सिखला भी रहे हैं और उनके ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं कि सिखलाना भी आप के ज़िम्मे और उनका इम्तिहान भी लेना आप के ज़िम्मे कि जैसा ईमान हम सिखलाने आये हैं वैसा ईमान है भी या नहीं तो इब्राहीम अ़लै० का इम्तिहान है अल्लाह की तरफ़ से कि जिब्रील अ़लै० को इनके पास भेजा कि जाकर पूछो कि क्या चाहते हैं।

मेरे साथ हवा का भी फ़रिश्ता और पानी का भी फ़रिश्ता, अब आप जो चाहें इन्हें हुक्म दें और मैं ख़ुद जिब्रील, तो यह मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से आ सकती है, वरना जिब्रील तो अल्लाह के अ़लावा किसी की तरफ़ से आ नहीं सकते, यह बात तो यक़ीनी है कि यह मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से आयी है, तो इब्राहीम अ़लै० ने जिब्रील अमीन से फ़रमाया कि हमें आपकी ज़रूरत नहीं है।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! जब तक अल्लाह का ग़ैर दिलों से निकल नहीं जाता, उस वक़्त तक अल्लाह की क़ुदरत हमारे साथ नहीं हो सकती, अस्बाब का साथ होना यह तो इम्तिहान है, कि अस्बाब का मिल जाना भी इम्तिहान, अस्बाब से काम बन जाना भी इम्तिहान, यह भी नहीं कि इम्तिहान के बाद अस्बाब से काम बनते रहेंगे, अस्बाब तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इम्तिहान के लिए बनाये हैं। मूसा अ़लै० के पेट में दर्द भेजा। तो मूसा अ़लै० ने कहा कि ऐ अल्लाह पेट में दर्द है।

तो अल्लाह ने फ़रमाया कि जाओ रैहान इस्तिमाल करो, क्या इस्तिमाल करो रैहान, हाँ रैहान एक दरख़्त की बूटी है, तो मूसा अ़लै० ने रैहान का इस्तिमाल किया तो दर्द चला गया, फिर कुछ दिन बाद दर्द आया पेट में पर हम तो यह समझते हैं कि बीमारियां मेरे अन्दर पैदा होती हैं और शिफ़ा अल्लाह भेजते हैं भूख तो मेरे अन्दर पैदा होती है, खाना अल्लाह भेजते हैं, ख़ौफ़ तो मेरे अन्दर पैदा होता है, अमन अल्लाह भेजते हैं। यह बात नहीं है बल्कि मेरे दोस्तो! जिस तरह अल्लाह के यहां शिफ़ा के ख़ज़ाने हैं उसी तरह बीमारियों के भी ख़ज़ाने हैं, जिस तरह खाने के अल्लाह के यहां ख़ज़ाने हैं उसी तरह भूख के भी वहां ख़ज़ाने हैं, जिस तरह अमन के अल्लाह के यहां ख़ज़ाने हैं उसी तरह ख़ौफ़ के भी ख़ज़ाने हैं। पानी के ख़ज़ाने, हवा के ख़ज़ाने, खुद अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहें हैं कि हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं। ऐसा नहीं है कि हाजत तुम्हारे अन्दर पैदा होती हो और उन्हें पूरा करने के ख़ज़ाने हमारे पास हैं।

तो मूसा अ़लै० के पेट में दर्द भेजा फिर कहा जाओ रैहान इस्तिमाल करो, अब रैहान इस्तिमाल किया दर्द चला गया, क्या हुआ कि एक सबब तज्रिबे में आ गया। किस के तज्रिबे में? नबी के तज्रिबे में आ गया कि रैहान से पेट का दर्द चला जाता है। हमने भी तज्रिबे कर-कर ये अस्बाब बनाये हैं, ख़ुदा की क़सम सारा निज़ाम झूठा है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो इम्तिहान के लिए अपनी कुदरत से सबब में कामयाबी

दिखलाते हैं, और हर आन हर लम्हा अस्बाब की शक्लों को बदल रहे हैं और उनकी तासीरात को बदल रहे हैं, सारे अतिब्बा, सारे डाक्टर ख़ुदा की क़सम सब धोखे में हैं। सब इम्तिहान में फंसे हुऐ हैं और इनके इम्तिहान से निकलने का कोई रास्ता नहीं सिवाय ईमान की दावत के वरना सब धोखे में फंसे हुए हैं।

मुल्कों में बड़े-बड़े स्टोर दवाओं से भरे पड़े हैं, स्टोर वाले अपनी दवाओं को समन्दर में डालते हैं।

तो क्या हुआ? हुआ यह कि दवा फेल हो गयी, ऐलान हुआ मुल्क भर में कि इस दवा को इस्तिमाल न करो, जो डाक्टर यह दवा बेचेगा उसको भी पकड़ लिया जायेगा। यह क्या बात हुई कि यह दवा तो बहुत इस्तिमाल होती थी, हाँ पर अब यह दवा बहुत मुज़िर है मेरे दोस्तो! अभी हम कुदरत को समझे नहीं हैं, अभी तो हम कुदरत को अस्बाब में समझ रहें हैं कि यह अल्लाह की कुदरत से, वह अल्लाह की कुदरत से, इसमें भी कुदरत, नहीं कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कुदरत अस्बाब में नहीं है, अल्लाह ने कुदरत से अस्बाब बनाये हैं यानी दुनिया की सारी शक्लों को बग़ैर नमूना के बनाया है पर कुदरत को इन शक्लों में अस्बाब में रखा नहीं है।

तो हमारे तज्रिबात में अस्बाब आते हैं तो हम उन अस्बाब की तरफ़ चलते हैं और कुदरत हमारे ख़िलाफ़ होती है, अगर काम बन गया तो यह अल्लाह की रज़ा की दलील नहीं है कि अल्लाह हमसे राज़ी है, क्योंकि हमारा काम बन गया है, नहीं मेरे दोस्तो! अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त नाराज़ होकर ज़्यादा काम बनाते हैं।

दुनिया में इन्सानों के काम नाराज़ होकर ज़्यादा बनाते हैं और राज़ी होकर कम बनाते हैं, इसलिए कि फ़क्र और फ़ाक़े में सहाबा मिलेंगे और खाने-पीने में बातिल मिलेगा, क्योंकि वे न मानने वालों के काम ज़्यादा बनाते हैं और मानने वालों के काम कम बनाते हैं, क्योंकि अल्लाह ने इनके सारे काम जन्नत में बनाने का वादा किया हुआ है।

और काम किनके बनायेंगे? काम उनके बनायेंगे जिनके लिए आख़िरत में कोई नेमत नहीं है। उनके काम दुनिया में बनायेंगे। यहाँ दुनिया में वे ईमान वाले परेशान होंगे जिनका ईमान इन्तिहाई कमज़ोर है वरना ईमान और आमाले सालिहा पर वादा किया है कि दुनिया की ज़िन्दगी भी खुशगवार बनायेंगे, पर कमज़ोर ईमान वाले यूँ कहेंगे कि अल्लाह ने जो बातिल को दिया हुआ है हमें क्यों नहीं दिया जैसे बनी इसराईल ने कहा था कि, "काश हमारे पास भी वह होता जो क़ारून के पास है (कुरआन)" तो यक़ीन वाले क्या बोले? यक़ीन वाले बोले कि, "अरे तुम्हारी हलाकत हो यह तुमने क्या कह दिया, अरे अल्लाह की तरफ़ से आख़िरत में मिलने वाला दुनिया से बेहतर है. (कुरआन)"

कि अल्लाह सवाब कहाँ देंगे? आख़िरत में, सवाब जन्नत को कहते हैं।

कमज़ोर ईमान वाले दुनिया में तमन्ना करेंगे। क्योंकि हर ज़माने का क़ारून अलग और हर ज़माने में माल

की तमन्ना करने वाले भी होंगे, आज भी हैं, बहुत से ईमान वाले बहुत से क्या मेरे दोस्तो! सारे ही ईमान वाले इस ज़माने में, वे भी बेचारे इसी तमन्ना में हैं। बातिल को देख देख कर मुतास्सिर हो रहे हैं, और इसकी तमन्ना कर रहे हैं और जब उनका निज़ाम हलाक हो जाये तो फिर तौबा करें, तौबा भी वे करें जिनमें ईमान हो और जिनमें ईमान न हो वे तावील करें कि यह तो इस वजह से हो गया, यह नहीं समझते कि यह तो अल्लाह का अज़ाब है।

इसलिए मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बनाये तो हैं लेकिन इन्हें अपनी कुदरत में रखा है और अस्बाब इन्सान का सिर्फ़ इम्तिहान हैं कि देखें कि इन्सान किस यक़ीन के साथ इस सबब में लगा और क्या किया, इससे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नबियों का भी इम्तिहान लिया है ईमान का।

तो मूसा अ़लै० की बात अ़र्ज़ कर रहा था कि वह चले रैहान की तरफ़ रैहान इस्तिमाल किया पेट का दर्द चला गया, फिर कुछ अ़रसे बाद अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से दोबारा लाये दर्द मूसा अ़लै० को, फिर जब दर्द महसूस हुआ तो चले रैहान की तरफ़।

किसने बतायी थी यह दवा मूसा अ़लै० को?

आ़लिमुल ग़ैब और आ़लिमुल हिकम यानी अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद यह बूटी मूसा अ़लै० को बताई, किसी हकीम या डाक्टर ने नहीं बतायी, तो दोबारा मूसा अ़लै० रैहान की तरफ़ गये और रैहान इस्तिमाल किया कि अल्लाह ने दर्द को जिस्म से दूर करने के लिए

रैहान को बताया ही है, लेकिन शिफ़ा न मिली, तो अब परेशान कि पहले तो इसी से शिफ़ा मिली थी, इस बार शिफ़ा क्यों न मिली, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया! कि ऐ मूसा पहले तो तुम हमारी तरफ़ आये थे फिर हमारे हुक्म की वजह से तुम रैहान की तरफ़ गये थे, इस बार तुम सीधे रैहान की तरफ़ गये।

याद रखना मेरे दोस्तो! अस्बाब अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ ले जायेंगे और ले जा रहे हैं और आमाल हुक्म की तरफ़ ले जायेंगे, हुक्म अल्लाह की ज़ात की तरफ़ ले जायेंगे, हाँ अह्‌कामात, अल्लाह की ज़ात की तरफ़ ले जायेंगे कि नमाज़ अदा करके अल्लाह से माँगो, हुक्म पूरा करके अल्लाह से माँगो और अस्बाब कहाँ ले जायेंगे?

कि अस्बाब ले जायेंगे तज्रिबात की तरफ़, और तज्रिबे का मतलब यह है कि हमने अल्लाह के ग़ैर से तज्रिबा किया हुआ है कि अल्लाह ने हमें अस्बाब दिये हुए हैं।

नहीं मेरे दोस्तो! बल्कि अल्लाह ने हमें अस्बाब दिये हैं महज़ इम्तिहान के लिए और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अह्‌कामात दिये हैं महज़ इत्मीनान के लिए, हाँ इत्मीनान के लिए अह्‌कामात दिये हैं।

"अला बि ज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल क़ुलूब"

ज़िक्र किसे कहते हैं?

ज़िक्र कहते हैं अल्लाह के अह्‌कामात को, कि हर इताअत करने वाला ज़ाकिर है, अल्लाह ने हमें क्यों दिये अह्‌कामात?

तो अस्बाब हैं इत्मीनान के लिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब देकर यह देखना चाहते हैं कि अस्बाब के अह्कामात के पूरा करने से कामयाबी का यक़ीन है या अस्बाब का यक़ीन है, दुनिया को अल्लाह तआला ने अस्बाब से भर दिया कि अस्बाब का इम्तिहान लेना है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब लाते हैं इम्तिहान के लिए।

तो इब्राहीम अलै० का बड़ा इम्तिहान बहुत बड़ा इम्तिहान कि इस वक़्त शदीद ज़रूरत है इब्राहीम अलै० को किसी की मदद की क्योंकि आग में डाला जाने वाला है। तो बहुत बड़ा सबब आया जिब्रील का, कि इनसे बड़ी कोई मख़्लूक़ नहीं लेकिन छोटे से छोटा होने के लिए मख़्लूक़ का लफ़्ज़ ही काफ़ी है कि हर चीज़ की ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह की ज़ात और सारी चीज़ें वे मख़्लूक़, तो जिब्रील से बड़ी मख़्लूक़ अल्लाह ने कोई नहीं बनाई, लेकिन क्योंकि जिब्रील मख़्लूक़ है।

मेरे दोस्तो! किसी के क़द से, किसी के बदन से, किसी को लम्बाई-चौड़ाई से कुछ नहीं बनता और न ही कुछ होता है, जो अल्लाह का ग़ैर है वह मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ कभी ख़ालिक़ नहीं बन सकती जो मख़्लूक़ है वह ख़ालिक़ से छोटी है और ख़ालिक़ के मातहत है।

सबसे बड़ी मख़्लूक़ जिब्रील, अल्लाह के ख़ौफ़ से ऐसे हो जाते हैं जैसे वह एक बहुत छोटा परिन्दा होता हैं जिसे दहिया कहते हैं, जिसे पौदा कहते हैं यह बहुत छोटी सी चिड़िया होती है उससे छोटी चिड़िया का कोई

साइज़ नहीं होता, सिमट के सुकड़ के अल्लाह के ख़ौफ़ से जिब्रील ऐसे हो जाते हैं और अस्ली हालत तो यह है कि सर अर्श से लगा हुआ है और पैर ज़मीनों के अन्दर हैं और पूरब से पश्चिम तक सारा परो ने घेरा हुआ है, यह हाज़िर हैं कि ऐ इब्राहीम बताओ क्या चाहते हो?

मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! जिनके यक़ीन बन जाते हैं ना वे अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब नहीं रखा करते, उनकी निगाह अल्लाह पर बराहेरास्त होती है, तो अल्लाह की तरफ़ से उनकी मदद बराहेरास्त होती है। कि इब्राहीम अलै० ने जब अपने और अल्लाह के दरमियान कोई सबब न रखा, तो अल्लाह ने भी अपने और आग के दरमियान कोई सबब न रखा, पानी को, हवा को, किसी फ़रिश्ते को किसी भी मख़्लूक़ को किसी भी क़िस्म का कोई केमिकल आग बुझाने के लिए इस्तिमाल नहीं फ़रमाया, बल्कि अल्लाह ने अपना अम्र बराहेरास्त इस्तिमाल फ़रमाया।

कि जिन्हें अल्लाह की ज़ात से बराहेरास्त लेना आता है वे अस्बाब से मुस्तग़नी होते हैं।

मेरे दोस्तो! यक़ीन नहीं है इसलिए हमारे और अल्लाह के दरमियान ये अस्बाब ऐसी रूकावट बन गये हैं कि हमारे आमाल पर ग़ालिब आ गये हैं, हाँ आमाल पर अस्बाब ग़ालिब आ गये हैं।

इन अस्बाब की बेड़ियों से और इन अस्बाब के ग़लत यक़ीन से ईमान की दावत के बग़ैर नहीं निकला जा सकता, हर वक़्त मुक़ाबला होगा आमाल और

अस्बाब का, मेरे दोस्तो! अस्बाब और आमाल के मुक़ाबले में यक़ीन वाले कामयाब होंगे और यक़ीन तो दावत से बनेगा।

यक़ीन का दावत के सिवा बनने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि दावत का तक़ाज़ा यह है कि ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोले यह तक़ाज़ा है दावत का, कलिमे की दावत ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है।

"ला इलाह इल्लल्लाह" के कलिमे की दावत ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है, जितना इसको बोला जायेगा वह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोला जायेगा और जितना ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोला जायेगा उतना यक़ीन बनेगा, लेकिन हम लोगों का हाल यह है कि हम तो ज़ाहिर के मुताबिक़ बोल रहे हैं कि यह बीमारी यह दवा यह ख़ौफ़ यह हथियार यह परेशानी यह मस्अला यह ओहदा।

यानी अस्बाब फ़ौरन ज़ेहन में आते हैं, मसाइल के लिए क्या कभी ज़ेहन में आया कि सद्क़ात से ज़्यादा बेहतर अचानक आ जाने वाली मुसीबत को टालने वाली कोई चीज़ नहीं।

एक सहाबी थे उन्होंने अपने मुसल्ले से लेकर बाहर दरवाज़े तक एक रस्सी बांधी हुई थी, वह सहाबी नाबीना थे, इसलिए दरवाज़े तक जाने के लिए एक रहबर चाहिए था तो वह रस्सी उनके रहबर का काम करती थी, मुसल्ले पर पैसे और खाने की चीज़ें रखते थे तो वह मुसल्ले पर से दिरहम उठावें और रस्सी पकड़-पकड़ कर दरवाज़े पर जावें, दरवाज़े पर जाकर यतीम को और मिस्कीन को अपने हाथ से दें तो

उनके जवान जवान लड़के थे वे कहते कि अब्बा आप यह काम हम लोगों से क्यों नहीं कराते कि हम लोग तो होते हैं घर में मौजूद, तो आप क्यों तक्लीफ़ उठा कर बाहर आते हैं, आप हम लोगों से कह दिया करें हम लोग दे आया करें।

तो उन सहाबी न अपने बेटों से कहा कि बच्चो तुम नहीं जानते जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि मिस्कीन को अपने हाथ से देना यह अचानक आने वाली बलाओं को, अचानक आने वाली मुसीबतों को, अचानक पेश आने वाले हवादिसात को रोक देता है।

अब क्या है कि हमने तो बीमा कराया हुआ है यह हुकूमत से होने का यक़ीन ऐसा करा रहा है कि इन्सानों का बीमा हो रहा है कि हमने तो बीमा कराया हुआ है, अब तो हम हुकूमत की ज़िम्मेदारी में हैं, मरेगा तो इसके रिश्तेदारों को तो नहीं मिलने को कुछ, ज़िल्लत से धक्के खाये अदालतों के कि हमारा बीमा हुआ था, हालांकि जिसने किसी मिस्कीन को अपने हाथ से सदक़ा किया तो अपना बीमा अल्लाह से करा लिया कि अल्लाह की अमान में है वह, पर मेरे दोस्तो! इसका कोई यक़ीन नहीं, मेरे बुज़ुर्गो! हमने तो अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब को समझा हुआ है कि अल्लाह ने हमें दुकान दी हुई है, या अल्लाह ने हमें ज़मीनदारी दी हुई है।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! ओहदे के साथ ज़िल्लत आयेगी, दुकानों के साथ क़र्ज़े आयेंगे, ज़मीनों के साथ सैलाब और टिड्डियाँ आयेंगी, क्योंकि अस्बाब दिये अल्लाह ने,

कुदरत साथ नहीं की है, ये अस्बाब नाकामियाँ लेकर आ रहें है।

"अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब देते हैं, देखने वाले कहते हैं कि देखो यह बादल आ रहा है मेरी ज़मीन में बरसेगा लेकिन उन्हें ख़बर नहीं कि इस बादल के अन्दर दर्दनाक अज़ाब है, न मालूम इसमें से पत्थर बरसें या तेज़ाब या न रूकने वाला पानी जिससे सैलाब आ जाये, इन्हें इसकी ख़बर नहीं "यह तो सिर्फ़ बादल देख रहे हैं कि हाँ सबब मिल गया हालांकि कुदरत ख़िलाफ़ है।

वे तो बेचारे अहमक़ बुद्धु हैं जो यूँ समझें कि अल्लाह ने जिसको अस्बाब दिये हैं वह ग़ालिब आ जायेगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त एक मिनट में राहत के अस्बाब को हलाकत में तब्दील कर देते हैं, हाँ एक मिनट में कर देते हैं कि इन्सानों की अक्लें हैरान हो जाती हैं कि अरे अभी तो यूँ था अब ऐसा कैसे हो गया।

मेरे दोस्तो! अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम तो यक़ीन वालों के साथ होगा, अमल वालों के भी मुवाफ़िक़ नहीं होगा, वह तो यक़ीन वालों के साथ होगा कुदरत और अस्बाब वाले सब हैरान होंगे, क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब वालों को उनके तज्रिबात में अपने तआरूफ़ के लिए झूठा कर के दिखलाते हैं।

नबियों को भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने तआरूफ़ के लिए नबियों को उनके अस्बाब में नाकाम कर देते हैं। हालाँकि वे नबी हैं।

सुनो मूसा अ़लै० आग जलाने चले, सफ़र में तन्हा हैं बीवी हमल से है और रात का वक़्त, बीवी को दर्दे ज़ह हो रहा है कि बच्चा होने वाला है, इधर मूसा अ़लै० का हमेशा का तज्रिबा है कि हम चकमाक से आग जलाते हैं, जब आग की ज़रूरत पड़ती है तो पत्थर को रगंड़ते हैं पत्थर पर, तो ऐसा करने से चिंगारी निकलती है और आग जल जाती है लेकिन अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जिस दिन मूसा अ़लै० को अपना तआ़रूफ़ कराना चाहा उस दिन आग न जली, जबकि हमेशा ऐसा ही करते थे यानी चकमाक से ही आग जलाते थे पर आग आज न जली।

हमेशा का तज्रिबा, किसका? नबी का तज्रिबा वह आज फ़ेल हो गया, कि आग जलाने के लिए कोशिश करते रहे, जब आदमी अपनी कोशिशों में नाकाम हो जाता है तो वह आसमान ही की तरफ़ देखता है यह हर एक का मिज़ाज है कि जब काम नहीं बनता तो ऊपर देखता है, आसमान की तरफ़।

तो मूसा अ़लै० ने भी निगाह ऊपर उठायी तो सामने आग नज़र आयी तो ख़ुश हुए कि वाह-वाह हो गया काम कि अगर आज चकमाक से आग न जली तो जली जलायी आग मिल गयी। अब चले आग की तरफ़, जब आग के क़रीब पहुंचे तो आग पीछे हटी तो सोचा यह अजीब आग है कि आगे बढ़ो तो यह पीछे हटती है और जब पीछे हटो तो आगे आ जाती है, अजीब आग है यह, तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपना तआ़रूफ़ कराने के लिए कि मूसा अ़लै० को

नबी बनाना है और नबी बनाकर भेजना है इसलिए अल्लाह ने अपना तआरूफ़ करा दिया।

"इन्ननी अनल्लाहु ला इलाह इल्लल्लाहु फ़अ्बुद्नी"

लेकिन आज उम्मत अस्बाब की पटटी आँखों पर बांधे हुए है आज काम करने वाले साथी ख़ुद तज्रिबात ही पर चल रहे हैं और सच्ची बात तो यह है कि काम करने वालों ही ने अभी तक ईमान के सीखने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोलने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ सोचने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ चलने की निय्यत ही नहीं की है बस अस्बाब-अस्बाब-अस्बाब। हम जुड़ रहें हैं मार्कीटों पर हम जुड़ रहे हैं सरमाये दारियों पर, हमने अब तक ईमान के हल्क़ों में जुड़ना शुरू नहीं किया।

इसलिए मेरे दोस्तो! ईमान का दावा नहीं अल्लाह को ईमान की दावत पसन्द है, लेकिन यह इतना बड़ा धोखा लगा मुसलमानों को कि ईमान की दावत ग़ैरों के लिए नहीं ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिए है,

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

कि ईमान वालो ईमान लाओ।

अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० ईमान की मजलिसें मुशरिकीन के साथ नहीं ईमान वालों के साथ लगाते थे।

"इज्लिस बिना आमिनू साअतन"

"आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें"

इस ईमान की मजलिस में ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे होते थे। लेकिन आज चार ईमान वाले भी कहीं बैठे हुए ईमान की बातें करते हुए नहीं मिलेंगे, हाँ, इसके

अस्बाब, उस्के अस्बाब, इसके जहाज़, उसके राकेट, उसका बम, उसकी तिजारत, उसका मुल्क यानी ख़ुदा की क़सम सुबह से शाम तक इस ज़माने में पूरी दुनिया के अन्दर हर ईमान वाला ईमान के बिगाड़ने की मेहनत में लगा हुआ है।

ईमान कैसे बने? ईमान अस्बाब की बातों से नहीं बना करता, ईमान तो अल्लाह के उस ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे से बनेगा, जिस ग़ैबी निज़ाम के ज़रीये यह सारा ज़ाहिरी निज़ाम टूटना है, मस्जिद से लेकर बाज़ार तक और घरों तक कहीं ईमान के हल्क़े नहीं।

मुझे तो बड़ी हैरत हुई कि मुल्क के सारे पुराने यहां मुल्क के मश्वरे पर जमा हुए थे निज़ामुद्दीन में मैंने कहा कि तुम मस्जिदवार जमाअ़त, मस्जिदवार जमाअ़त कहते रहते हो लेकिन तुम्हें अब तक पता ही नहीं कि मस्जिदवार जमाअ़त किस जड़ी-बूटी का नाम है। किसी मस्जिदवार जमाअ़त का आज तक किसी मस्जिद में ईमान का हलक़ा नहीं है, कि जन्नत के, दोज़ख़ के, क़ब्र के, बर्ज़ख़ के, फ़रिश्तों के, क़ुदरत के, रबूबियत के, ग़ैबी ख़ज़ानों के, अल्लाह के करने के ज़ाब्तों के क्या अस्बाब हैं? उनके करने के क्या ज़ाब्ते हैं कोई मजलिस नहीं किसी मस्जिद में।

कहीं मस्जिद वार जमाअ़त के दस साथी, कहीं बीस साथी, कहीं तीस, कहीं पचास और महाराष्ट्र वालों ने तो बाताया कि हमारे यहां किसी-किसी मस्जिद में सौ-सौ साथी जुड़ते हैं। यह नहीं कि ये मस्जिदवार जमाअ़त के साथी सारे आ़लम के मुसलमानों को उनको

कारख़ानों से, दुकानों से, खेतियों से, घरों से निकाल निकाल कर मस्जिद के ईमान के हलक़ों में लाकर जोड़ें वे वहां ईमान की बातें सुनें पर किसी मस्जिद में आज तक ईमान का हलक़ा नहीं है।

तो मैंने कहा उन पुरानों से कि यह तो घरवार जमाअ़त है, कारख़ाने वार जमाअ़त है, दुकानवार जमाअ़त है।

रही मस्जिदवार जमाअ़त तो जिस मस्जिद में ईमान का हलक़ा नहीं तो कैसे यह मस्जिदवार जमाअ़त है यह तो दुकानवार जमाअ़त है, मस्जिदवार जमाअ़त तो यह जब होती जब यह कारख़ानों, दुकानों से, घरों से, खेतियों से और सारे अस्बाबों से निकाल-निकाल कर मस्जिद के ईमान के हलक़ों में मुसलमानों को जोड़ती, तब होती यह मस्जिद वार जमाअ़त।

मुझे तो हैरत है कि बजाय उनको अस्बाब के माहौल से निकाल कर ईमान के हलक़ों में लाने के, यह मस्जिदवार जमाअ़त ख़ुद ही बेचारी अस्बाब के माहौल में जा बैठी, कि आधे घन्टे से एक साथी दुकान पर बैठा हुआ है पूछा तू यहां क्यों बैठा हुआ है कहने लगा मैं यहां ईमान की बात कर रहा हूँ, पूछा कि यहां अस्बाब की जुल्मतों में तेरी ईमान की बातों से यह मुतास्सिर हो जायेगा? या तेरा ईमान ऐसा है कि तू यहां अस्बाब की जुल्मत से मुतास्सिर न हो?

अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० वे लोगों को जमा करते थे कि आओ बैठो ईमान ले आयें-यह नहीं कि हम तो ईमान लाये हुए हैं ही, अब अ़मल करेंगे, मेरे

दोस्तो! हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को ईमान की दावत पर उठाया था कलिमे की दावत पर उठाया था। यह नहीं कि कलिमा पढ़ लिया है अब तुम्हारे ऊपर ये आमाल हैं जाओ इन आमाल को करते रहना, हर एक को ख़बर थी कि मेरे अपने ईमान में तरक़्क़ी के लिये यह कलिमा दिया गया है इसकी दावत दी गयी है, और हर एक कलिमे का दाई था कि अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए और कोई मुसलमान इस्लाम से निकल न जाये उसके लिए और इस्लाम में आने का रास्ता खोलने के लिये कि सारे अक़्वाम इस्लाम में दाख़िल हों।

मेरे दोस्तो–बुजुर्गों! पहले तो कलिमे की दावत ईमान वालों में से निकलेगी, फिर ईमान वाले इस्लाम में से निकलेंगे, वाक़ई मैं सच्ची अ़र्ज़ कर रहा हूँ।

सुनो मेरी बात कि इस उम्मत के इर्तिदाद की वजह ही सिर्फ़ यह है कि ईमान वालों ने आपस में ईमान की दावत छोड़ दी। मैं क़सम खा कर कहता हूँ कि जब कलिमे वालों ने कलिमे की दावत छोड़ी तब ईमान वाले इस्लाम से निकले हैं, तो जब भी उम्मत दावत छोड़ेगी रिद्दत आयेगी यक़ीनी बात है जब ईमान वाले ईमान की मेहनत छोड़ेंगे ना, कलिमे की दावत छोड़ देंगे ना तो जो इस्लाम से भागना चाहेगा भाग जायेगा और इस्लाम में आने का रास्ता तंग हो जायेगा सिर्फ़ कलिमे की दावत छूटने से।

मेरे दोस्तो यह मेरा अन्दाज़ा नहीं हक़ीक़त है कोई मुबालग़ा नहीं है यह बात साबित है कि मदीना मुनव्वरा

में सारे आमाल आला दर्जे के थे लेकिन हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात पर दावत के अन्दर ज़ौफ़ आया तो फ़ौरन इर्तिदाद आ गया, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़ौरन मदीने को खाली करने को सोच लियां कि फ़ौरन सब निकल जाओ अबू बक्र रज़ि० रिद्दत का इलाज थे यानी अबू बक्र रज़ि० की दावत की मेहनत, यह बात तो सौ फ़ीसद यक़ीनी है कि जब उम्मत में से कलिमे की दावत निकलेगी तो इर्तिदाद आयेगा।

एक बहुत बड़ी आबादी का इस्लाम में दाख़िल हो जाना मेरे दोस्तो-बुजुर्गो-अज़ीज़ो! इतनी बड़ी बात नहीं है जितना अदना से अदना ईमान वाले का इस्लाम से निकल जाना है। एक जाहिल आदमी जो दीन से जाहिल हो सिर्फ़ कलिमा गो है उसे कुछ नहीं आता उसका इस्लाम से निकल जाना, एक बहुत बड़ी ग़ैरों की आबादी का इस्लाम में दाख़िल हो जाना इतना मायने नहीं रखता जितना ईमान वाले का इस्लाम से निकल जाना है।

हज़रत फ़रमाते थे, कि जब उम्मत कलिमे की दावत छोड़ देगी तो फिर उम्मत को दूसरों का दीन भला लगेगा।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! हम सबसे पहले ईमान के हलक़े क़ायम करें, जितने भी हम मस्जिद में जुड़ रहे हैं ना सबसे पहले ईमान के हल्क़े क़ायम करो, आने वालों को मस्जिद के माहौल में कलिमे की दावत दो, मैं सच्ची-सच्ची अर्ज़ करता हूँ कि आमाल की दावत से भी रिद्दत ख़त्म नहीं होगी, रिद्दत सिर्फ़ कलिमे की

दावत से ख़त्म होगी, आमाल की दावत से रिद्दत नहीं ख़त्म होगी।

जो पहले दिन का कलिमे का दाई था अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० यह पहले दिन से ईमान के दाई हैं। जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने जब कलिमे को पेश किया तो तीनों तब्क़ात पर पेश किया, सारी इन्सानियत इन ही तीन पर मुश्तमिल है, मर्द औरत, बच्चा। आप सल्ल० ने कलिमे की दावत को एक वक़्त में इन तीनों तब्क़ों पर एक साथ पेश किया कि तीनों को यानी अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ख़दीजतुल कुबरा रज़ि०, अ़ली इब्ने अबू तालिब रज़ि० को उसी वक़्त कलिमे का दाई बना दिया तो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० पहले ही दिन से कलिमे के दाई थे।

इनके पहले ही दिन की कमाई में 6आदमी हैं। इनमें 5 वे हैं जिन्हें दुनिया में ही जन्नत की बशारत दी गई, ये अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० पहले दाई हैं इस उम्मत के, क्योंकि पहले दिन से दाई थे इसलिए आख़िरी दिन यानी जिस दिन जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० की वफ़ात हुई, वफ़ात के बाद फिर बिल्कुल इर्तिदाद का ज़माना और जब इर्तिदाद आया तो उस इर्तिदाद का मुक़ाबला सिर्फ़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अकेले किया सारे सहाबा यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० भी आप सल्ल० की वफ़ात से मुतास्सिर हैं पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हिम्मत से काम लिया।

मेरे बुज़ुर्गो-दोस्तो! दाई की सिफ़त यह है कि दाई दीन का नुक़सान बर्दाश्त नहीं करेगा। पक्की बात है यह

कि दीन का नुक़सान हो और अबू बक्र ज़िन्दा रहे ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि दाई दीन का नुक़सान हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेगा।

अब अगर हमारे ज़हनों में यह है कि हम सब दावत का काम कर रहे हैं और हम दाई हैं, तो इसका अन्दाज़ा इससे लगा लो कि आया अपने घर से लेकर आलमी सतह तक जितना दीन का नुक़सान हो रहा है तो इस दीन के नुक़सान से मेरे अन्दर क्या कैफ़ियत है, बाहर बाद में जाना, यह देखो कि मेरा अपना बेटा जो दीन का नुक़सान कर रहा है उससे मेरे अन्दर क्या कैफ़ियत है, तब्लीग़ी होना कोई बात नहीं है कि तीन दिन लगाये तो तब्लीग़ी जमाअ़त के हो गये? चिल्ला लगाया कि हम दावत का काम करने वाले हो गये, किसी पर जमाअ़ती होने की मोहर लग जाना बहुत आसान है, जमाअ़त के काम से निस्बत हो जाना बहुत आसान है लेकिन अन्दर की कैफ़ियत का बदल जाना, यह असल हक़ीक़त है। कितने चार-चार माह देने वाले, हर साल चार माह देने वाले, सालाना चिल्ला देने वाले, मक़ामी काम करने वाले, माहाना तीन दिन देने वाले?

कितने ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह के अवामिर को अपना यक़ीनी सबब समझा हुआ है? बात यह है कि कलिमे की दावत काम करने वालों ही से निकली हुई है इस दावत के छूटे रहने ही से न ख़ुद हमारा यक़ीन बदला और न माहौल बदला, हाँ दावत के दो ख़ास्से हैं एक यक़ीन बदलना एक माहौल बदलना यह कलिमे की दो ख़ूबियाँ हैं।

यक़ीन भी बिगड़े हुए होते थे माहौल भी बिगड़ा हुआ होता था। साँप-बिच्छू खाने तक क़ौम पहुँच जाती थी। सहाबा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमारा तो यही हाल था, जाहिलियत अलग और कुफ़्र की ज़ुल्मतें अलग, न दीन के न दुनिया के किसी, क़िस्म की कोई इस्तिदाद नहीं थी। नबी सल्ल० ने आकर कलिमे की दावत दी कि नबी की आमद से उनकी कलिमे की दावत से यक़ीन भी बदलता है और माहौल भी बदलता है और जब कलिमे की दावत निकल जायेगी उम्मत में से तो यक़ीन भी बिगड़ेंगे और माहौल भी बिगड़ेगा।

इसलिए हुज़ूर अकरम सल्ल० ने अपने हर उम्मती को कलिमे की दावत देने वाला बनाया था। हर एक जानता था कि मैं उम्मत की हिदायत का ज़रीया हूँ।

देखो मेरे दोस्तो! बहुत ज़रूरी बात है यह कि हमें हर उम्मती के अन्दर इस बात का एहसास पैदा करना है कि मैं हुज़ूर सल्ल० का नायब होने की हैसियत से हर उम्मती की हिदायत का ज़रीया बना हुआ हूँ। इस बात को तो ख़ूब अच्छी तरह से याद कर लो कि मैं बहैसियत उम्मती होने के कलिमे की दावत का यानी उम्मत की हिदायत का ज़रीया हूँ कि "कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि तअ्मुरून बिल मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निलमुन्करि व तुअ्मिनून बिल्लाह"

तुम्हें इन्सानों की नफ़ा रसानी के लिए भेजा गया है

क्या है नफ़ा रसानी?

कि तुम तआ़रूफ़ कराते हो अल्लाह का यानी कलिमे की दावत देते हो और इन्सानों के अन्दर से

अस्बाब का यक़ीन निकालते हो और इसके साथ यह शर्त लगी हुई है कि ख़ुद अपने अन्दर अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात और रबूबियत का यक़ीन रखते हो।

याद रखो मेरे दोस्तो! हर उम्मती सारी उम्मत की हिदायत का ज़रीया है लेकिन यह तिजारत करे और हिदायत का ज़रीया बने, यह ज़िराअ़त करे और हिदायत का ज़रिया बने, या सिर्फ़ घर में बैठा रहे और हिदायत की दुआ़ माँगता रहे।

"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम" ऐ अल्लाह सबको हिदायत देदे।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! हिदायत हिदायत की दुआ़ओं से नहीं बल्कि हिदायत की दुआ़एं भी कलिमे की दावत से क़ुबूल होंगी। जब उम्मत में से दावत निकल जायेगी तो उम्मत से हिदायत की दुआ़ भी क़ुबूल होना बन्द हो जायेगी, क्योंकि कलिमे की दावत दुआ़ की क़ुबूलियत की शर्त है।

दावत क्या है?

दुआ़ओं की क़ुबूलियत के लिए शर्त है।

जब दावत छोड़ देगी उम्मत तो दुआ़एं भी छोड़ देगी। बिल्कुल पक्की बात है क्योंकि कलिमे की दावत और दुआ़ दोनों एक दूसरे के लाज़िम मल्ज़ूम हैं। कलिमे की दावत छूटने से अस्बाब का यक़ीन आता है और अस्बाब का यक़ीन दुआ़ओं से महरूम करता है, बहुत सीधी बात है। दावत के छूटने से क्या आयेगा? कलिमे की दावत छूटने से अस्बाब का यक़ीन आयेगा और अस्बाब का यक़ीन दुआ़ से महरूम करेगा, कि

दुआ से क्या होगा दुकान से होगा, दुआ से क्या होगा हुकूमत से होगा। मैं सफ़र में गया अभी बड़ौत और बाग़पत के पास से गुज़र रहा था कि रास्ते में बहुत सारे मुसलमान और गैर मुस्लिम मर्द–औरत और बच्चे पूरी भीड़ बनाकर जा रहे थे सड़क पर। तो मैंने शीशा खोलकर अपनी गाड़ी का उनसे पूछा कि भाई क्या बात है यह काहे की रैली निकल रही है, यह क्या हो रहा है?

कहने लगे कि एक हफ़्ते से बिजली नहीं आ रही है तो रैली निकाल रहे हैं।

मैंने पूछा कहाँ जाओगे तुम लोग? कहने लगे कि यहां के थाने को घेरने जा रहे हैं।

मैंने कहा कि तुम थाने जाने के बजाय मस्जिद में चले जाओ अल्लाह से मनवालो, तो अल्लाह को अगर इस हुकूमत से काम लेना होगा तो लेंगे और बिजली पहुँचेगी अगर ये नहीं देंगे तो अल्लाह बिजली देंगे किसी और सबब से देंगे।

मेरे बुजुर्गो दोस्तो और अज़ीज़ो! बात यह है कि जब यक़ीन बिगड़ जाते हैं तो ईमान वाले बजाये मस्जिद का खूँटा बनने के वे धरने देते हैं, जब ईमान बिगड़ जाते हैं तो बजाय रोज़ा रखने के भूख हड़ताल करते हैं। कि भूख हड़ताल करो कि क्या बात है, जी हमारे ये मुतालबे हैं, मुतालबे अलग पूरे नहीं हो रहे और खाना भी नहीं मिल रहा। हाँ, एक अज़ाब दुनिया में और एक अज़ाब आख़िरत में होगा। सच्ची बात है, जब यक़ीन बिगड़ेंगे तो और क्या करेंगे कि 'धरना देंगे, भूख

हड़ताल करेंगे, रैली निकालेंगे।

अरे मस्जिद के खूँटे बन जाओ ना सहाबा किराम कहाँ जाते थे? आँधी आये तो, सूखा पड़े तो, मुक़दमा आ जाये तो क़र्ज़ा हो जाये तो मस्जिद में और यह कहाँ कि हुकूमत की स्कीमें क्या हैं इस साल की, तो हुकूमत की स्कीमों के यक़ीन की वजह से हुकूमत की तिजारत की स्कीमों का हराम इसके मुँह में जायेगा और फिर ये कहेंगे उलमा से कि इसको यूँ कर दो, देखो हराम वह था यह नहीं है, हालांकि वह हराम की बिगड़ी हुई शक्ल होगी।

हज़रत फ़रमाते थे कि तुम सुव्वर के कबाब खाओ चाहे सुव्वर का गोश्त मिले हुए बिस्कुट खाओ दोनों हराम हैं। तो बातिल हराम की शक्ल को बदल कर ईमान वालों को खिलायेगा ताकि इनके यक़ीन बिगड़ें ये दुआओं से महरूम हों तो हमारा काम चले। मेरे दोस्तो! इस वक़्त हलाल की इतनी तलाश नहीं है जितना हराम को हलाल करने की कोशिश है इस ज़माने में।

अगर उम्मत कमाने में हलाल पर आ जाये तो अल्लाह इस पर कमाइयों के रास्ते भी खोल देंगे, कि तू यह कर, तू वह कर। अल्लाह अस्बाब को आसान भी कर देंगे और इनके लिए कमाई के रास्ते भी खोल देंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! इसकी निय्यत करो कि उम्मत को कलिमे की दावत पर लाना है ताकि ईमान की दावत से वह यक़ीन बने जो अल्लाह के वादों के यक़ीन पर खड़ा कर दे और अल्लाह के अवामिर

हमारे यक़ीनी सबब बन जायें, इतना ईमान सीखना फ़र्ज़ है कि यह कलिमा हमें अस्बाब के यक़ीन से निकाल दे।

इसलिए यह ईमान की दावत, कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत का यह काम है, कि बग़ैर ईमान के कोई अ़मल अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा नहीं दिला सकेगा। मेहनत तो हर एक कर रहा है, लेकिन ईमान ईमान के दावों से बन जाये या ईमान खुद ब ख़ुद बढ़ता रहे ऐसा नहीं होगा बल्कि ईमान ईमान की दावत से बनेगा और ईमान ईमान की दावत से तरक़्क़ी करेगा। फिर ईमान की दावत के साथ आ़माल की दावत, आमाल की दावत के साथ आख़िरत की दावत, यही हर नबी का तरीक़ा रहा है कि अस्बाब से ईमान की तरफ़ चीज़ों से आ़माल की तरफ़ दुनिया से आख़िरत की तरफ़ जिसकी पहली मंज़िल बर्ज़ख़, दूसरी मैदाने महशर, तीसरी जन्नत या दोज़ख़ ये तर्तीब है दावत की, हज़रत फ़रमाते थे कि क़ब्र में ज़बान यक़ीन पर चलेगी, इल्म पर नहीं चलेगी कि हमें ख़बर है मन रब्बु-क, मा दीनु-क, मा नबिय्यु-क

कि तुम्हारी ज़रूरतों को यहां बर्ज़ख़ में, महशर में और जन्नत या दोज़ख़ में कौन पूरा करेगा ज़रूरतों को पूरा करने के क्या अस्बाब हैं और क्या तरीक़े हैं? और इन दोनों को हासिल करने की मेहनत, तुम्हें किस नबी ने बतलायी थी इसके इल्म पर ज़बान नहीं चलेगी बल्कि इसके यक़ीन पर ज़बान चलेगी अगर दुनिया से, बर्ज़ख़ में ये बातें इल्म में लेकर गया है तो यह क़ब्र

में, बर्ज़ख़ में नाकाम हो जायेगा और जो यहाँ क़ब्र में नाकाम हो जायेगा तो आगे की सारी मंज़िलों में नाकाम हो जायेगा, क्योंकि वहां सवाल यक़ीन का है।

हज़रत उमर रज़ि० को ऐसा यक़ीन हासिल हो गया था कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सारा क़ब्र का नक़्शा खींचा हज़रत उमर रज़ि० के सामने कि ऐ उमर देख तुझसे क़ब्र में सवालात किये जायेंगे, मुन्कर और नकीर ये सवाल आकर तुझसे करेंगे और उनकी आवाज़ें बिजली की कड़क की तरह होंगी, उनके बाल उनके पैरों में उलझे होंगे और वे अपने दाँतों से तेरी क़ब्र खोदेंगे और उनके हाथ में इतना ज़बर्दस्त हथौड़ा होगा कि जिसको सारे दुनिया वाले मिलकर हरकत न दे सकेंगे। ऐ उमर वे तुझसे तीन सवाल करेंगे।

कि तुम्हारी ज़रूरतों को यहां कौन पूरा करेगा।

वे क्या अस्बाब हैं जिनसे तेरी ज़रूरत पूरी हो।

और वे कौन हैं जिसने तुम्हें वह तरीक़ा बतलाया है।

अगर तू इन सवालों का जवाब देने में ज़रा भी हिचकिचा गया तो इस हथौड़े से इस तरह मारेंगे कि तू बिल्कुल ख़ाक हो जायेगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूरी बात सुन कर यह अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मेरी उस वक़्त यही कैफ़ियत होगी जो यहां इस वक़्त है, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हाँ, इसी कैफ़ियत पर होगा तू।

तो हज़रत उमर रज़ि० कहने लगे कि अच्छा जी फ़िर तो मैं उनसे निपट लूंगा। ईमान क्या लायेगा?

ईमान इत्मीनान लायेगा।

इत्मीनान भी लायेगा और ख़ौफ़ भी लायेगा यानी ख़ौफ़ और उम्मीद, हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर यह ऐलान हो जाये कि तमाम लोग जन्नत में जायेंगे सिर्फ़ एक को छोड़ कर तो मुझे अपने बारे में ख़ौफ़ है कि शायद वह जहन्नम में जाने वाला मैं ही हूँ और अगर यह ऐलान हो जाये कि तमाम लोग दोज़ख़ में जायेंगे सिर्फ़ एक को छोड़कर तो मुझे उम्मीद है कि वह जन्नत में जाने वाला सिर्फ़ मैं ही हूँ। ऐसा ख़ौफ़ और ऐसी उम्मीद, इस ईमान पर ऐसा इत्मीनान तो आप सल्ल॰ से फ़रमा रहे हैं हज़रत उमर रज़ि॰ कि फ़िर तो मैं क़ब्र में मुन्कर नकीर से निपट लूंगा।

इस पर जिब्रील अ़लै॰ आये और आकर आप सल्ल॰ से अ़र्ज़ किया कि ये जो आप के साथी हैं ना उ़मर इनका ऐसा ईमान है कि जब क़ब्र में सवालात इनसे किये जायेंगे तो ये हर सवाल का जवाब देने के बाद ख़ुद फ़रिश्तों से सवाल करेंगे कि:

मन रब्बु-क, मा दीनु-क मा नबिय्यु क

तो दोनों फ़रिश्ते कहेंगे कि समझ में नहीं आता कि हमें उमर के पास भेजा गया है सवाल करने के लिए या आज उमर को हम लोगों के पास भेजा गया है हम लोगों से सवाल करने के लिए।

लेकिन आज तो कलिमे की दावत उम्मत में से निकल चुकी है, आज उम्मत ईमान पर न जुड़ के अस्बाब पर जुड़ रही है, सारा मुल्क जमा हो रहा है, तिजारत की बुनियाद पर हथियारों की बुनियाद पर

ज़िराअत की बुनियाद पर ये सारे के सारे नाकामी देखने वाले हैं आगे और जो ईमान पर जमा होंगे, अहकामात पर जमा होंगे, "ईमान के हलक़ों में जमा होंगे"

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इनके लिए ज़ाहिर के ख़िलाफ़ कर के दिखलायेंगे, अल्लाह ने पहले भी ऐसा किया है आइन्दा भी ऐसा करेंगे और आज भी ऐसा कर रहे हैं।

भई बात यह है मेरे दोस्तो! जब बातिल नक़्शे टूटें और ईमान वालों को फिर भी न होश आये तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इनको भी मार कर क़ब्र का अज़ाब शुरू कर देते हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो बातिल नक़्शों को ईमान वालों के लिए तोड़ते हैं कि देख लो इससे इबरत हासिल कर लो, अगर तुम नहीं समझोगे इससे तो हम तुम्हारे भी नक़्शे तोड़ेंगे, ऐसे ही जैसे हम ग़ैरों के नक़्शे को तोड़ रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हालात लाते हैं उनसे ईमान वाले समझते हैं बेईमान नहीं समझते कि मेरी तिजारत नहीं चल रही मुझे तो कोई वज़ीफ़ा बता दो।

अरे अल्लाह ने सबसे। बड़ा वज़ीफ़ा अपना फ़रीज़ा दिया हुआ था, तूने तो नमाज़ के ज़रीये लेना सीखा ही नहीं, तो तेरा कहाँ से मस्अला हल हो जाये, जब नमाज़ के बारे में पूछो तो कहते हैं कि जी दुआ करो अल्लाह नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, लेकिन अभी तो कोई तावीज़ दे दो जिससे मेरा क़र्ज़ा अदा हो जाये।

जिसका यक़ीन अल्लाह की ज़ात पर नहीं होता

अस्बाब पर होता है तो यह अ़मल उसे कामयाबी नहीं दिलाता, वह अ़मल को छोड़कर यानी फ़राइज़ को छोड़ कर नवाफ़िल की तरफ़ जायेगा, और जो नमाज़ छोड़ दे उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं है। वह अल्लाह के वादों से कैसे फ़ायदा उठा सकेगा, क्योंकि अल्लाह के वादे तो इस्लाम के साथ हैं उसके वादे उसके हुक्मों के साथ हैं जब इस्लाम में इसका कोई हिस्सा ही नहीं जैसे दुनिया में मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के शियर होते हैं, मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के हिस्से होते हैं, लोग उसमें हिस्सा डालते हैं और घर बैठे पैसे मिलते हैं। तो इसका इस्लाम में कोई हिस्सा ही नहीं, फिर जिस के पास नमाज़ नहीं उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं उसे हज और ज़कात पर क्या मिलेगा जब नमाज़ ही नहीं इस्लाम की जड़ बुनियाद ही नहीं इसलिए सोचो कि यक़ीनी अस्बाब क्या हैं और ग़ैर यक़ीनी अस्बाब क्या हैं, इनके दरमियान फ़र्क़ करो, इसमें यक़ीन वाला फ़र्क़ कर सकेगा लेकिन जिसे यक़ीन नहीं उसे तो यह भी ख़बर नहीं कि हालात क्यों आ रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हालात लाते हैं समझाने के लिए मुतनब्बह करने के लिए अगर हालात से यह न फिरा, अल्लाह की तरफ़ रूजू न किया तो फिर मार कर क़ब्र का अ़ज़ाब शुरू कर देते हैं।

मेरे दोस्तो! हालात तो तम्बीह के लिए लाये जाते हैं अगर इन हालात से भी यह सही रास्ते पर न आये तो मार कर क़ब्र का अ़ज़ाब शुरू कर देते हैं। इसलिए हालात को अपने आमाल से जोड़ कर देखो तो यह

हालात तरबियत भी कर दें और तरक़्क़ी भी कर दें।

ईमान की अ़लामत है यह कि ईमान वाला अपने हालात को अस्बाब से नहीं जोड़ेगा, यह ईमान की अलामत है, यह अपने हालात को अपने आ़माल से जोड़ लेगा और बेईमान कि वह अपने हालात को अपने अस्बाब से जोड़ेगा तो इस बेईमान पर जितने हालात ख़राब आयेंगे उतने ही ज़्यादा अस्बाब बनायेगा कि ये हालात हैं तो ये हथियार लाओ यह हालात हैं तो यह माल लाओ यह बीमारी है तो यह दवा लाओ हाँ, बीमारियाँ कि लोग यूँ समझते हैं कि बीमारियों के लिए दवाएं, अभी हमने बीमारियों का इलाज आमाल से नहीं किया और अभी हमें यह भी ख़बर नहीं कि जिस्म के आज़ा से जब अल्लाह का हुक्म टूटता है तो उस हुक्म के टूटने पर उस उ़ज़्व पर कौन सी बीमारी आयी?

उ़ज़्व के हुक्म के टूटने से कौन सी बीमारी आती है इसकी हमने कभी जानने की ज़रूरत ही नहीं समझी? जैसे एड्स मशहूर बीमारी है, कहाँ से आयी यह एड्स की बीमारी शर्मगाह के हुक्म के टूटने की वजह से अल्लाह ने भेजी है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि जिस उ़ज़्व से अल्लाह का हुक्म टूटेगा उस उ़ज़्व की बीमारी का सबसे पहला सबब अल्लाह का हुक्म टूटना ही है। कि उस उ़ज़्व में जो बीमारी आयी है उस उ़ज़्व में बीमारी का आना उसका सबसे पहला सबब उस उ़ज़्व से अल्लाह का हुक्म टूटना ही है।

इसलिए मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! बहुत अक्लमंदी की बात और बहुत कामयाबी का रास्ता वह यह है कि अपने हालात को बजाय अस्बाब से जोड़ने के, अपने हालात को अपने आमाल से जोड़ लो, तो हालात तरबिय्यत करदें, क्योंकि हालात तरबिय्यत और तरक्क़ी के लिए हैं ये हालात यानी तक्लीफ़ें, बीमारियाँ, मुसीबतें, मुक़द्दमें, क़र्ज़े वग़ैरह ये तरबिय्यत के लिए हैं कि इन्सान सही रास्ते पर पड़ जाये मगर हालात तरबिय्यत और तरक्क़ी ईमान वाले की करेंगे। यह ईमान की अलामत है कि ये अपने हालात को अपने आमाल से जोड़ते हैं और बेईमान अपने हालात को जोड़ेगा अस्बाब से।

क्योंकि अल्लाह तआला ने ईमान वाले को अहकामात दिये, और बेईमान को अस्बाब दिये।

हाँ बिल्कुल साफ़ बात है, न इसमें कोई शक है और इसके समझने में कोई दिक्क़त भी नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब दिये बेईमानों को और अहकामात दिये ईमान वालों को।

तो बेइमान मुतमईन हैं अपने अस्बाबों से जिनके दिलों में अल्लाह की ज़ाते आली का कोई यक़ीन नहीं है तो वे दुनिया के अस्बाब से राज़ी भी हो गये और मुतमइन भी हो गये कि क़ुरआन कहता है यह बात कि हमारी निशानियों से हमारे अहकामात से वे ग़ाफ़िल हैं, और ईमान वाले कि हमने ईमान वालों को अस्बाब के दर्जे में अपने अहकामात दिये हैं पक्की बात है।

तो क्या ईमान वाले अस्बाब नहीं इख़्तियार करेंगे? नहीं ईमान वाले तो हुक्म की बुनियाद पर अस्बाब

इस्तिमाल करेंगे, तो ये अस्बाब में अहकामात तलाश करेंगे।

ग़ैरों के पास कामयाबी का सबब तिजारत है और ईमान वाले के पास कामयाबी का सबब ख़ुदा के अहकामात हैं।

जब ईमान नहीं रहेगा मेरे दोस्तो! तो हम भी ग़ैरों के रास्ते पर तिजारत करेंगे, कि सूदी कारोबार करेंगे और ये कहेंगे कि दुनिया दारूल अस्बाब है सबब तो बनाना है कोई न कोई, तो अस्बाब बनाने में हराम अस्बाब इनकी ज़िन्दगियों में अस्बाब के यक़ीन की वजह से आयेंगे।

यक़ीन तो एक ख़ास शक्ल से ज़िन्दगियों में आयेगा, तक़रीरों से नहीं यक़ीन बना करते मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब यक़ीन की बात हो, तो यक़ीन की बात में ऐसे खो जाओ कि तुम्हें अपने अन्दर का शिर्क दिखायी देने लगे ऐसा नहीं कि यक़ीन की बात में किसी और बात को सोचें।

सुनो मेरे बुज़ुर्गो अपने आप को यक़ीनी अस्बाब पर लाओ, यक़ीनी अस्बाब पर वे आयेंगे जो ईमान के हलके क़ायम करेंगे, सहाबा किराम ईमान के हलक़ों से अपना ईमान बनाते थे, वे ईमान के हलके ख़त्म हो गये कि "आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें" अव्वल तो यह गलत फ़हमी कि कलिमे की दावत गैरों के लिए है इस उम्मत के साथ जो सबसे बड़ा हादसा हुआ वह यही कि कलिमे की दावत तो ग़ैरों के लिए है, हम तो हैं ईमान वाले।

हमें ईमान से ग़ाफ़िल किया ईमान के दावे ने. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को ईमान की दावत पसन्द है ईमान का दावा नहीं। जो ईमान का दावा करे उस पर अल्लाह इम्तिहान डाल दें कि कैसे कहा तुमने कि ईमान ले आये, हालांकि ईमान तुम्हारे दिलों में अभी दाख़िल नहीं हुआ कि नबी जी कह दीजिए इनसेः

"लम तुअ्मिनू वला किन कूलू अस्लम्ना"

कि कह दीजिये इनसे कि ये ईमान नहीं लाये इस्लाम लाये हैं।

हाँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ुद कह रहे हैं कि ये ईमान नहीं इस्लाम लाये हैं।

यह ईमान, इमान जब आयेगा मेरे दोस्तो! जब अ़ामाल अन्दर का तक़ाज़ा बन जायेंगे और ऐसा तक़ाज़ा बन जायेंगे कि दुनिया की कोई ताक़त किसी अदना अ़मल का मुक़ाबला नहीं कर सकेगी, दुनिया की कोई ताक़त ईमान वालों को अदना अ़मल से भी न रोक सकेगी और जब ईमान नहीं होता तो दीन अपनी सतह से गिरते गिरते फ़राइज़ पर आ जाता है क्योंकि फ़राइज़ कुफ़्र और इस्लाम की बाड़ हैं, ये फ़राइज़ कुफ़्र और इस्लाम की आड़ और दीवार हैं सिर्फ़, अगर यह दीवार भी बीच से हट जाये तो बन्दा कुफ़्र तक पहुँच गया।

ये फ़राइज़ ही तो कुफ़्र और इस्लाम में फ़र्क़ हैं, इससे मुतमइन न हो जायें कि नमाज़ तो हम पढ़ते ही हैं, सिर्फ़ नमाज़ ही दीन नहीं है, या और सारे फ़राइज़ ही सिर्फ़ दीन नहीं हैं। फ़राइज़ तो कुफ़्र और इस्लाम

की आड़ हैं सिर्फ़।

तो जब ईमान नहीं होगा तो फिर दीन में इतना इन्हितात आयेगा यानी दीन के अन्दर इतनी कमी आयेगी कि गिरते गिरते यहाँ पर पहुँचेगा कि नमाज़ ही सिर्फ़ दीन है इस्लामी मुआशरा इससे दूर चला जायेगा, ग़ैरों के तरीक़े महबूब होंगे।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब उम्मत में से ईमान की दावत ख़त्म होगी तो सबसे पहले इसका मुआशरा मुर्तद होगा, कि नमाज़ पढ़ेंगे, शक्लें ग़ैरों की, लिबास ग़ैरों के, नमाज़ पढ़ेंगे तिजारत ग़ैरों की, नमाज़ पढ़ेंगे मकान ग़ैरों जैसे, नमाज़ पढ़ेंगे शादियां ग़ैरों की और यह कहेंगे कि हम तो नमाज़ पढ़ते ही हैं। जब इनको किसी मुन्कर से रोका जायेगा और कोई भला काम इनके सामने आयेगा तो सबसे पहले इन्हें जो मुतमइन करने वाली चीज़ होगी वह नमाज़ होगी, हालांकि मुआशरा मुर्तद हो चुका, और जब मेरे दोस्तो! मुआशरा मुर्तद हो जाता है तो फिर उसके बाद ज़हनी इर्तिदाद आता है, कि आदमी का ज़हन मुर्तद हो जाता है।

किसे कहते हैं ज़हनी इर्तिदाद?

ज़हनी इर्तिदाद कहते हैं अल्लाह तआला के अहकामात को अस्बाब के मुक़ाबले में हलका समझना, कि अल्लाह के अहकामात का इस्तिख़फ़ाफ़ यानी अहकामात को हल्का समझेगा, बिल्कुल पक्की बात अर्ज़ कर रहा हूँ, यह बात बिल्कुल मुशाहदे में है कि जब यक़ीन कमज़ोर होंगे तो मुआशरे का इर्तिदाद आयेगा

जब मुआ़शरा मुर्तद हो जायेगा तो ज़हनी इर्तिदाद आयेगा कि अल्लाह के अहकामात से शर्माएगा।

मेरे दोस्तो–बुजुर्गो–अज़ीज़ो! याद रखना कि सिर्फ़ नमाज़ से मुसलमान ज़िन्दा नहीं रहेगा मुसलमान इस्लाम से यानी हुजूर सल्ल० के मुआ़श्रे से ज़िन्दा रहेगा वरना पिछली क़ौमें जब उनके नबी चले जाते थे तो उनमें नमाज़, हज, तवाफ़ वग़ैरह तक बाक़ी रहता लेकिन शैतान उनके आमाल की शक्ल इतनी बदल देता था कि उनके आमाल, उनके मुआ़श्रे के मुताबिक़ हो जाते यहां तक कि हज एक रस्म बन जाता था नंगे–नंगे हज करते थे। हज जो सबसे बड़ी इबादत, जो कपड़े पहन कर हज कर रहा है वह छोटी इबादत कर रहा है और जो नंगे नंगे हज करे वह बड़ी इबादत कर रहा है, क्योंकि जहालत से अ़मल तो बाक़ी रहे लेकिन जहालत से वह अ़मल बदल जायेगा और यही आज हो रहा है कि हम दीन पर चलेंगे लेकिन मुआ़श्रे और माहौल की रिआ़यत से दीन पर चलेंगे शौहर बीवी की रिआ़यत से, बेटा दीन पर चले बाप की रिआ़यत से, दीन पर चलने में बाप की रिआ़यत हराम है, दीन पर चलने में शौहर पर बीवी की रिआ़यत हराम।

तो इसने पूरा दीन नाम रखा है नमाज़ का, हालांकि यह आख़िरी चीज़ रह गयी है इसके पास इसके बाद कुछ नहीं कि जिसने नमाज़ को हल्का समझा और नमाज़ से इन्कार किया उसने कुफ़्र किया, हाँ दुकान के मुक़ाबले में नमाज़ को हल्का समझना कि नमाज़ यक़ीनी सबब है और दुकान ग़ैर यक़ीनी सबब।

फिर नमाज़ के वादों का इन्कार कि, नमाज़ का इन्कार ग़ैर ईमान वाला थोड़े ही करेगा ईमान वाले पर नमाज़ फ़र्ज़ है फिर नमाज़ का इन्कार कौन करे? कि नमाज़ के इन्कार से मुराद नमाज़ के फ़ज़ाइल से इन्कार कि नमाज़ रोज़ी कैसे खींच लायेगी? नमाज़ से बीमारी कैसे दूर होगी? नमाज़ से सेहत की हिफ़ाज़त कैसे होगी? अल्लाह के वादों का इन्कार ही कुफ़्र है वरना नमाज़ का इन्कार तो ग़ैर ईमान वाला भी नहीं करेगा वह भी तो कहता है कि नमाज़ अच्छी चीज़ है पर हमारे यक़ीन के बिगड़ जाने की वजह से आज हम अल्लाह के वादों का भी इन्कार कर रहें हैं यह इन्कार ही कुफ़्र है कि ऐसे रास्ते पर पड़ा है यह कि इसका कुफ़्र पर पहुँचना यक़ीनी है कि नमाज़ का इन्कार और इसको हल्का समझना इसे कुफ़्र पर पहुँचा देगा। अब कोई आड़ नहीं रही जो इसे कुफ़्र से बचाये।

इसलिये मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! जब कलिमे की दावत उम्मत में से निकल जायेगी तो सबसे पहले मुआशरा मुर्तद होगा फिर ज़हन मुर्तद होगा, फिर क़ल्ब मुर्तद होगा, क्योंकि ज़ब यक़ीन न होगा तो फिर यह माहौल के एतिबार से चलेगा और फिर दीन उस ज़माने के एतिबार से हो जायेगा कि इसके जैसे हालात हैं उसी के बक़द्र दीन पर चलो तो इस नाक़िस दीन पर चलने की वजह से इस पर हालात आयेंगे, परेशानियां आयेंगी, नाकामी आयेगी।

मेरे दोस्तों-बुजुर्गो! एक तो परेशानी आती है बेदीनी की वजह से और एक परेशानी आती है नाक़िस दीन

की वजह से, हमारा दीन नाक़िस है, इससे परेशानी आयेगी, बावुजूद नमाज़ पढ़ने के उनके ऊपर हालात आयेंगे कि नमाज़ पढ़ते हैं पर हालात आ रहे हैं।

क्योंकि यह चाहेगा कि मैं अपने ऐतिबार से दीन पर चलूं और कामयाबी मुझे पूरी मिले, तो फिर यह शिकायत करेगा कि मैं नमाज़ पढ़ता हूं और फिर भी यह हालात हम पर आ गये।

मेरे दोस्तो–बुजुर्गो! अपने हालात को हर वक़्त अपने आमाल से जोड़ते रहो, तो फिर ये हालात हमारे अन्दर से चुन–चुन कर उन आमाल को हमारे अन्दर से निकालेंगे जिनकी वजह से ये हालात आ रहे थे, और अगर हालात को अस्बाब से जोड़ा तो फिर दीन से और दूरी हो जायेगी, फिर यह कहेगा कि मेरे हालात ऐसे नहीं हैं कि मैं सूदी कारोबार न करूं, मेरे हालात ऐसे नहीं हैं कि मैं लोन पर पैसे न लूं, फिर अस्बाब इसको सब्ज़ बाग़ दिखायेंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो! अपने हालात को अपने आप से जोड़ो, यह हर आदमी के अपने सोचने की बात है, तो जब हालात को आमाल से जोड़ोगे तो ये हालात इसकी तरबियत कर देंगे और जब ये हालात को अस्बाब से जोड़ेगा तो फिर ये अस्बाब इसको दीन से दूर ले जायेंगे कि अभी हमारे हालात दावत की मेहनत को सीखने के नहीं हैं, कुछ अस्बाब बना लें फिर दीन को सीखेंगे।

मेरे दोस्तो! अस्बाब के मिलने पर दीन नहीं है, दीन से अस्बाब आते हैं, अस्बाब से दीन नहीं आता कि

पहले अस्बाब बना लें फिर दीन सीखेंगे, सहाबा किराम इस पर नहीं थे कि पहले अस्बाब बना लें फिर दीन सीखेंगे बल्कि सहाबा बग़ैर अस्बाब के फ़ाके में दीन सीखते थे, तो अल्लाह ने उनको अस्बाब दिये थे। वे सहाबी जो दो-दो वक्त फ़ाके पर गुज़र करते थे, वे सहाबी अपने माल की 40-40 हज़ार दिरहम की ज़कात देने वाले बने कि अल्लाह ने अब उन्हें अस्बाब दिये कि मिट्टी को भी हाथ लगा दें तो सोना बन जाये, इनकी तिजारत भी मुल्कों में फैल गयी। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० जैसे, और वे क़ौमें जिन्होंने नबी से यूँ कहा कि पहले अस्बाब बनाओ फिर हम दीन सीखेंगे तो अल्लाह तआला ने उनसे यूँ फ़रमाया कि अगर अस्बाब मिलने पर भी तुम लोग पूरे के पूरे दीन पर न चले तो ऐसा अज़ाब लायेंगे कि वह अज़ाब बहुत दर्दनाक होगा।

मेरे दोस्तो! जो दीन पर चलने के लिए अस्बाब मांगेंगे और दीन पर न चलेंगे, क्योंकि जितने दीन पर बग़ैर अस्बाब के चला जा सकता था उतने पर भी ये नहीं चलेंगे और इन्होंने सारे के सारे दीन को अस्बाब पर मौकूफ़ किया, याद रखना कि दुकान का नमाज़ से कोई ताल्लुक़ नहीं, माल से नमाज़ को कोई ताल्लुक़ नहीं, नमाज़ के लिए किसी अस्बाब की ज़रूरत नहीं।

क्यों भई कोई सबब चाहिए नमाज़ के लिए? कि ये अस्बाब हों तो नमाज़ पढ़ूँ, दुनिया का कोई सबब ऐसा नहीं है जिस पर नमाज़ मौकूफ़ हो और नमाज़ के अन्दर का कोई अमल ऐसा नहीं कि किसी सबब पर

मौकूफ़ हो, अगर एक आदमी सर से पाँव तक बिल्कुल नंगा हो, उसके बदन पर कोई कपड़ा नहीं है तो बताओ उस पर नमाज़ फ़र्ज़ है या नहीं? इसके पास बदन छुपाने के लिए एक धागा भी न हो लेकिन इस पर नमाज़ फ़र्ज़ है जिस तरह सर से पैर तक कपड़े पहने हुए पर नमाज़ फ़र्ज़ है यूं कहें कि इस नंगे आदमी पर भी उसी तरह यह नमाज़ फ़र्ज़ है कि शरीअ़त ने इसको नमाज़ अदा करने का तरीक़ा बतलाया हुआ है।

यह नहीं कि तुम पर नमाज़ माफ़ है क्योंकि तुम्हारे पास अस्बाब नहीं बदन का ढांकना उसके लिए फ़र्ज़ है जिसके पास कपड़ा हो, हज करना फ़र्ज़ है उस पर जिसके पास माल हो सफ़र में ख़र्च का, जिसके पास सफ़र के ख़र्च का माल न हो उस पर हज फ़र्ज़ नहीं, ज़कात फ़र्ज़ है उस पर जिसके पास माल हो लेकिन इसके पास कपड़े नहीं पर नमाज़ फ़र्ज़ है। तो यह नहीं मेरे दोस्तो! कि पहले अस्बाब होंगे फिर दीन होगा, जो यूँ कहेंगे नबी से कि पहले अस्बाब लाओ तो यह वे लोग होंगे जिन्हें दीन पर चलना ही नहीं है। जिनको ईमान लाना ही नहीं था, तो अल्लाह ने उन्हें अस्बाब दिये इत्मामे-हुज्जत के लिए और अपना अ़ज़ाब लाने के लिए, जो लोग दीन पर चलने के लिए अस्बाब माँगते हैं अल्लाह तआ़ला फिर उन पर सख़्त पकड़ लाते हैं अगर अस्बाब मिलने पर भी दीन पर न चलें तो सख़्त अ़ज़ाब लायेंगे। इसलिए मेरे दोस्तो! याद रखना कि अस्बाब से दीन नहीं आता दीन से अस्बाब आते

हैं, जो लोग हुक्म पूरा करेंगे बग़ैर अस्बाब के तो अल्लाह तआ़ला अस्बाब को उनके मुवाफ़िक़ कर देंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें दावत से ईमान सीखना है क्योंकि ईमान वाले की यही अ़लामत है कि ईमान वाला अपने हालात में चौकन्ना हो जायेगा कि इन हालात का तअ़ल्लुक़ मेरी बदआमालियों से है। बाज़ मर्तबा अल्लाह तआ़ला हालात लाते हैं बावुजूद नमाज़ी होने के क्योंकि इसने उतने दीन को दीन समझा है जितने पर यह चल रहा है हालांकि दीन तो पूरा दीन है। यह यूँ समझ रहा है कि जितने दीन पर मैं चल सकता हूँ उनता ही दीन है।

लोग आते हैं आकर शिकायत करते हैं कि देखो जी मैं भी नमाज़ी हूँ और मेरे घर वाले भी नमाज़ी हैं लेकिन हमारे ऊपर ऐसे ऐसे हालात आते हैं, अल्लाह ने नमाज़ी होने के बाद भी कामयाब नहीं किया, कोई आकर कहता है शिकायत करता है कि मैं तो मस्जिद से नमाज़ पढ़ कर निकल रहा था तो पुलिस वाले मुझे पकड़ कर ले गये मैं बिल्कुल बेगुनाह हूँ।

मेरे दोस्तो! जिस तरह बेदीनी की वजह से नाकामी आती है, हालात आते हैं ठीक उसी तरह की नाकामी और हालात नाक़िस दीन की वजह से भी आते हैं और हम नाक़िस दीन पर चल रहे हैं क्योंकि हमारा दीन नाक़िस है? इसलिए कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं है।

इसलिए यह कि मेरे दोस्तो! हम ईमान की यक़ीन की बातें तो ख़ूब सुनते हैं पर आज तक हमें यह याद

न हो सका कि ईमान कैसे बनेगा?

ईमान-ईमान की दावत से बनेगा

यह ईमान-ईमान की मेहनत से बनेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा को कलिमे की दावत पर उठाया कि हर एक कलिमे का दाई था रोज़ाना का यह काम था। सहाबा का कि आओ बैठो ईमान ले आवें, अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० की रोज़ाना की मजलिसें कि "आओ बैठो ईमान ले आवें।

यह ईमान की दावत और ईमान के हल्क़े, ग़ैब के तज़्किरे ये बिल्कुल ख़त्म हो गये और मैं तो अर्ज़ किया करता हूँ कि अवामुन्नास में से तो ख़त्म हो ही गये थे ख़ुद दावत की मेहनत करने वालों के दरमियान से भी ख़त्म हो गये, सच्ची अर्ज़ करता हूँ।

हर साल के 4 महीने लगवालो, साल के चिल्ले लगवालो, महीने के तीन दिन लगवालो, रोज़ाना के ढाई घन्टे से लेकर 8 घन्टे लगाने वाले इनसे पूछो कि भई तुम्हारा ईमान का हल्क़ा कब होता है। 6 नम्बर गिनवाने को रह गये, हालांकि हर नम्बर की मेहनत में जो पहली मेहनत हर नम्बर के साथ जुड़ी हुई है कि दावत, वह दावत उस नम्बर की हक़ीक़त अपने अन्दर उतारने के लिए थी, मैं तो यहां तक अर्ज़ करता हूँ कि यह रोज़ाना अपने घर में अपनी बीवी और बच्चों के साथ ईमान का हलक़ा किस वक़्त लगाता है? कौन सा वक़्त है घर में ईमान का हल्क़ा लगाने का यह बताओ।

मैं मस्जिदवार जमाअत का साथी, मैं चार महीने

लगाने वाला, मेरा 24 घन्टे में वह कौन सा घन्टा है जिसमें मैं अपनी बीवी बच्चों के साथ बैठ कर अल्लाह के ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे करता हूं।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! हक़ीक़त यह है कि अभी तक हमने ईमान के बनाने का इरादा ही नहीं किया, हम तो यह समझ रहे हैं कि दावत का मतलब यह है कि एक आदमी तक़रीर करे और सब सुनें।

नहीं मेरे दोस्तो! ईमान की दावत का मक़्सद यह है कि हर फ़र्द अपने घर से लेकर आलमी सतह पर हर फ़र्द-ए-उम्मत को अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए ईमान की दावत दे। हर फ़र्द अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए दूसरों को ईमान की दावत दे। यह था मक़्सद इस काम का।

जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में आम फ़िज़ा थी। ईमान के बनाने की और ईमान की दावत की, इस्लाम से कोई भागना चाहे तो दावत देने वालों से छूट कर कहां जायेगा, इस्लाम में कोई आना चाहे तो ईमान की दावत सिखलाने वाले, हर वक़्त मस्जिद में मुन्तज़िर तैयार बैठे हुए हैं, कितनी अजीब बात थी।

पूरे इस्लाम में से अगर एक आदमी भी भागना चाहता है तो दावत ने ऐसा हलक़ा बनाया हुआ था, दावत ने ऐसा बन्धन बनाया हुआ था, दावत ने ऐसा क़िला बनाया हुआ था कि इस्लाम से निकलना बहुत मुश्किल था, लेकिन दावत उम्मत में से निक़ली तो उम्मत का इस्लाम से निकलना आसान हो गया।

हज़रत फ़रमाते थे, कि जब उम्मत कलिमे की

दावत को छोड़ देगी तो ग़ैरों का दीन इसे भला लगने लगेगा और अपना दीन हलका लगेगा। अगर कोई इस्लाम से भागना चाहे तो एक मस्जिदवार जमाअत का साथी वह चाहे किश्ती (नांव) चलाने वाला बादबान हो या दुकानदार हो या तिजारत करने वाला हो या काश्तकारी करने वाला ज़मीनदार हो ये सारे मस्जिद वार जमाअत के साथी हर एक ख़बर रखते थे, इन्सान की इतनी क़ीमत कलिमे की दावत की वजह से थी।

लेकिन आज इलाक़े के इलाक़े, मुल्क के मुल्क, सूबे के सूबे, गाँव के गाँव इस्लाम में से निकल जायें तो हमारे कानों में जूँ न रेंगेगी, क्योंकि हम बन बैठे ताजिर, हम बन बैठे दुकानदार, हम बन बैठे ज़मींदार, हमें क्या करना जबकि हम ताजिर बाद में हैं हुज़ूर सल्ल० के उम्मती पहले हैं। हम दुकानदार या ज़मींदार बाद में हैं, अपने नबी के नायब पहले हैं कि अल्लाह ने हमें इन्सानों की हिदायत का जरीया बनाकर ज़मीन पर भेजा है।

कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत का मुकल्लफ़ बनाकर भेजा है, लेकिन हम यह कहते हैं कि मियाँ, अल्लाह ही के हाथ में हिदायत है चाहे किसी को दे या न दे, अल्लाह ही के हाथ में गुमराही है जिसे चाहे गुमराह करे, नहीं ऐसा नहीं है बल्कि याद रखना मेरे दोस्तो, कि इन्सान ही इन्सान की हिदायत का ज़रीया है और इन्सान ही इन्सान की गुमराही का ज़रीया है। जब कलिमे की दावत को और कलिमे की मेहनत को किया जायेगा तो इन्सान की क़ीमत क़ायम होगी कि

एक मुसलमान की क्या क़ीमत है।

"कलिमे की दावत" उम्मत की शफ़क़त दिलों में पैदा करेगी और कलिमे की दावत, उम्मत में इन्सान की अहमियत पैदा करेगी और जब कलिमे की दावत उम्मत में से निकल जाये तो फिर उम्मत का इस्लाम में से निकलना ऐसा आसान हो जायेगा, अव्वल तो पता ही नहीं चलेगा कि कहाँ के लोगों में कितना इस्लाम है और कहाँ के ईमान वाले पर कैसे हालात हैं।

क्योंकि मैं तो ताजिर हूँ और मैं तो कारोबारी हूँ, मेरे पास कहाँ मौक़ा है कि मैं कहीं जा सकूँ और फिर हिदायत तो अल्लाह के हाथ में है, अरे ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह ने तुझे ज़रीया बनाया है हिदायत का। हर मुसलमान को इन्सानों की हिदायत का ज़रीया बनाया है।

जब मुसलमान कलिमे की दावत को लेकर कलिमे की मेहनत को शुरू करेगा तो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत का नुज़ूल शुरू हो जायेगा, इन्सानों का अल्लाह की तरफ़ आना शुरू हो जायेगा, लेकिन अगर हम अपने ईमान और इस्लाम को लिए हुए इसी तरह बैठे रहें, अपनी दुकानों और कारोबारों और ज़मीनदारी में और अपने अमल पर मुतमइन रहें कि मियां हम तो अमल करते ही हैं, हम तो नमाज़ पढ़ते ही हैं, हम तो तस्बीह और तिलावत करते ही हैं।

तो याद रखना ख़ुदा की क़सम तू उम्मत को दावत दिये बग़ैर सिर्फ़ अपने अमल से निजात नहीं पा सकेगा, बड़ी सख़्त बात है यह, लोग समझते नहीं हैं बस

इश्काल पैदा करेंगे, पर क़सम खा कर अर्ज़ करता हूँ, उलमा ने साफ़ तौर से लिखा है कि "इस उम्मत की ज़िम्मेदारी यह है कि अगर इस उम्मत ने सिर्फ़ अपने अमल की फ़िक्र की और दूसरे के ईमान-अमल की फ़िक्र न की तो इस उम्मत का फ़र्द अपने अमल से निजात नहीं पायेगा"। मारिफुल कुरआन तफ़सीर मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह० में साफ़ साफ़ लिखा हुआ है। पर आज मुसलमान सवाल करेगा कि क्या सबको इस काम के करने का हुक्म है? क्या दावत फ़र्ज़-ए-ऐन है? या फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है?

फ़तह मक्का के मौक़े पर हज़रत इक्रिमा ने भागना चाहा इस्लाम से, इस्लाम नहीं लाये थे ये अबूजहल के बेटे, अल्लाह ने एक किश्ती (नाव) चलाने वाले को इनकी हिदायत का ज़रीया बना दिया। किस को? एक किश्ती चलाने वाले बादाबान को, कोई बड़ा आदमी नहीं, कोई आलिम नहीं, बल्कि एक मामूली किश्ती चलाने वाले की दावत को हज़रत इक्रिमा रज़ि० की हिदायत का ज़रीया बनाया यानी दुश्मने-इस्लाम अबू जहल का बेटा फ़तह मक्का के मौक़े पर भागा इस्लाम से कि या तो क़त्ल होउंगा या मुझे मग़लूब होकर इस्लाम क़बूल करना पड़ेगा। लिहाज़ा यमन भाग लो, तो यह यमन की तरफ़ भागे और किश्ती में सवार होकर समन्दर के रास्ते से यमन की तरफ़ चले, तो किश्ती पलटने लगी समन्दर में। अब किश्ती पर सवार लोग हालात में आये तो वहां यह नहीं था कि यह आने वाला हाल समन्दर या हवा की मख़्लूक़ हो बल्कि यह

हाल अल्लाह ही की मख़्लूक़ थी तो यें हालात क्यों आये। किश्ती पलटने लगी तो फ़ौरन इस हाल को आमाल से जोड़ा। वहां सिर्फ़ इतनी बात नहीं थी। हमने तो कलिमा पढ़ ही लिया है। बल्कि वहाँ बच्चे-बच्चे का, मर्द का, औरत का यह यक़ीन बनाया और सिखाया गया था कि हर मुसीबत से कलिमा बचायेगा यानी अल्लाह बचायेंगे, वहां तो यह यक़ीन बना हुआ था, पुराने नये का, औरत मर्द का, अब किश्ती में आया तूफ़ान।

इक्रिमा को बज़ाहिर तैरना भी नहीं आता था, तो क्श्ती वाले से कहने लगे कि मेरे बचाव का कोई तरीक़ा, मेरे बचाव का कोई रास्ता है।

किश्ती वाला कहने लगा कि पानी तुम्हें न डुबोये तुम पानी में गर्क़ होने से बच जाओ तो इससे बचने का भला रास्ता यह है कि तुम कलिमा-ए-इख़्लास कह लो, बच जाओगे।

इक्रिमा कहने लगे कि भई मुझे तैरना नहीं आता किश्ती पलटने वाली है मैं डूब जाउंगा किश्ती वाला कहने लगा कि यह पानी तुम्हें कैसे डुबोयेगा जब तुम कलिमा-ए-इख़्लास कह लोगे, तो हज़रत इक्रिमा इस्लाम तो लाये नहीं थे जो उन्हें पता होता कि कलिमा-ए-इख़्लास किस को कहते हैं तो पूछा कि भई यह कलिमा-ए-इख़्लास क्या होता है कि तुम कह रहे हो कि कलिमा-ए-इख़्लास कह लो बच जाओगे तो हमें बताओ कि कलिमा-ए-इख़्लास क्या होता है?

तो वे किश्ती वाला कहने लगा कि तुम्हें नहीं

मालूम कि यह क्या होता है? तो इक्रिमा ने कहा कि नहीं, हमें नहीं मालूम, किश्ती वाले ने कहा कि कहो, "लाइलाह इल्लल्लाह" इक्रिमा कहने लगे कि इसी वजह से भाग कर आया हूँ मैं, तेरी किश्ती में इसी वजह से सवार होकर यमन जा रहा हूँ, किश्ती वाले ने कहा अच्छा तुम इसी वजह से भाग रहे हो, तो चलो वापस चलो, किश्ती वाले ने कलिमा-ए-इख़्लास की दावत दी और इन्हें वापस लाकर इनकी बीवी हज़रत उम्मे हकीम रज़ि० के हवाले किया वह इन्हें लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई। वहाँ पर उन्होंने जाकर कलिमा का इक़रार किया, जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० के यहां इस किश्ती वाले की दावत पर इस्लाम लाने वाले हज़रत इक्रिमा रज़ि० से बेहतर अल्फ़ाज़ में जो उन्होंने उस मौक़े पर कहे, किसी ने नहीं कहे। इस नाव चलाने वाले की कलिमे की दावत पर जो इस्लाम इक्रिमा लेकर आये हैं, जो अल्फ़ाज़ इक्रिमा ने कहे इस्लाम की क़बूलियत पर, वे अल्फ़ाज़ किसी सहाबी ने इस्लाम के क़ुबूल करते वक़्त नहीं कहे।

मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत से उम्मत में 3 चीज़ें पैदा होंगी।

(1) इताअत, (2) कलिमे की मेहनत, (3) हिजरत, उम्मत के अन्दर जिहाद की भी इस्तिदाद कलिमे की दावत से पैदा होगी तो क्या कहा इक्रिमा ने इस्लाम क़ुबूल करते वक़्त? "इन्नी मुस्लिमुन, मुजाहिदुन, मुहाजिरून"

ये अल्फ़ाज़ किसी सहाबी से साबित नहीं हैं, इसमें

कोई शक नहीं कि सारे सहाबी मुजाहिद भी थे, मुहाजिर भी थे, मुसलमान भी थे। लेकिन ये अल्फ़ाज़ इस्लाम के कुबूल करने पर सिर्फ़ हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहे हैं, "इन्नी मुस्लिमुन, मुजाहिदुन, मुहाजिरून"

मुस्लिम कहते हैं, अपने आप को अल्लाह के हुक्मों पर सौंप देने वाले को। मुजाहिद कहते हैं दावत के तक़ाज़ों पर हर चीज़ को कुर्बान कर देने वाले को। यहां तक कि अपनी जान तक कुर्बान कर देने वाला।

मुहाजिर कहते हैं, हर उस चीज़ से जिससे अल्लाह ने रोका है, उससे रूक जाने वाला, अगर दावत के तक़ाज़े पर अपना घर छोड़ना पड़े तो अपना घर छोड़ देने वाला तो आकर हज़रत इक्रिमा ने यही अर्ज़ किया कि मैं इस्लाम लाने वाला अल्लाह की इताअत करने वाला, अल्लाह के दीन की मेहनत करने वाला अल्लाह के लिए वतन छोड़ने वाला, यह इस्तिदाद कलिमा-ए-इख़्लास की दावत जो नांव चलाने वाले ने इन्हें दी, उससे पैदा हुई।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अज़ीज़ो! यह मेहनत हो रही है कलिमे की दावत को मुसलमानों में ज़िन्दा करने की, कि इसकी दावत से पूरा दीन, हकीक़त के साथ इसकी ज़िन्दगी में आना है, अन्दर के तक़ाज़े पर, अभी हमारा दीन वक़्ती है, इसलिए कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं है। इस यक़ीन का ताल्लुक़ कलिमे की दावत से है। कलिमे की दावत के साथ कलिमे की मेहनत है। यही दावत हर नबी की बेअ़्सत का मक़सद है। कलिमे की दावत से यक़ीन, यक़ीन से आमाल,

आमाल से अल्लाह की रज़ा अल्लाह की रज़ा से कामयाबियाँ और हम मेहनत कर रहे हैं अस्बाब पर, तो अस्बाब की मेहनत से यक़ीन की ख़राबी यक़ीन की ख़राबी से आमाल की ख़राबी, आमाल की ख़राबी से अल्लाह की नाराज़गी अल्लाह की नाराज़गी से हालात का बिगड़ना हमारी इस मेहनत का तो यह मुख़्तसर सा रास्ता है।

इस्लिए मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हमे अपनी मेहनत के रूख़ को बदलना है, उम्मत अपनी मेहनत के रूख़ को बदले इसके लिए हमें कलिमे की दावत को ज़िन्दा करना है। कलिमे की दावत ज़िन्दा करने के लिए ईमान के हलक़े हर मस्जिद में लगाना हैं अल्लाह के ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे करना हैं, इस के लिए ख़ूब ऊँची-ऊँची दावत दो, आला ईमान "आमिनू कमा आमनन्नास" की दावत दो तो, इससे इन्शाअल्लाह उम्मत अपनी मेहनतों के रूख़ बदलेगी। तुम मजमे और माहौल के ऐतिबार से न बोलो, हर नबी बिगड़े ही माहौल में भेजा जाता था, वह आकर कलिमे की दावत से माहौल बनाते थे न कि माहौल के ऐतिबार से दावत पेश करते थे।

मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत को छोड़ देने की वजह से उम्मत में यह ग़लतफ़हमी पैदा हो गयी। उम्मत तो क्या ख़ुद काम करने वालों में यह बात पैदा हो गयी कि माहौल के एतिबार से या मजमे के एतिबार से दावत दी जाय, नहीं बल्कि हर किसी नबी ने कलिमे की दावत ही को पेश किया है बात का मानना और

न मानना इसका ज़िम्मा नबी को नहीं दिया है, कलिमे की दावत ही से ख़ुद दावत देने वाले का यक़ीन बनेगा और माहौल बनेगा, हाँ ये दो ख़ूबियाँ हैं कलिमे की दावत की, यह ख़ास्सा है दावत का।

इसलिए मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत को ज़िन्दा करके हमें उम्मत की मेहनतों के रूख़ को बदलना है कि हर ईमान वाला ईमान और आमाल की हक़ीक़त को पाने के लिए ईमान और आमाल की मेहनत करने वाला बन जाये।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि अभी तक जो मेहनत दावत की हो रही है वह तो नुबुव्वत वाली मेहनत को उम्मत में ज़िन्दा करने की मेहनत हो रही है, उम्मत पहले इस काम को समझ ले, जब यह दावत उम्मत के उमूम में आयेगी कि उम्मत के उमूम में ईमान के हलक़े, उम्मत के उमूम में आमाल की हक़ीक़त को हासिल करने की फ़िक्रें, तब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त वे नुसरतें, वे बरकतें, वे रहमतें लायेंगे जो सहाबा के दौर में जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० की मेहनत पर, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो कुछ ज़ाहिर के ख़िलाफ़ उस वक़्त किया है, वह सब आज होगा। मेरे दोस्तो! इस वक़्त जो कुछ हो रहा है दुनिया में यह तो सिर्फ़ हज़रत फ़रमाते थे कि वे बरकतें हैं, जो जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० की बेअ़सत के पहले ज़ाहिर हो चुकी थीं। बकरी के थनों में दूध का आ जाना, यह बेअ़सत के पहले की बात है, ये तो वे बरकात हैं मेरे दोस्तो! बातिल का गिर जाना यानी

अपनी जगह से हरकत में आ जाना और उनका खड़े-खड़े ज़मीन पर पलट जाना, ये सारी बरकतें आप की बेअ़सत से पहले आपकी पैदाइश के बादं की हैं।

अभी काम शुरू नहीं हुआ, जब काम शुरू होगा फिर वह होगा जो ख़न्दक़ में हुआ, फिर वह होगा जो सहाबा के साथ कैसर और किसरा के दरमियान हुआ।

लेकिन यह सबका सब याद रखियो अच्छी तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को जब पकड़ेंगे जब ईमान वाले कलिमे की दावत पर जमा हो जायेंगे, क्यों?

इसलिए कि मेरे बुज़ुर्गो, अज़ीज़ो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को हक़ की वजह से पकड़ते हैं, अल्लाह ने अपने सारे वादे बनी इसराईल के इस पर पूरे किये कि उन्होंने सब्र से काम लिया। सब्र का क्या मतलब कि हमें मारा जाता रहे और हम बर्दाश्त करते रहें। नहीं यह बात नहीं है कि सब्र इसको नहीं कहते, सब्र कहते हैं सबसे पहले अपनी ख़्वाहिश के मुक़ाबले में हुक्म को पूरा करना, यह है सब्र।

इसीलिए हुज़ूर सल्ल० ने रोज़े को सब्र कहा है कि रोज़ा सब्र है क्यों? इस लिए कि रोज़े ने इसको खाने से रोक दिया। इसलिए रोज़ा सब्र है और सब्र का बदला जन्नत है कि रोज़ेदार किसी दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल हो जाये, हर दरवाज़े से पुकारा जायेगा।

इसलिए अ़र्ज़ यह है कि ईमान-ईमान की मेहनत से बनेगा। इस ईमान के मुक़ाबले पर जब बातिल आयेगा तो मारा जायेगा, हज़रत फ़रमाते थे कि आमाल से भी

बातिल मग़लूब नहीं होगा कि हम यह चाहें कि हमारी नमाज़ से बातिल का मुक़ाबला हो जाये कि नहीं पहले कलिमे की दावत से यक़ीन बनेगा, फिर यक़ीन से नमाज़ ऐसी बनेगी कि यह नमाज़ ग़ैरों का मुक़ाबला कर ले, और इस नमाज़ के मुक़ाबले बातिल फ़ेल हो जाये।

अब तो भई बात ही कुछ से कुछ है, वरना हज़रत फ़रमाते थे कि बातिल अ़मल के मुक़ाबले नाकाम नहीं होगा क्योंकि उन्हें ख़बर है कि इन बिगड़े हुए यक़ीन से इसका अ़मल बनेगा ही नहीं तो बिगड़े हुए यक़ीन से हमारा बातिल कैसे मग़लूब हो जायेगा।

उन्हें मालूम है हमारे आमाल, हमारे अस्बाब, हमारी कमाइयाँ, हमारी चीज़ें जो ईमान वाले इस्तिमाल कर रहे हैं, इससे इनकी नमाज़ों में जान नहीं है जो सहाबा की नमाज़ में थी। हाँ वे अगर होते तो हम यक़ीनन उनके मुक़ाबले में नाकाम हो जाते, उन्हें भी ख़बर है कि हमारी नाकामी के क्या अस्बाब हैं, वरना तो मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! उस ज़माने में तो बातिल ख़ुद ही रूख़ फ़ेर कर चला जाता था मुक़ाबले की भी हिम्मत नहीं करता था। ईमान वालों से मुक़ाबला वे किया करते जिन्हें अक़्ल नहीं होती थी, वरना मुश्रिक ख़ुद कहते थे, हुरमजान ने ख़ुद कहा है सहाबा से कि जब से तुम्हारा रब तुम्हारे साथ हो गया जब से हम मग़लूब हो गये वरना पहले जब हम तुम एक से थे तो हम तुम पर ग़ालिब थे तुम्हारा ख़ून हम बहाते थे तुम्हारा माल हम लूटते थे, हम तुम पर ग़ालिब थे।

कौन कह रहा है? हुरमजान नाम का मुश्रिक कि तुम हमारे गुलाम बन कर रहते थे, लेकिन जब से यह तुम्हारा रब तुम्हारे साथ हो गया तब से हम मग़लूब हो गये। यह एक मुश्रिक कह रहा है सहाबा से। इसलिए कि हक़ ग़ालिब रहेगा बातिल पर।

वजह क्या है मुक़ाबले की?

मुक़ाबले की वजह यह है कि उन्हें ख़बर है कि तुम्हारे आमाल इस क़ाबिल नहीं हैं जो उनका मुक़ाबला कर सकें क्योंकि बातिल को भी हक़ के ग़ालिब आ जाने के अस्बाब की ख़बर है, कि हक़ कब ग़ालिब आता है।

मेरे दोस्तो! दावत से ईमान बनाओ, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को अमल के मुक़ाबले पर नहीं ईमान के मुक़ाबले पर नाकाम करेंगे इसे याद रखियो वरना बातिल अमल वालों के मुक़ाबले में कामयाब हो जायेगा क्योंकि अमल है पर अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को अपने वादों के मुताबिक़ कैसे मग़लूब करें।

देखो साफ़ बात है अमल है यक़ीन नहीं। आज उम्मत ने अमल सीखा यक़ीन नहीं सीखा इसलिए बावुजूद अमल के नाकाम हैं और बावुजूद आमाल के बातिल ग़ालिब है।

बातिल किसको कहें?

बातिल कहते हैं कि अल्लाह के अवामिर को जिन पर वादे हैं उन्हें यह कामयाबी का यक़ीनी सबब न समझे और दुनिया की शक्लों और नक़्शों को यह

अपना अस्बाब समझे यह बातिल ख़ुद हमारे अन्दर जब मौजूद है तो कैसे कामयाबी मिले बाहर के बातिल पर कि इसको हलाल तिजारत करने में नाकामी नज़र आ रही है, इसको अपने घर में हराम आलात न लाने में नाकामी नज़र आ रही है।

इसलिए मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! इरादे करो निय्यतें करो कि इन्शाअल्लाह हमें दावत को मक़सद बना कर चलना है, और सारी उम्मत को इस पर लाना है, यह दावत की मेहनत हर उम्मती की ज़िम्मेदारी है, बग़ैर कलिमे की मेहनत के यक़ीन नहीं बनेंगे, यह सोचा करो हर वक़्त कि अल्लाह ने हमें कितनों की हिदायत का ज़रीया बनाया हुआ है, हुजूर सल्ल० ने एक-एक सहाबी को पूरे-पूरे क़बीले की हिदायत का ज़रीया बनाया है, एक सहाबी तुफ़ैल बिन उमर दौसी रज़ि० 80 घरानों को इस्लाम में लाने का ज़रीया बने।

इस उम्मत में अल्लाह ने इसकी इस्तिदाद रखी है क्योंकि अब कोई नबी नहीं आयेगा बल्कि नुबुव्वत वाली मेहनत ही अल्लाह ने एक एक उम्मती के हवाले कर दी है।

"कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि"

लाम तख़सीस का है कि तुम्हें ख़ास करके इसी काम के लिए भेजा है, कि इस उम्मत की नुबुव्वत वाली मेहनत के करने से क़ौमें इस्लाम में आयेंगी, अफ़राद नहीं बल्कि क़ौमें, इसकी अल्लाह ने इस उम्मत के अन्दर इस्तिदाद रखी है।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! अब तक कि गुज़री हुई

ज़िन्दगी पर इस्तिग़फ़ार करो कि हमने अब तक यह बात नहीं समझी कि हम इन्सानों की हिदायत का ज़रीया हैं, बड़ी जुर्म की बड़ी तौबा करने की बात है कि मैं आज तक अपने आपको ताजिर समझता रहा।

नहीं मैं तो नबी का उम्मती हूँ और बहैसियत उम्मती होने के मेरे ज़िम्मे नुबुव्वत वाला काम है, जितना इस राह में फिरेंगे और जितनी दावत देंगे अपना यक़ीन बनेगा और उम्मत सही यक़ीन और अ़मल पर आयेगी।

इसलिए अपना यक़ीन बनाने और सारे आलम के इन्सानों को सही यक़ीन पर लाने के लिए हमें कलिमें की दावत को मुसलमानों में ज़िन्दा करते हुए कलिमे की मेहनत को करना है अब इसके लिये अपनी मौजूद क़ुरबानियों से आगे बढ़ो और हर साल के चार-चार और छः-छः महीने की निय्यतें करो, इरादे करो, इसके लिए नक़द नाम लिखाओ।

बयान
मौलाना मुहम्मद सअ्द साहब कान्धलवी

तारीख़ : 14.08.2000

जगह : बंगले वाली मस्जिद, हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली-13

मेरे दोस्तो! अभी दावत की सतह गिरी हुई है मैं सच्ची अर्ज़ कर रहा हूँ मुझे किसी से शिक्वा नहीं है।

इसलिये कि जब तक हमारे दरमियान मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात नहीं रहेंगे मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि ख़ुदा की क़सम दावत की सतह बुलन्द नहीं होगी। सारे उ़लमा की किताबें अपनी जगह, मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात हमारे काम की सतह को आगे बढ़ायेंगे इसके अ़लावा कोई रास्ता नहीं। आप वक़्त का मुतालबा करें आप 8 घंटे का मुतालबा करें आप चार महीने छः महीने का मुतालबा करें तो तमाम का तमाम जब होगा जब हमें इस काम की ख़बर हो कि आख़िर इस काम से मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० क्या चाहते थे। तो बुनियादी बात मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो यह है कि हम लोगों में आपस के मुज़ाकरों में हज़रत के बयानात ज़्यादा से ज़्यादा आपस की मज्लिसों में आयें, यह सबसे पहली बात है। इसलिये कि यह यक़ीनी बात है कि जब दाई की दावत की सतह नीचे उतरती है तो मदऊ़ की सतह ख़त्म हो जाती है उसे तो जब मौत पर राज़ी करोगे तो वह बुख़ार पर राज़ी होगा। एक है नबी का

उम्मत की सतह पर उतर कर दावत देना, एक है नबी का अपनी सतह पर रहकर दावत देना यह तो यक़ीनी बात है कि यह नुबुव्वत वाला काम है, मौलाना मुहम्मद इलयास रह० को मिल गया एक खोई हुई चीज़ मिल गयी उनको, "ऐसा नहीं है कि यहाँ से काम की इब्तिदा है काम क़दीम है सारे दलाइल सारा तरीक़ा-ए- कार सौ फ़ीसद और तमाम का तमाम सहाबा किराम का है, तो जब यह नुबुव्वत वाला काम है तो नुबुव्वत वाली सतह चाहेगा, यह अवाम की सतह पर हरगिज़ नहीं आयेगा।

एक आम आदमी से आप सल्ल० फ़रमा रहे हैं कि तेरी नमाज़ नहीं हुई फ़िर से नमाज़ अदाकर यह बात एक आम आदमी से फ़रमायी है आप सल्ल० अबूबकर रज़ि और उमर रज़ि से नहीं फ़रमा रहे हैं एक आम आदमी ने नमाज़ अदा की। क्योंकि नबी अपनी वाली नमाज़ को उम्मती की नमाज़ से जोड़ रहे हैं। नबी अपनी वाली नमाज़ से उम्मत की नमाज़ को जोड़ेंगे कि इसकी नमाज़ मेरी सतह की है या नहीं है। है, तो ठीक है और अगर मेरी सतह पर इसकी नमाज़ नहीं है तो जा नमाज़ पढ़ तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। मेरे दोस्तो एक तो है हमारा उम्मत के ज़ौफ़ को देखकर अपनी दावत से नीचे उतर जाना। यह तो बिल्कुल नुक़सान का रास्ता है। यानी काम ही नहीं हैं वह जिसमें दाई, मदऊ की सतह पर उतरे, ऐसा है जैसे ताजिर-ग्राहक की सतह पर उतर गया। ताजिर ग्राहक की सतह पर उतर गया अब इसकी तिजारत ख़त्म। ऐसे

ही दाई–मदऊ की सतह पर उतर गया। इसकी दावत खत्म हो गयी अब क्या होगा कि उम्मत की सलाहियतें दुनिया पर लगेंगी। क्योंकि हम उस सतह की दावत नहीं दे रहे जिस सतह पर उम्मत अपनी मेहनतों के रूख बदले। तो हमारी बात की सतह तो दोस्तो बहुत ऊँची होनी चाहिए।

मैं इसलिये यह बात अर्ज़ कर रहा हूँ कि आप सब हज़रात अपने–अपने इलाक़े में काम को लेकर चलने वाले हैं। यह मुस्तक़िल सवाल है, कि हम अपने मज्में से क्या बात करें।

"मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० ईमानियात पर इतना बोलते थे, कि आदमी को अपने अन्दर का शिर्के ख़फ़ी नज़र आता था। कि यह मेरे अन्दर का शिर्क है" और अपने मजमों को आख़िरत के वादों पर उठाया। एक आदमी की सतह से ऊँची बात।

हम कर रहे हैं अवाम की सतह की बात, ताकि ये समझें। नहीं हमें बात करनी है इनकी सतह से ऊँची ताकि इनकी सतह बुलन्द हो। आवाज़ की तरफ़ वह मुतवज्जह होता है जिस तक आवाज़ कम पहुँच रही है। असल चीज़ की तरफ़ वे लागे मुतवज्जह होंगे, इसलिये कि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात देखकर अन्दाज़ा यह हुआ कि वे मजमे को अपनी सतह पर लाने की कोशिश में थे।

न कि मजमे की सतह पर उतरने के लिये कि मजमे की सतह पर उतर जाओ कि यह मजमा काम को खेल बना ले। जिस चीज की तरफ़ उम्मत को

लाना है अगर उस चीज़ की तरफ़ दावत न दी जायेगी तो उम्मत के अन्दर की सलाहियतें होते हुए भी बर्बाद हो ज़ायेंगी और ख़त्म हो जायेंगी। हमारे .यहाँ इसरार नहीं है तर्ग़ीब है। लेकिन तर्ग़ीब उस आला सतह की है। जहाँ हमें पहुँचना है। और गुंजाइशें और सहूलतें ये दूसरों के लिये।

इनसे कहा "कूला लहू क़ौलन लय्यिनन" यह दूसरों के लिये।"

वला तनिया फ़ी ज़िक्री" जो काम को लेकर चल रहे मूसा और हारून अ़लै० इनके लिये "वला तनिया फ़ी ज़िक्री इन्नी मअ़कुम" कि बहुत सख़्त बात है यह कि मैं तुम्हें देख रहा और सुन रहा हूँ कि तुम ज़रा भी ग़फ़्लत न करना मेरी याद में। और सहूलतें तो वे दूसरों के लिये हैं।

मेरे दोस्तो दूसरों के लिये सहूलतों का मतलब यह है कि जब कोई तबक़ा उठकर काम की तरफ़ आवे। तो आप उस तबक़े के लिये काम को आसान करें और जब वे काम पर आ जावे तो आप उसे काम की असल सतह बतावें। यह नहीं कि हम सब मिलकर काम की एक सतह तय कर लें, और उसी की दावत हो उसी की मेहनत हो और अ़वाम और ख़्वास आकर एक सतह पर रूक जायें यह नुक़्सान का रास्ता है। यह रास्ता हमारे नुक़्सान का रास्ता है। हमारी दावत का तक़ाज़ा यह है कि नबी अपनी सतह से दावत देते हैं। और मदऊ़ अपनी सतह से अ़मल करता है। तो बात की सतह बहुत ऊँची होगी और अ़मल की सतह हस्बे

इस्तिदाद होगी। अ़मेली सतह होगी हस्बे इस्तिदाद और मुतालबा होगा बहुत ऊंचा। जैसे ताजिर का मुतालबा बहुत ऊँचा और ग्राहक की सतह बहुत नीची। वह उसके माल को अपनी सतह से ख़र्च कराना चाहता है ताजिर, इसमें ताजिर की कामयाबी है। इसी तरह हम इस बात पर ग़ौर करें कि हम अपने मज्मे को किस सतह पर ले कर चल रहे हैं। एक तो इस बात की मेरे दोस्तो कमी महसूस होती है कि हमारा उ़मूमी मजमा इस काम को नुबुव्वत वाला काम यक़ीन करके नहीं चल रहा। देखो मैं यह इसलिये अ़र्ज़ कर रहा हुँ कि हमारी हर मज्लिस में यह बात ज़रूर आनी चाहिए कि यह अम्बिया अ़लै० वाला काम है जो नबियों से नबियों में मुन्तक़िल होते-होते जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० तक और आपसे इस उम्मत के ज़िम्मे किया गया है। ताकि उम्मत इस काम में अपनी ज़िम्मेदारी के शऊ़र से चले, यह नहीं कि लोग चल रहे हैं तो हम भी चल रहे हैं। कि क्या वजह है आप हज़रात के क़ुरबानी देने की?

क्या वजह है अ़वाम को इस मेहनत पर लाने की?

और क्या वजह है कि इस पर इस्तिक़ामत हो?

क्या बसीरत हो अ़वाम को? एक साहब ने बयान किया यहाँ (बंगले वाली मस्जिद में) हज़रत के ज़माने में और जब तश्कील की मजमा खड़ा हो गया कि हम तैयार हैं। बयान बहुत ज़ोरदार, हज़रत ने उनसे पूछा कि क्या किया तूने उन्होंने कहा हज़रत इनको जमाअ़त में निकालना ही तो है, तो निकाल दिया सब तैयार हैं जाने के लिये तो हज़रत ने उनसे फ़रमाया कि तू

बहक गया वह मज्मा काम पर क़ायम रहेगा जो मजमा ख़ुद काम को काम समझकर कर उठा है। वरना मेरे दोस्तो गुज़रगाह है। मैं सच्ची अर्ज़ करूँ जब मैं किसी सूबे वालों से पूछता हूँ कि सालाना चार माह देने वाले कितने हैं कहते हैं कि नहीं हैं। हर साल चार माह देने वाले नहीं हैं। अगर निकलने वालों की तादाद देखेंगे तो उससे 5 गुना ज़्यादा होगी और काम में चलने वाले कम। क्योंकि हम निकलने वालों की तादाद से घर की तालीम का मस्जिद की तालीम का मश्वरों का मस्जिद के पाँच कामों का अन्दाज़ा इससे लेते हैं। कि इतना बड़ा मजमा निकला तो वह कहाँ गया। तो एक तो अपने मजमे को नुबुव्वत वाली बुनियाद पर उठाना और एक अपने मजमे को सिर्फ़ निकालना। कि नहीं मजमा किस बुनियाद पर उठा है, कि यह आदमी तब्लीग़ में जाने के लिये नाम क्यों लिखवा रहा है। क्या मक़सद है इसका तब्लीग़ में जाने का।

मैं तो ख़ुद लोगों के बयान सुन रहा हूँ उससे अन्दाज़ा यह हो रहा है कि हम अपने मजमे को दुनियावी हालात और परेशानियों से निकालने के लिये तब्लीग़ में भेज रहें।

मेरे दोस्तो! तो दुनिया का लालच देकर इस्लाम में ग़ैरों 'को लाया जाता है। अपनों को नहीं। हुज़ूर सल्ल०ने सहाबा को उठाया उख़रवी वादों पर और ग़ैरों को उठाया दुनियावी वादों पर।

इसलिए हज़रत मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० के बयानात हर वक़्त हम अपने ज़हन में रखें। इसकी

आप हज़रात कोशिश फ़रमावें ताकि हमारी बात हमारी सतह से नीचे न उतरे और हमारी बात हमारे मौजू से न हटे। इस वक़्त इस चीज़ की शदीद ज़रूरत है। देखो कुर्बानियों की सतह तो हमारी बात की सतह से क़ायम होगी। दोस्तो! कुर्बानियों की जो सतह क़ायम होगी, अवाम की और ख़्वास की वह तो हमारी बात की सतह से क़ायम होगी, कि इस सतह की बात हो रही है मैं इस सतह पर पहुँच जाऊँ। लेकिन अगर काम को ले आये सहूलतों पर तब तो लोग आप से आकर मुतालबा करेंगे कि आप मुझे इजाज़त दे दीजिये कि मैं एक घंटा सुबह दे दिया करूँ और डेढ़ घंटा शाम को दे दिया करूँ यहाँ तक कि हम ख़ुद सोच में पड़ जायेंगे कि मस्जिद का काम इस तर्तीब पर कैसे आये कि हर आदमी हर काम करते हुए मस्जिद को वक़्त दे दिया करे। देखो हमें 8-8 घंटे की दावत ख़ूब जमकर देनी है। मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे। कि साल का चिल्ला महीने के 3 दिन हफ़्ते के दो गश्त और 2 तालीम यह तो ज़ाती ज़िन्दगी में दीन लाने के लिये है। अभी काम को लेकर चलने वाला तबक़ा वह बेचारा इसी पर अटका हुआ है जिसने सारे आलम की ज़िम्मेदारी का ऐलान किया हुआ है, वह इस पर अटका हुआ है। ये तो वे हैं जो मुतालबा कर रहे हैं दूसरों से। इस काम को आगे बढ़ाने की क्या शक्लें हैं और इसके क्या अस्बाब हैं? इसका सबसे बड़ा सबब यह है कि दावत देने वाला अपनी सतह पर रहकर दावत दे और मदऊ जितना पेश करे उसे कुबूल कर ले। यह

मिज़ाजे नुबुव्वत है इस काम में जैसे क़बीला-सक़ीफ़ वालों के साथ किया गया। और हम यह कर रहे हैं कि उसूल तो चलाते हैं नये लोगों पर और ख़ुद बेउसूलियाँ कर रहे हैं।

हालांकि कुरआन में यह है हुज़ूर सल्ल० को हिदायत कि "ला तुकल्लफ़ इल्ला नफ़सक व हर्रिज़िलमुअ्मिनीन" कि नबी जी अपने आपको तक्लीफ़ में डालिये और इनको तर्ग़ीब दीजिये तो आपकी तक्लीफ़ आपकी तर्ग़ीब को मुअस्सिर बनावेगी। तो आपने जिसको दावत दी पूरी दी।

इसलिए मेरे दोस्तो, कुर्बानियाँ हमेशा याद रखें मुल्को के तकाज़े वह तबक़ा पूरा करेगा जिनकी अपने यहाँ की कुर्बानियों की सतह बुलन्द होगी। हम आसानी की दावत हरगिज़ नहीं देंगे-हरगिज़ नहीं देंगे हरगिज़ नहीं देंगे" इस आसानी ने काम की सतह बिल्कुल गिरा दी। कि तुम आसानी की दावत दो। नहीं जब दावत पूरे की देंगे तो जो आसानी का मुतालबा करने आयेगा उसे इजाज़त दे देंगे जैसे क़बीला सक़ीफ़ वालों के साथ हुआ। तो दावत और इजाज़त में बहुत फ़र्क़ है कि दावत तो पूरी है कि नबी की दावत पूरी है। अम्र-ए-जामे का क्या मतलब जैसे जुमे की नमाज़ या जमाअ़त की नमाज़ जो लोग इस काम में लगे हुए हैं उनके लिये यह काम अम्र-ए-जामे होने का क्या मतलब।

हुज़ूर सल्ल० के यहाँ एक अमला था जो आपके साथ चिपका हुआ था। क्योंकि जब अमला अमीर के

साथ चिपका हुआ होगा तो तक़ाज़े पुरे होंगे। और अगर यह इजाज़तें ले लेकर जायेंगे तो इजाज़तों की मेहनत बहुत कमज़ोर होती है। ईमान वाले जब अम्र-ए जामे पर हों, तो इजाज़त के बग़ैर न जावें और जो इजाज़त ले कर जावें उनके लिये सब मिलकर इस्तिग़फ़ार करें। इस्तिग़फ़ार तो गुनाह होने पर किया जाता है। फिर ये तो इजाज़त लेकर जा रहे हैं इनके लिये इस्तिग़फ़ार क्यों? इसलिये कि जब यह काम अम्र-ए-जामे है, क्यों जा रहे हैं। उलमा सुनेंगे ना इस बात को तो कहेंगे कि क़िताल की आयत को यहाँ जोड़ दिया और सच्ची बात तो यह है कि क़िताल मौज़ू-ए-नुबुव्वत नहीं है। अगर क़िताल मौज़ू-ए-नुबुव्वत है नऊज़ुबिल्लाह तो इसका मतलब यह है कि, नबी जिनकी तरफ़ भेजे गये हैं उनको जहन्नम में पहुँचाने के लिये भेजे गये हैं। इस ज़माने में आमाल और क़िताल ही रह गये दावत दरमियान में से निकल गयी। अम्र-ए-जामे क़िताल नहीं है। अम्र-ए-जामे नबी के साथ जो जमाअत निकली है दीन सीखने और दीन सिखलाने के लिये गयी है यह दीन सीखने और दीन सिखलाने के लिये निकली है। अगर ज़रुरत पेश आजायेगी क़िताल की, तो क़िताल कर लेंगे, लेकिन जिसका दरजा जिज़्या के भी बाद है। इमाम बुख़ारी ने भी वे गज़्वात बुख़ारी में लिखे हैं ग़ज़्वात के बाब में जिस में जमाअत काम कर के चली आई बग़ैर क़िताल किये।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे। इसे तुम लोग ख़ुद ही पढ़ लीजियो 'सवानेह के ख़त में

"छपा हुआ है। उस में यूँ लिखा है कि उम्मत इस काम को अहमियत इस लिये नहीं दे रही है कि उम्मत इसे कलिमा, नमाज़ सही करने की तहरीक समझ रही है हालांकि इस काम का मक्सद, दावत से अपने कलिमा, नमाज़ में नूर पैदा करना मक्सूद है। यह हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के सवानहे में छपा हुआ है। कि अम्र-ए-जामे का मतलब यह है कि एक उम्मत ऐसी हो जिसका काम "बुराई से रोकना और भलाई का हुक्म देना हो" ये होंगे कामयाब।

तो यह अम्र-ए-जामे पर है। अम्र-ए-जामे से बग़ैर इजाज़त जाना तो बहुत नामुम्किन, इजाज़त ले कर जाने पर भी इस्तिग़फ़ार है। और आगे कुरआन में क्या है? कि जो अल्लाह की ज़ात का यक़ीन रखेंगे वे इजाज़त ले-लेकर नहीं जायेंगे। कि जिनका यक़ीन नहीं है अल्लाह के वादों पर इजाज़त ले-लेकर भागेंगे। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब तक तुम अपने घर से शादियों को और जनाज़ों को होता हुआ छोड़कर नहीं निकलोगे उस वक़्त तक तुम उम्मत को इस काम पर ला नहीं सकते। जो कुर्बानी देगा वह कुर्बानी की बात समझेगा। सहूलत वाले कुर्बानी की बात को नहीं समझेंगे। सहूलत वालों के तो इश्कालात होंगे। सहूलत वाले कुर्बानी की बातों को इशतिआल कहते हैं। मैं सच्ची अर्ज़ कर रहा हुँ आप हज़रात से। सुनकर कह रहा हुँ। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे इशतिआल और तर्गीब में फ़र्क़ यह है, कि इशतिआल फ़साद के लिये होता है और तरग़ीब इस्लाह

के लिये होती है।

"मैं ने एक साहब को मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० का एक बयान सुनाया। कहने लगे यह बयान तो किसी को नहीं सुनाना चाहिये, मैं ने पूछा क्यों? कहने लगे कि इस में तो अजीब बात है, तो मैं ने कहा कि इसी लिये तो सुना रहा हूँ। फिर अगर हम देखें मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात को तो वह बात हमारे बयानात में नहीं। हर एक अपनी-अपनी, मुझे तो हैरत इस पर है कि लोग मुतालआ कर-कर के बयानात कर रहे हैं। अख़्बारात तक में हमारे बयानात आ रहे हैं दिन पर दिन हम अपने मौज़ू से हटते ही जा रहे हैं।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गों, यह काम वज़ीफ़ा नहीं है, अगली बात यह कि यह काम अमल नहीं है और यह काम सवाब के लिये नहीं है। यह तो मौऊद है मक़्सूद नहीं है। मक़्सूद तो अल्लाह की रज़ा है और उस अल्लाह की रज़ा के लिये मेहनत है। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि हमें इस काम में अल्लाह के वादों की निय्यत नहीं करना है बल्कि अल्लाह के वादों का यकीम करना है। इस लिये कि काम में अल्लाह के वादों का यक़ीन करने वाला एहतिसाब पर है, और अल्लाह के वादों की निय्यत करने वाला अग़राज़ पर है। और एहतिसाब हर अमल के साथ लाज़िम है।

आप हज़रात वे हैं। जो अपने यहां काम को लेकर चल रहे हैं। मेरी दरख़्वास्त है कि आप हज़रात अपने

बयानात की सतह को बुलंद करें। आला ईमान आला कुर्बानियां "आमिनू कमा आमनन्नासु" कयामत तक के लिये ऐलान है कयामत तक आने वाले इनसानों के लिये कि ईमाने सहाबा ही मक्सूद है हम मजमे के लिहाज़ से न बोलें, हम तो अपने एतिबार से बोलें कुबूल करना अल्लाह के हाथ में है। "इन्न-क लतह्दी इला सिरातिल मुस्तकीम" नबी जी आप सीधे रास्ते की तरफ़ रहबरी करते हैं "इन्न-क ला तहदी मन अह्बब्-त" कि नबी जी आप हिदायत नहीं दे सकते जिसे चीहें तो हम अपनी दावत की सतह को बुलंद करें। और आला कुरबानियों की दावत दें। ताकि काम हमारा आगे बढ़े। चाहे वह मस्जिद का काम हो चाहे वह सूबों के तकाज़े हों और चाहे वे मुल्कों के तकाज़े हों। जितनी आला दावत होगी, उतनी ही सलाहियतें ठिकाने लगेंगी।

6 नम्बर मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के छपे हैं "अलफुर्कान" में, आप सब उसको देखें। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे, कि आप सल्ल० ने सहाबा पर दीन सिखलाने से ज्यादा मेहनत दीन की मेहनत सिखलाने पर की है। दावत दीन की बका का सबब है दावत यकीन की तब्दीली और माहौल का सबब है।

इसमें कोई शक नहीं कि बात जब उँची सतह की होगी तो मजमा ज़रा सा करवटें लेगा लेकिन देखो ज़हनी सतह सब की बराबर नहीं है हमारी बात आला सतह की होगी सब अपने अपने ज़हन की सतह से

उस बात को लेंगे। फिर हज़ार में बात करेंगे, तो आपको सौ आदमी मिलेंगे। हर दाना नहीं उगा करता, काश्तकार ने जितने दाने डाले सब ही उगें, ऐसा नही होता, हर दाना नहीं उगा करता आप तो अपने मजमे से उँची सतह की बात करेंगे, तो जो कुर्बानियों पर आवेंगे वे दुसरों के लाने का ज़रीया बनेंगे। इसलिये हमारी मसाजिद में जों मेहनत है इसकी भी सतह आगे बढ़े इसके लिए 8-8 घंटे की दावत ख़ूब जमकर दीजिये, हाँ यह तयशुदा चीज़ है। दाई घंटे कम से कम हैं। कोई ख़ुद अगर 5 मिनट भी देगा तो कुबूल कर लेंगे। देखो जितने चाहें हम मुज़ाकरे मस्जिद वार जमाअ़त के करलें और जितना चाहे हम इस्तिख़फ़ाफ़ करलें। कुर्बानी की सतह बढ़ाये बग़ैर यह अ़मल में नहीं आ सकती और दावत की सतह बढ़ाये बग़ैर यह कुर्बानी वुजूद में नहीं आ सकती।

मौलाना मुहम्मद इल्यास सा० रह० जो बात किसी फ़र्द से या किसी जमाअ़त से करते थे! उनसे फ़रमाते थे कि तुम इसी तरह दावत देना जैसे मैने तुम्हें दावत दी है। मेरे दोस्तो! एक तो है हमारा आप लोगों से बात करना, एक है हमारे अ़मले का बात करना फिर मेरा अ़मला जिसको दावत दे रहा हो आगे उस बात को चलावे तब तो बात आगे बढ़ेगी! यानी हम उम्मत को आमाल पर ला रहे हैं या दावत पर ला रहे हैं! मैं तो यह महसूस कर रहा हूँ कि हम अपनी सारी मेहनत से उम्मत को आमाल पर ला रहे हैं। नहीं उम्मत को दावत पर ले आओ अ़मल पर ख़ुद आ

जावेगी! जिसको अ़मल पर ले आये वह दावत पर न आवेगी जिसको दावत पर ले आये वह अ़मल पर आ जायेगी मौलाना मुहम्मद इल्यास सा० रह० फ़रमाते थे जब उम्मत से दावत निकली तो उम्मत में से दीन निकला। कि नबी आये दावत आयी दीन आया, नबी गये दावत गयी दीन गया। मैं सब देखता रहता हूँ, सुनता रहता हूँ। सारी तर्ग़ीब अ़मल की, अ़मल की अ़मल की। हैदराबाद वालों से मैं ने कहा कि अल्लाह के रास्ते में निकल कर एक नमाज़ पर 7 लाख गुना और 49 करोड़ गुना अज्र है।

मैं ने कहा हमारा मजमा यूँ समझ रहा है और अल्लाह माफ़ फ़रमाये बस हमारा पुराना मजमा भी यही समझ रहा है। कि इससे आमाल के फ़ज़ाइल बताये जा रहे हैं हालांकि इससे आमाल के फ़ज़ाइल नहीं बताये जा रहे हैं बल्कि इससे इस रास्ते के फ़ज़ाइल बताये जा रहे हैं। आप हज़रात मौलना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात देखें उनका मुतालआ़ हो ताकि हमारे बयानात की सतह बुलन्द हो। उँची-उँची दावत दो और उँचे-उँचे अज़ाइम कराओ।

अ़र्ज़ यह करना है कि कुर्बानियाँ बढ़ा लो सब कुछ बन जायेगा अल्लाह तआ़ला कमी-कोताही माफ़ कर देगा। लेकिन इसमें मेरे दोस्तो जो नागवारी पेश आवे बर्दाश्त कर लो और अपने आप को मुकल्लफ़ करो कि अपनी ज़ात को मुकल्लफ़ करेंगे हम। जो अपनी ज़ात को मुकल्लफ़ करेगा, अल्लाह पाक उसको नवाज़ेंगे। जो मेरे दोस्तो कुर्बानी में आगे बढ़ते हैं उन्हें

अल्लाह का कुर्ब मिलता है। जो कुर्बानी में पीछे होंगे वे कौम में पीछे कर दिये जावेंगे।

और ऐसे आज़ार पेश आवेंगे, जो इन्हें ख़ुद ही पीछे घसीट लेंगे। एसा भी नहीं कि कोई इन्हें पीछे करने के लिये हाथ लगावे। ऐसे हालात ऐसे अस्बाब अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमावे, पेश आ जाते हैं कि आदमी उस में आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो जाता है। फ़रमाया कुर्बानियों में नागवारियों में जो गुज़रेगा इस रास्ते से, अल्लाह तआला उसे कुर्ब देंगे, नवाज़ेंगे उसे। तो इस रास्ते की नागवारी को बर्दाश्त करो और कुरबानी की सतह को बढ़ाओ। कुरबानी की सतह बढ़ाना किसे कहते हैं? यूँ कहें कि कुरबानी की सतह बढ़ाना उसे कहते हैं। कि हर काम करने वाला यह देखे, मैं किस सतह पर हूँ। मैं किस सतह पर चल रहा हुं। जो जिस सतह पर है, उस सतह से आगे वह बढ़ेगा, जिस की निगाह अपनी कोताहियों पर होगी, वह कुर्बानी में आगे बढ़ेगा। यह इस काम का उसूल है। जिसकी निगाह अपनी कुर्बानियों पर होगी, उस के अन्दर फ़ख्र पैदा होगा और फ़ख्र जो है, इसके अन्दर किब्र लावेगा फिर वह अपना मुक़ाम चाहेगा, इसलिये कभी अपनी कुर्बानियों पर निगाह ना रखो। बल्कि अपनी कोताहियों पर निगाह रखें, इससे इस्लाह भी होती रहेगी और तरक्क़ी भी होती रहेगी। तरबिय्यत भी और तरक्क़ी भी, कोताहियों पर निगाह रखने में, और कुरबानी पर निगाह रखने में तकब्बुर आवेगा। हम हर चीज अपनी ज़ात के लिये मुकल्लफ़ कर लें तो यह चीज़ हमें आगे बढ़ावेगी।

उसी आदमी की तर्ग़ीब मुअस्सिर होगी जो तक्लीफ़ उठावेगा। काम करने वालों का नागवारियाँ बर्दाश्त करना और तक्लीफ़ उठाना यह इनकी तरग़ीब को मुअस्सिर बनावेगा और अगर उसका उल्टा हो गया कि तक्लीफ़ दुसरों के लिये तो हमारी बात में तासीर नहीं रहेगी। मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! हमें अब अपनी कुर्बानियों को बढ़ाना है। देखो दो बार बच्चे की पिटाई होती है एक स्कूल में वहाँ स्कूल-में मास्टर मारेंगे कि स्कूल देर में क्यों आये, और घर पर अब्बा मारेंगे की इत्नी देर हो गई स्कूल क्यों नहीं गये। तो मेरे दोस्तो एक कुरबानी है इस काम में आने के लिये, और एक कुरबानी है घर से निकलने की, अब तक़ाज़े मुलकों के हैं। उस के इरादे करो निय्यतें करो, यह साल का चिल्ला महीने के तीन दिन हफ्ते के दो गश्त रोज़ के कम से कम ढाई घंटे इसको तो मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि यह तो अपनी ज़ाती ज़िंदगी में दीन लाने के लिए है।

मेरा तो आज यह जी चाह रहा था कि आप हज़रात को मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ स० रह० के सिर्फ़ 6 नम्बर सुनाता जो अलफ़ुरक़ान में छपे हुये हैं, लेकिन आप हज़रात से दरख़्वास्त यह है कि अलफ़ुरक़ान में मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० की जो हिदायतें छपी हुई हैं, हज़रत जी नम्बर सन 1965 का है, उसे आप हज़रात बार-बार, बार-बार पढ़ें। मैं साफ़ बात अर्ज़ करूँ आप से, उसमें आपको यह मिलेगा, कि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह०, ने गश्त का उन्वान नमाज़ को नहीं

क़रार दिया बल्कि गश्त का उन्वान दावत को क़रार दिया है। फिर इबादत को भी गश्त का उन्वान नहीं क़रार दिया, गश्त का उन्वान उस में साफ़ आप देखेंगे कि गश्त का उन्वान दावत को क़रार दिया, और यूँ फ़रमाया अगर ज़रुरत महसूस करो तो नमाज़ को बहाना बना लो, क्योंकि नमाज़ का मुसलमान इन्कार नहीं करेगा, इसे पढ़ो। अलफ़ुरक़ान में छपा हुआ है। मैं ने तो बाक़ायदा लखनऊ ख़त लिखकर मंगवाया है वह आप हज़रात के पास होना चाहिये, उसमें बहुत हिदायात हैं, और बहुत वाज़ेह हिदायती ख़त है, जमाअतों के नाम उस में जो हिदायात देखोगे तो काम आसान होगा, और अगर सवालात उठाओगें तो सवाल का दीन बहुत मुश्किल होता है, सहाबा फ़रमाते हैं, कि हमें हुज़ूर सल्ल० ने कस्रते सवाल से रोका है। ये सवाल काम को मुश्किल बनावेंगे, मस्जिद वार जमाअत का मुज़ाकरा यह इतना आसान काम है, लेकिन यह काम आसान तब है जब इस के लिये वक़्त फ़ारिग़ हो। अब दावत की ज़िम्मेदारी को समझो और क़ुरबानियाँ बढ़ाओ, हर साल चार-चार महीने की निय्यतें करो।

कलिमे की
दावत
भाग 2
मौलाना मुहम्मद सअ़द कांधलवी

कलिमे की दावत

भाग-2

हज़रत मौलाना सअ़द साहिब कांधलवी

मुरत्तिबः मौलाना मुहम्मद इलियास क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	कलिमे की दावत भाग-2
तक़रीरें	हज़रत मौलाना सअ़द साहिब कांधलवी
मुरत्तिब	मुहम्मद इलियास क़ासमी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	जून 2003
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

मज़ामीन की फ़ेहरिस्त

अपनी बात

मोहतरम अज़ीज़ो! यह किताब **"कलिमे की दावत"** जो अल्लाह पाक के करम व फ़ज़्ल से आपके हाथों में पहुँची है, इस किताब को आप पढ़ना शुरू करें इससे पहले मैं आप से चन्द बातें अर्ज़ करना ज़रूरी समझता हूँ।

1. जितनी भी बातें किताब में दर्ज हैं वे सारी बातें आप हज़रात खुद अपने कानों से हज़रत मौलाना सअ़द साहिब की ज़बानी सुन सकते हैं। बस उसके लिए आपको नीचे लिखी तीन जगह के बयानों की "ऑडियो कैसिट" को अपने टेपरिकार्डर पर लगाना पड़ेगा। वे कैसिट इस नाम की हैं:

तारीख़ 22 अप्रैल 2000 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)
तारीख़ 23. अप्रैल 2000 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)
तारीख़ 16. नवम्बर 1998 ई.

ये कैसिट "बस्ती निज़ामुद्दीन में दुकान नम्बर **231**, इस्लामी कैसिट सैन्टर, नई दिल्ली **110013** से हासिल की जा सकती हैं। हाँ कुछ मुश्किल अल्फ़ाज़ों का आसान ज़बान में अनुवाद ज़रूर किया गया है।

2. इस किताब के छपवाने का मक़सद सिर्फ़ यह है कि जिस तरह से हज़रत मौलाना सअ़द साहिब ने कलिमे की दावत दी है, उसी तरह दावत पूरी दुनिया में ज़िन्दा हो जाए। यह किताब सिर्फ़ जान लेने और बयान करने के लिए हरगिज़ नहीं है।

3. हर दावत का काम करने वाले साथी अपने पास मौलाना यूसुफ़ साहिब की **1965** ई. में वफ़ात के बाद "अल-फ़ुरक़ान प्रेस लखनऊ" का छपा **"हज़रत-जी नम्बर"** यानी **"तज़किरा मौलाना यूसुफ़ साहिब"** के नाम की किताब ज़रूर रखें, इसकी मौलाना सअ़द साहिब ने हिदायत दी है। उससे हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहिब के छह नम्बर देखें।

4. आख़िरी बात यह कि इस वक़्त अल्लाह ने जिसे पूरी दुनिया की ज़िम्मेदारी इस काम की दी हुई है, वह इस वक़्त हम सबसे क्या कह रहे हैं और क्या चाह रहे हैं, हम सब बस वही करें, उनकी बात का मान लेना ही सबके लिए ख़ैर की बात है। इस बात को समझने के लिए अगले पेज में हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का बताया हुआ **"एक अहम उसूल"** दर्ज है, उसे देखें। फ़क़्त वस्सलाम

मुहम्मद इलियास क़ासमी
तारीख़ **16.6.2002**

एक अहम उसूल

एक बयान में हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी साहिब ने बंगले वाली मस्जिद की एक कारगुज़ारी सुनाते हुए फ़रमाया कि विदेश के कुछ ज़िम्मेदार साथी एक बार हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से एक बात पूछने के लिए यहाँ दिल्ली में आए।

हज़रत जी की तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए वह आराम कर रहे थे, तो हमने उन ज़िम्मेदारों से मुलाक़ात की। उन ज़िम्मेदारों में से एक जमाअ़त ने हम से कहा कि भाई हमारे मुल्क में जमाअ़तें जो आती हैं तो कोई जमाअ़त बताती है कि काम यूँ करो और कोई कहता है कि नहीं ऐसे करो? तो हम सारे लोग परेशान हैं कि किसकी बात मानें और काम कैसे करें? हर एक हवाला देता है बड़ों का। कोई कहता है कि मैंने ख़ुद बड़े हज़रत जी (मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि) से यूँ सुना है। कोई कहता है कि मैंने बड़े हज़रत जी से यूँ सुना है, कोई कहता है कि मैंने मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से यह कहते सुना, कोई कहता है कि मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने जिससे कहा मैंने उससे सुना है।

अब हम सारे परेशान हैं कि क्या करें और किस तरह काम करें, क्योंकि हर एक बड़ों का हवाला देता है, हम लोग तो हज़रत जी से सिर्फ़ यही मश्विरा करने के लिए आए हैं कि हज़रत हम लोगों को बताएँ कि ऐसे मौक़े पर हम क्या करें? क्योंकि सारे लोग अलग-अलग बात बतलाते हैं। तो मैंने उनसे कहा, भाई देखो! हमारी समझ में तो यूँ आ रहा है कि बड़ों ने जो बात कही उसका मतलब वह होगा जो उस वक़्त का अमीर बताए। उस वक़्त का अमीर जो बताए वह उस बात का मतलब हमें समझना चाहिए। सुना आप सब ने भी, (मजमे से मुख़ातिब होकर कहा) कि अमीरुल-वक़्त (यानी जो जमाअ़त का मौजूदा अमीर है वह) जो बताए उसपर सबको जमना चाहिए। इसपर मिसाल हमने उन्हें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाली दी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पर्दा फ़रमाने पर चारों तरफ़ से हंगामे खड़े हो गए। अब सबकी राये यह हैं कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लश्कर मुल्क शाम भेजने के बजाय मदीना मुनव्वरा में ठहराया जाए क्योंकि चारों तरफ़ से हमले की ख़बर है। तो उसपर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सारे सहाबा के ज़ेहन के अन्दर यह बात डाली कि यह तीन हज़ार की जमाअ़त क्या करेगी

जब अल्लाह की मदद ही रुक जाए। अल्लाह की मदद जब आएगी जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात पूरी हो कि "उसामा के लश्कर को रवाना करो"। हाँ! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा था "उसामा के लश्कर को रवाना करो"। सुना तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से सब सहाबा ने, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यह सुना और दूसरे सहाबा ने भी सुना, लेकिन औरों ने इसका मतलब क्या समझा और अबू बक्र सिद्दीक़ ने इसका मतलब क्या समझा। औरों ने सिर्फ़ इतना समझा कि उसामा के लश्कर को रवाना करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है, और अमीरुल-वक़्त ने हज़रत उसामा के लश्कर के अलावा पूरे मदीना मुनव्वरा के मुसलमानों को निकलने के लिए कह दिया कि सब मदीना ख़ाली करो। यह अबू बक्र सिद्दीक़ ने समझा, इसपर सब लोगों ने लब्बैक कहकर मान लिया। तो हमने उन लोगों से कहा कि यह उसूल क़ियामत तक रहेगा कि जो बात अमीरुल-वक़्त कह दे वह सबको मान लेने में ही ख़ैर है। उसके अन्दर किसी क़िस्म का फ़र्क़ नहीं करना चाहिए। तो मैंने उनसे कहा कि इतनी बात तो मेरी आप से हो गई अब हज़रत जी जब उठेंगे तब उनके पास चलेंगे। हज़रत जी नींद से जागे, उन सबको लेकर हम हज़रत जी के पास हाज़िर हुए और जो बात हमने उन लोगों से कही थी वह बात हमने हज़रत जी के सामने रख दी कि ये लोग कह रहे हैं कि अगर लोग अलग-अलग बात बताएँ तो हम क्या करें? तो हमने उनसे यह कहा कि जो बात अमीरुल-वक़्त (यानी उस वक़्त का मौजूदा अमीर) कहे या बताए वह उनको करना चाहिए। तो हज़रत जी ने फ़रमाया! कि हाँ यह मुनासिब है। उसके बाद फिर वे लोग अपने मुल्क वापस चले गए। तो मेरे मोहतरम दोस्तो बुज़ुर्गो। रायें अलग-अलग होना कोई हर्ज की बात नहीं है, रायें अलग-अलग हो सकती हैं, पर अमीरुल-वक़्त (यानी जो जमाअत का उस वक़्त का अमीर है, वह) जो बात कहे बस उसी बात को मान लेने में ही ख़ैर है।

मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि
के बयान का एक हिस्सा

इस बयान की टेपरिकार्डर कैसिट सुरिक्षत हैं।

मुहम्मद इलियास

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अव्वल तो इन फ़ज़ाइल के ज़रिये हमें अपने यक़ीनों को बदलना है।

तारीख़ 22 अप्रैल 2002 स्थान अमरोहा (उ. प्र.)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा-ए-किराम को अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर उठाया है। ये फ़ज़ाईल ख़ुद अल्लाह के वायदे हैं, जितने फ़ज़ाईल हैं आमाल के, उन फ़ज़ाईल का ताल्लुक़ एहतिसाब से है, कि इसका यक़ीन पैदा हो कि अल्लाह यह चीज़ देंगे। ये फ़ज़ाईल एहतिसाब हैं। हमारे इन तालीम के हल्क़ों की हैसियत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद का वह अमल है जो सहाबा-ए-किराम के यक़ीनों को बदलने के लिए और उनको ग़ैब की चीज़ों पर लाने के लिए किया जाता था। सिर्फ़ इतनी बात नहीं कि इन फ़ज़ाईल के हल्क़ों से अमल का शौक़ पैदा कर देना मक़सूद हो। असल में जो बात है तो यह है कि इन फ़ज़ाईल से अपने आमाल को तरक़्क़ी देना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए। मस्जिद में दो हल्के लगे हुए थे- एक ज़िक्र का और एक तालीम का, आपने देखकर फ़रमाया कि दोनों ख़ैर पर हैं, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तालीम के हल्के में बैठकर फ़रमाया **"इन्नमा बुअिस्तु मुअल्लिमन्"** (यानी मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है) यह मुअल्लिमन् का क्या मतलब है? मुअल्लिमन् का मतलब है **"हमने ईमान को सीखा"**। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो फ़ज़ाईल सहाबा को सुना रहे थे वह यक़ीन को सिखलाने के लिए सुना रहे थे, मालूमात बढ़ाने के लिए नहीं सुना रहे थे।

इसी लिए मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि इस तालीम का मौज़ू (यानी मकसद और ग़र्ज़) न मालूमात को बढ़ाना है न अपनी

मालूमात पर एतिमाद है, बल्कि तालीम के हल्क़ों से एहतिसाब बढ़ाना है कि अल्लाह हमें इसपर क्या देने वाले हैं? फ़ज़ाईल असल में आमाल को तरक़्क़ी देने के लिए हैं, यह सिर्फ़ अ़मल तक पहुँचने का ज़रिया नहीं हैं।

इस वक़्त जो बात आ़म लोगों के ज़ेहन में है वह यह कि फ़ज़ाईल की तालीम से बरकतें आएँगी, रहमतें आएँगी, इसलिए फ़ज़ाईल की तालीम हो जाये। या यह कि इन फ़ज़ाईल के सुनने से अ़मल का शौक़ पैदा हो जाए, इसलिए तालीम कर ली जाए। इस सतह (स्तर) पर बात आकर ठहरी हुई है, लेकिन क्या इसका यक़ीन है कि जो कुछ फ़ज़ाईल में सुनाया जा रहा है वह होगा। यह फ़ज़ाईल की तालीम एहतिसाब को बढ़ाने के लिए है, अ़मल पर आना इस फ़ज़ाईल की तालीम के पहले दिन का नतीजा है, कि फ़ज़ाईल सुने और अ़मल पर आ गया। असल फ़ज़ाईल के ज़रिये से उन आमाल पर यक़ीन का लाना है।

इसलिए मेरे दोस्तो! दुनिया में जितने भी असबाब (यानी साधन) हैं, हमेशा आमाल का टकराव उन असबाब से होगा। और देखा यह जाएगा कि कामयाबी आमाल से ले रहे हैं या असबाब से ले रहे हैं। अपने अन्दर इसकी क़ाबलियत पैदा करने के लिये फ़ज़ाईल हैं, फ़ज़ाईल ही अल्लाह के वायदे हैं, अपने अन्दर इसकी इस्तेदाद (क़ाबलियत) पैदा करना कि जितने भी शक्लों की लाईन के असबाब हैं आमाल की लाईन यानी 'अवामिर' (जिन चीज़ों के करने का शरीअ़त में हुक्म है) की लाईन के असबाब उनका मुक़ाबला कर रहे हैं, या नहीं कर रहे हैं। अगर आमाल की लाईन के असबाब शक्लों की लाईन के असबाब से मुक़ाबला कर रहे हैं तब कहेंगे कि फ़ज़ाईल का मक़सद पूरा हो रहा है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो वायदा अल्लाह की तरफ़ से कर रहे हैं, सहाबा-ए-किराम से अल्लाह के उन वायदों के मुज़ाकरे करवा रहे हैं, आमाल की फ़ज़ीलत यानी इस अ़मल पर अल्लाह का यह वायदा है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस तरह यह सिखला रहे हैं यक़ीन, ईमान, फ़ज़ाईल के मुज़ाकरों के हल्क़ों से। असल में इस वक़्त तालीम के साथ मुज़ाकरा ख़त्म हो गया। क्या हुआ कि सिर्फ़ किताब पढ़ लेने का नाम हमने तालीम रखा हुआ है, उसके बाद क़ुरआन के हल्क़े हो गए, उसके बाद छह नम्बर का मुज़ाकरा।

देखो मेरे दोस्तो! एक होता है किसी काम के करने का तरीक़ा, कि भाई तालीम का तरीक़ा यह है। इस तालीम के तीन हिस्से हैं- तालीम, क़ुरआन के

हल्के और फ़ज़ाईल के मुज़ाकरे। यह एक अ़मल हुआ, यानी एक अ़मल के तीन हिस्से हुए। लेकिन मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि इस फ़ज़ाईल की तालीम से यह चाहा जा रहा है कि इस तालीम की मश्क़ से उम्मत का यक़ीन असबाब से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर जाए।

रहमतें, बरकतें, इसपर मसाईल का हल होना, इसमें अनवारात, ये तमाम की तमाम चीज़ें, इसमें कोई शक नहीं कि बड़ी-बड़ी नेमतें हैं, बड़ी चीज़ें हैं, लेकिन यह सब-के-सब उसके साथ वायदा की हुई हैं, उसके साथ मिलने वाली हैं, ये उसके असरात हैं, उसके मक़ासिद (उद्देश्य) नहीं। मक़ासिद और होते हैं, असरात और होते हैं। मक़सद फ़ज़ाईल का यह है कि जो तालीम अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये से उम्मत को दे रहे हैं, इनसान को दे रहे हैं, वह यक़ीनी है, कामयाबी के लिए उन असबाब के मुक़ाबले में जो असबाब अल्लाह ने दुनिया में बनाकर दिए हैं, यह असल में तालीम का मक़सद है।

हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक बात को तीन-तीन बार फ़रमाते थे कि आदमी एक बार उस बात की तरफ़ मुतवज्जह होगा, दूसरी बार उसको सुनेगा और तीसरी बार उसको समझेगा। हम बार-बार यह अ़र्ज़ करते हैं कि बरकत के लिए हदीस का पढ़ लेना या सिर्फ़ मालूमात को बढ़ाने के लिए हदीस का पढ़ लेना या सिर्फ़ मामूल की वजह से हदीस का पढ़ लेना, मेरे दोस्तो बरकतों का और मामूलात का, ये सारी चीज़ें वे हुआ करती हैं जिससे असल मक़सद हासिल नहीं हुआ करता। मामूल वाला तो आ़दी होता है, कि आ़दत की तालीम, आ़दत का बयान, आ़दत का गश्त, इससे क्या मक़सूद है? अगर वह चीज़ सामने न हो तो मामूल वाली चीज़ चलती रहती है और उससे जिस फ़ायदे और मक़ासिद को हासिल करना चाहते हैं जब वे सामने नहीं होते तो उस अ़मल का हल्कापन आ जाता है, कि आओ चलो थोड़ी देर तालीम कर लो, और पाँच मिनट और दस मिनट की, जो तालीम हमारी मस्जिदों में रस्मी तौर पर हो रही है, बात यह है कि हमारे सामने सिर्फ़ तालीम की किताब पढ़ लेना है। असल में तालीम कराने वाले की अपने अन्दर की कोशिश यह हो कि मेरा अपना और सब सुनने वालों का यक़ीन तमाम शक्लों से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर जाए। उसके लिए तालीम हो रही है। अभी हमारे दरमियान सिर्फ़ इतनी बात है कि भाई हम तालीम से सिर्फ़ अ़मल पर पड़ जायें, नहीं! मैं तो उनकी बात कर रहा हूँ जो

अ़मल पर पड़े हुए हैं, जो अ़मल कर रहे हैं, क्या उनके यक़ीन असबाब से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर गए हैं, या अभी भी असबाब का बातिल यक़ीन दिलों में मौजूद है। ये फ़ज़ाईल तो मेरे दोस्तो आमाल की तरक़्क़ी के लिए हैं, फ़ज़ाईल यक़ीन की तब्दीली के लिए हैं।

एक तरफ़ ये असबाब आमाल और उनके साथ वायदे हैं, ये अम्बिया लेकर आए हैं, और दूसरी तरफ़ सारी दुनिया असबाब से भरी पड़ी है। यह माद्दी असबाब हैं, इन फ़ज़ाईल की तालीम के ज़रिये से अपने यक़ीनों को दुनिया की तमाम शक्लों और असबाब से अल्लाह की तरफ़ से आने वाले आमाल वाले असबाब की तरफ़ फेरना है।

अब इस तालीम का तरीक़ा क्या होगा? इस तालीम का तरीक़ा यह होगा, देखो! अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु बाज़ार में सिर्फ़ तालीम का ऐलान नहीं कर रहे हैं, जैसा कि हम लोग अपने तालीमी गश्तों में यूँ कहते हैं कि आओ तालीम हो रही है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि "अगर इन्फ़िरादी (यानी अलग-अलग) या इज्तिमाई (यानी सामूहिक) तालीम की, या अ़मल की दावत देने वाले के सामने उस अ़मल की हक़ीक़त नहीं है, तो ख़ुद दावत देने वाले को उससे फ़ायदा न होगा, और दूसरों पर यह दावत असर नहीं करेगी। जिस चीज़ की यह दावत दे रहा है उस चीज़ की ख़ुद उसके अन्दर क्या हैसियत है, उसके अपने सामने उसकी क्या हक़ीक़त है? सिर्फ़ इतनी कि तालीम का हल्क़ा हो रहा है चलो, या तालीम के हल्क़े की तरफ़ बुलाने वाले के सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विरासत है। हर काम करने वाले साथी को इसमें ग़ौर करना पड़ेगा और फ़र्क़ पैदा करना पड़ेगा। क्या कैफ़ियत है तालीम की तरफ़ बुलाने वाले की। इस वक़्त तो भाई तक़रीर की हैसियत तालीम से ज़्यादा हो ही गयी। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ तालीम की हैसियत तक़रीर से कहीं ज़्यादा थी। तालीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं, अगर हम उसका मतलब भी अदा कर रहे हैं तब भी हमारी ही ज़बान है। और अगर हम उसको समझ रहे हैं तब भी हमारी ही ज़बान है। लेकिन अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ऐलान कर रहे हैं बाज़ारों में, कि बाज़ार वालो तुम इतने निकम्मे हो गए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीरास तक़सीम हो रही है मस्जिद में, और तुम यहाँ हो, क्या तुम इतने

आ़जिज़ हो गए कि जाकर उसे ले नहीं सकते।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यह तालीमी गश्त है, जो हमारे यहाँ तालीमी गश्त होता है यही वह तालीमी गश्त है, क्योंकि अब तो हम तहक़ीक़ात में पड़ गए, अ़मल पर तो अब अल्लाह हमें डाले, कि यह कहाँ से है और यह कहाँ से है। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का तालीमी गश्त तालीम के वक़्त बाज़ार में गश्त करते हुए साबित है। फिर इतना ही नहीं कि तालीम की आवाज़ लगा दी और फ़ारिग़ हो गए, अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु बाज़ार में देख रहे हैं कि ये लोग वहाँ तालीम के हल्के में शामिल होते हैं या वापस आते हैं! लेकिन ये झाँककर वापस आ गए कि वहाँ तो कोई माल तक़सीम नहीं हो रहा है। फिर यह फ़रमाया कि नहीं! वही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विरासत है, जो तालीम का हल्क़ा मस्जिद में चल रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को आमाल के वायदों के यक़ीन पर उठाया था, हमारी तालीम का जो मक़सद है वह वही है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम का मक़सद था।

"इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्" यानी मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है। सिखलाने वाले का क्या मतलब है? कि सिखलाने वाला उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं होता जब तक सुनने वाला किसी दरजे तक न पहुँच जाए। उस्ताद शागिर्द को सिखलाने में, मालिक अपने मज़दूर को सिखलाने में उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं होता जब तक यह किसी दरजे में न पहुँच जाए।

देखो मेरे दोस्तो! इन फ़ज़ाईल का सुनना, ख़ास तरीक़े का सुनना है। यह नहीं कि पाँच मिनट, दस मिनट तालीम का हल्क़ा हो जाए फिर जिनको मालूमात हो गई इन हदीस की, वे यूँ कहें कि हमें मालूम है कि यह हदीस यूँ है, अब कहें और से पढ़ो। नहीं! मौलाना यूसुफ़ साहिब की हिदायत में साफ़ तौर से लिखा हुआ है कि सिर्फ़ याद कर लेना इस तालीम का मौज़ू नहीं है। यानी यह तालीम इसलिए नहीं रखी गयी है। इन हदीसों का बरकत के लिए सुन लेना यह तालीम का मौज़ू (मक़सद और उद्देश्य) नहीं है, बल्कि बार-बार सुनने और बार-बार सुनाने और तालीम के अ़लावा वक़्त में उन फ़ज़ाईल पर ग़ौर करने और जो मस्जिद में सुनकर आए हो उसे बाज़ारी और घरेलू और बाहर के शोबों के माहौल में उस तालीम को ले जाना और उसके यक़ीन की तरफ़ बुलाना, यह इस तालीम का मौज़ू है, कि हम जो तालीम मस्जिद में बैठकर सुन आए हैं, उस तालीम को अब मस्जिद से बाहर लेकर निकलेंगे।

असल में मक़सूद यह था। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जिस वक़्त जिस अ़मल के करने का वक़्त आए उस अ़मल से पहले फ़ज़ाईल की मश्क़ करो। हमारे फ़ज़ाईल के इल्म का ताल्लुक़ अगर अ़मल से नहीं जुड़ा, असल में इन दोनों के दरमियान में फ़ासिला है। तालीम, तालीम के वक़्त में हो रही है, अ़मल, अ़मल के वक़्त में रहा है। तालीम का अ़मल से जोड़ पैदा नहीं किया हुआ है। हज़रत फ़रमाते थे कि तालीम और अ़मल का जोड़ यह है कि जो फ़ज़ाईल तालीम में सुने हैं, उनको इतना सुना जाए और इतना सुनाया जाए कि अ़मल के वक़्त वे फ़ज़ाईल ज़ेहन में बैठ जायें ताकि उस अ़मल पर एहतिसाब आ जाए। वह अ़मल यक़ीन पर आ जाए कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त नमाज़ पर यह देने वाले हैं और पहली सफ़ पर यह देने वाले हैं, तकबीरे-ऊला पर यह देने वाले हैं, और मस्जिद की तरफ़ क़दम उठाने पर यह देने वाले हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! सबसे पहली बात यह है कि तालीम कराने वाला, उसके अन्दर का फ़िक्र सुनने वाले को यक़ीन पर लाना है। यह नहीं कि किताब जिसको पढ़नी आती है वह किताब पढ़कर सुना दे, नहीं बल्कि किताब पढ़ने वाला किताब पढ़ने से पहले यूँ सोचे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन फ़ज़ाईल के ज़रिये से अपनी उम्मत को असबाब के यक़ीन से हटाया है, मैं इन फ़ज़ाईल के ज़रिये से सुनने वालों और अपनी ज़ात को सबसे पहले असबाब के यक़ीन से हटाने के लिए यह तालीम करा रहा हूँ।

देखो यह तालीम चलती रहेगी, असबाब का यक़ीन रहेगा, यह फ़ज़ाईल की तालीम में बैठने वाले, जब उनकी दुनिया दावत के तक़ाज़ों या इबादत के तक़ाज़ों पर आएगी तब ये दावत के तक़ाज़ों या इबादत के तक़ाज़ों को छोड़ देंगे। इसलिए कि यक़ीन की तब्दीली पर नहीं जुड़े, सिर्फ़ तालीम को अ़मल क़रार दिया है। हम जो बात अ़र्ज़ कर रहे हैं ज़रा-सा ग़ौर करना पड़ेगा कि आया तालीम का मक़सद उम्मत को अ़मल पर लाना है? या तालीम का मक़सद और ग़रज़ उम्मत के यक़ीन को असबाब से हटाकर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के अहक़ाम पर लाना है?

यह तो आप हज़रात से साफ़ अ़र्ज़ कर दूँ कि आप सबको इसमें फ़र्क़ करना पड़ेगा। जितने नए-पुराने हैं उन सबको सोचना पड़ेगा कि तालीम अ़मल पर लाने के लिए है या तालीम यक़ीन की तब्दीली के लिए है। एक वे आम लोग हैं जो आकर आपकी तालीम में शरीक हो जाएँगे। हमारी मस्जिदवार

जमाअ़त के यक़ीन की तब्दीली के लिए यह मस्जिदवार जमाअ़त की अपनी तालीम है। अच्छी तरह सुन लें आप हज़रात यह बात कि तालीम मस्जिद की हरगिज़ मौहल्ले वालों के लिए नहीं है, यह तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की तालीम है। मस्जिदवार जमाअ़त मौहल्ले वालों को अपनी तालीम की दावत तो देगी लेकिन यह नहीं कि जब मौहल्ले वाले उठने लगें या मौहल्ले वाले यह तक़ाज़ा करें तो आप मौहल्ले वालों को देखकर तालीम ख़त्म कर दें।

मैं सच्ची बात अ़र्ज़ कर रहा हूँ कि हमारी तालीम मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि फ़ज़ाईल की तालीम डेढ़ घन्टा हो, कम-से-कम एक घन्टा, ज़्यादा-से-ज़्यादा डेढ़ घन्टा हो। मैं यह ग़ौर करने लगा कि हमारे साथी यूँ कहते हैं कि पाँच मिनट, दस मिनट या पन्द्रह मिनट से ज़्यादा बरदाश्त नहीं है। देखो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मस्जिद में अ़मल जारी है, तीन आदमी आए, रिवायत से साबित है। तीन आदमी आए एक आकर अ़मल में शरीक हुआ, एक खड़ा होकर देखता रहा और एक वापस चला गया। इस इस्तेदाद (यानी क़ाबलियत और सलाहियत) की इनसानों की तीन क़िस्में हमेशा रहेंगी, लेकिन मस्जिदे नबवी का अ़मल बाज़ार वालों के या बाहर वालों के ताबे होकर नहीं चला। तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की अपनी है, बाहर से हर क़ाबलियत के लोग आएँगे, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने की बात है।

वे भी आएँगे जो सिर्फ़ झाँककर चले जाएँगे, वे भी आएँगे जो खड़े होकर देखेंगे, वे भी आएँगे जो कुछ वक़्त के लिए बैठेंगे और वे भी आएँगे जो आख़िर तक बैठेंगे।

यह नहीं कि मस्जिदवार जमाअ़त की तालीम मौहल्ले वालों के ताबे हो जाए। हालाँकि तालीम को मस्जिदवार जमाअ़त अगर अपनी तालीम क़रार दे ले, और आने वालों से यूँ कहे कि तशरीफ़ रखें। अगर यह पाँच मिनट, तीन मिनट, या एक मिनट में उठकर जाता है तो उनसे यूँ कह दो कि हमारी तालीम अभी चलेगी, आप बैठना चाहें तो बैठें। इसका क्या मतलब कि मौहल्ले वाले उकता गए हैं, तालीम बन्द करो। यानी मैंने अच्छे-अच्छे काम करने वालों से सुना है कि उनसे पूछा गया, तालीम कितनी देर हो, तो उन्होंने कहा कि जितना मौहल्ले वालों में बरदाश्त और संयम हो। मैंने कहा भाई! यह क्या बात हुई? इसका मतलब यह है कि अब मस्जिद के दावत के आमाल बाज़ार वालों के ताबे होकर चलेंगे। नहीं! याद रखो कि तालीम कराने वाला, पहले तो यह

तय करे कि तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की है, हम इस तालीम की दावत देंगे, जो लोग तालीम में आकर शरीक होंगे वे जितनी देर बैठें- पाँच मिनट, दस मिनट, वे बैठें, हमारी अपनी तालीम है यह, मस्जिदवार जमाअ़त की, बेशक वह वक़्त तय करेंगे जिसमें ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग शरीक हो सकें, लेकिन तालीम का अ़मल हो रहा है मस्जिदवार जमाअ़त का, इसमें मौहल्ले वाले अपनी क़ाबलियत और सलाहियत के मुताबिक़ बैठेंगे, हम तवज्जोह दिलायेंगे, अगर बैठते हैं तो ठीक है, अगर वे उठकर जाते हैं तो हम उनसे यह कहेंगे, अच्छी बात है, हमारी तो तालीम अभी चलती रहेगी। अब तालीम कराने वाला एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़े।

देखो मेरे दोस्तो! तब तक उम्मत में फ़ज़ाईल का इल्म, नुबुव्वत वाला इल्म नुबुव्वत के तरीक़े से नहीं आएगा, नबुव्वत का तरीक़ा इल्म के उम्मत में आने का यह हो कि हमारी बात का अन्दाज़ ऐसा होना चाहिए कि जिसमें सवाल पैदा हो और सुनने वाले के अन्दर तलब पैदा हो जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सवाल खड़ा किया, इस तरह किया कि आपने पेड़ की एक टहनी हिलाई, पत्ते झड़े। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेकार कामों के लिए नहीं आए हैं। अब पत्ते गिरे तो कहा कि पूछते क्यों नहीं हो कि मैंने टहनी क्यों हिलाई, तो सहाबा ने पूछा, आपने टहनी क्यों हिलाई है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने टहनी इसलिए हिलाई है कि इससे मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि जब एक आदमी वुज़ू करता है इस तरह, वुज़ू करके इस तरह नमाज़ अदा करता है तो उसके गुनाह इस तरह झड़ा करते हैं। फिर सवाल खड़ा किया गया, **'ताबिई'** (ताबिई उसको कहते हैं जिसने नबी-ए-करीम के किसी सहाबी को देखा हो और उसकी ईमान की हालत पर मौत हुई हो) से सहाबी पूछ रहे हैं, अपने बाद वाले से, उन्होंने भी यही बात उनसे बतलाई जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाई थी। नुबुव्वत से उम्मत में इल्म के आने का एक रास्ता है, एक तरीक़ा है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि तालीम कराने वाला एक-एक हदीस को ठहर-ठहरकर पढ़े, हमें अपने आमाल में फ़ज़ाईल के इस्तेहज़ार से (यानी उन्हें अपने ज़ेहन में हाज़िर रखकर) हक़ीक़त पैदा करनी है। यह है असल में इन फ़ज़ाईल का मक़सद।

अब जो लोग तालीम के अन्दर बैठे हैं, तालीम के बाद उनसे इतना कह दो कि जो हदीस सुनी है बाहर जाकर उनके मुज़ाकरे करो। अभी तो हमारा

मजमा फ़ज़ाईल से गुज़र रहा है, हमारी अपनी तालीम में शिरकत करने वालों पर मेहनत नहीं है।

याद रखो मेरे दोस्तो! तालीम मेहनत नहीं है, उसके साथ अगर यह मुज़ाकरों की मश्क़ जोड़ी गई तब यह तालीम अ़मल बनेगी। अभी सिर्फ़ तालीम हो रही है, कि किताब पढ़कर सुना दी जाए। इसमें कोई शक नहीं कि रहमतें, बरकतें, अनवारात अपनी जगह हैं। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि बरकतें और इनामात और इसपर जो मुनाफ़े अल्लाह की तरफ़ से वायदा-शुदा हैं, वे मक़सूद नहीं हैं। असल तो मक़सूद अल्लाह को राज़ी करना है, बरकतें और इनामात यह तो अल्लाह की तरफ़ से वायदा किए हुए हैं, जो इसपर मिलेंगे, हम इसकी नीयत नहीं करते, हाँ हम इसका यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इस अ़मल के पूरा होने पर अ़ता फ़रमाएँगे।

इसलिए अ़र्ज़ यह है कि आप सब हज़रात तालीम कराने वाले और तालीम कराने वालों को हिदायत देने वाले, आप हज़रात ये चन्द बातें बिलकुल अच्छी तरह याद रखें कि अव्वल तो इन फ़ज़ाईल के ज़रिये हमें अपने यक़ीनों को बदलना है। असबाब से यक़ीन अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिरे, इसके लिए ये फ़ज़ाईल हैं।

देखो हुकूमत इसपर यह देगी, अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इस अ़मल पर यह देंगे, मुस्तक़िल इसका मुक़ाबला है। अब अपने यक़ीन को फ़ज़ाईल के ज़रिये मख़्लूक़ से ख़ालिक़ की तरफ़ फेरना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो भी अल्लाह की तरफ़ से वायदे लेकर आए हैं वही आमाल के फ़ज़ाईल हैं, एहतिसाब (यानी अपनी जाँच-पड़ताल और अपने आमाल का जायज़ा लेने) को बढ़ाने के लिए फ़ज़ाइल के मुज़ाकरे हैं।

इस तरतीब से इन्शा-अल्लाह जब तालीम कराई जाएगी तब कहीं जाकर तालीम के हल्क़ों से यक़ीन बनेगा और आमाल में फिर तरक़्क़ी होगी। अब एक हदीस को तीन-तीन बार ठहर-ठहरकर पढ़ो क्योंकि यह तालीम है, तालीम कहते हैं सिखलाने को, सुनने को तालीम नहीं कहते।

'इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्' मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है। सिखलाने वाला उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं हुआ करता जब तक सीखने वाला पूरी तरह से उस चीज़ को सीख न ले, कि उसको इत्मीनान हो जाए कि मैं जिसे सिखला रहा था उसने सीख लिया है। इसलिए अ़र्ज़ यह है कि एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़ो, इसमें जो फ़ायदा आएगा उसे एक बार पढ़ना है

सिर्फ़ हदीस तीन-तीन बार पढ़ो। यह नुबुव्वत का तरीक़ा है उम्मत को तालीम देने का, नबी का तरीक़ा उम्मत को सिखलाने का यह है।

फिर सहाबा किस तरह सुनते थे कि गोया सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि अदब और अज़मत और ध्यान और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह और वुज़ू के साथ बैठने की कोशिश, और टेक न लगाने की कोशिश, इस तरह जब तालीम के हल्के में बैठा जाएगा तब हदीस का नूर अन्दर आएगा। यह फ़ज़ाईल की तालीम है, इसमें इस तरह बैठे जिस तरह अर्ज़ किया गया है। आप हज़रात अपने यहाँ इस तरह से हिदायत दें तालीम की, ताकि तालीम का अमल मुकम्मल हो। इस तालीम के साथ मश्क़, हदीस को तीन-तीन बार पढ़ना, उसमें वुज़ू के साथ, अदब से, अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठना।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे, सिर्फ़ पढ़ना ही ज़िक्र नहीं है सुनना भी ज़िक्र है। जो शर्तें और कैफ़ियत ज़िक्र करने वाले की होनी चाहिए वही शर्तें और वही कैफ़ियत सुनने वाले की होनी चाहिए। जब हदीस पाक पढ़ी जाए उस वक़्त का ज़िक्र यह है कि ख़ामोश और चुप होकर सिर्फ़ सुना जाए।

وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हमारी सारी मेहनत की बुनियाद कलिमा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के यक़ीन पर उम्मत को लाना है।

तारीख़ 22 अप्रैल 2002 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो और अज़ीज़ो! यह कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत, यह अम्बिया के दुनिया में भेजे जाने का मक़सद है। हमारी सारी मेहनत कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** के यक़ीन पर उम्मत को लाना है। हर ज़माने में हर नबी ने काम किया है, काम की बुनियाद क्या है? जो असबाब क़ौमों के पास हैं अगर उन असबाब से कोई इख़्तिलाफ़ न हो तो अम्बिया की अपनी क़ौम से कोई लड़ाई नहीं है। लेकिन हर ज़माने में हर नबी की आवाज़ क़ौम की आवाज़ के ख़िलाफ़ रही है। हर ज़माने में हर नबी का कलिमा एक रहा है। कलिमाः **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** लेकिन किसी ज़माने के पेशे वालों की मेहनत से या उनके असबाब से कलिमे की कभी मुवाफ़क़त (यानी सहमति) नहीं हुई। अगर दावत देने वालों का कलिमा असबाब के मुवाफ़िक़ हो जाए तो फिर यह दावत वाली मेहनत नहीं है। नबियों का अपनी-अपनी क़ौमों के साथ और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस उम्मत के साथ मामला ही सारा कलिमे पर है। अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के असबाब और कायनाती नक़्शों से फ़ायदा उठाने के असबाब, ये दो चीज़ें बिलकुल मुक़ाबले की हैं। दोनों टक्कर की हैं। हमारी सारी मेहनत का ख़ुलासा यह जो कुछ हो रहा है: ये मुज़ाकरे, यह महीने के तीन दिन, यह गश्त, यह तालीम, यह मश्विरा, अगर मेरे दोस्तो! बात तो सख़्त है, क्योंकि बात यह है कि यह सारी मेहनत और कोशिश व जद्दोजहद अगर इस बुनियाद से हटी हुई है तो सरासर फ़ितना है, सरासर धोखा है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि अगर गश्तों में यक़ीनों की तब्दीली की मेहनत नहीं है, अगर गश्तों से यक़ीनों की तब्दीली की मेहनत और मक़सद नहीं है तो सरासर फ़ितना है। 'दाओ' (दीन की दावत देने वाले) के दावत देने की कोई बुनियाद नहीं सिवाय कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** के, कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** की दावत का

मतलब यह है कि जिस ज़माने में जिस क़िस्म के असबाब।

असबाब (साधन और ज़राये) दो क़िस्म के हैं- एक असबाब वे हैं जो अल्लाह ने बनाए हैं, जिसमें किसी मख़्लूक़ का हाथ नहीं लगा। एक असबाब वे हैं जिसमें मख़्लूक़ का हाथ लगा है: हरकत करने वाला और हरकत न करने वाला यानी अपनी जगह पर क़ायम।

दोनों क़िस्म के असबाब हैं। कुछ असबाब वे हैं जो सिर्फ़ अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ख़ुद बनाए, कुछ असबाब वे मिलेंगे जिसमें किसी दरजे में मख़्लूक़ का हाथ लग रहा है। अगर यह बात है कि उन असबाब का जो अल्लाह ने बनाए हैं, आसमान, चाँद, सूरज और वे असबाब जो अब बने हैं या आईन्दा बनेंगे, उनसे इस दरजे का इनकार नहीं जिस तरह से बुतों का है। जिस दरजे का इनकार इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बुतों का किया है, अगर इस दरजे का इनकार तमाम असबाब का नहीं, जो असबाब नये हैं या पुराने हैं, जो असबाब इनसान के हाथों से बने हैं या जो असबाब अल्लाह की बुलन्द ज़ात से बने हैं, अगर उन असबाब से इनकार एक तरह का नहीं है तो ख़ुदा की क़सम उस वक़्त तक ईमान कामिल नहीं होता।

असल में दावत क्यों दी जा रही है? उम्मत को इस तरफ़ क्यों बुलाया जा रहा है? दावत की मेहनत क्यों है?

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की बात की शुरुआत यह होती थी कि क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के असबाब और कायनात से फ़ायदा उठाने के असबाब। बात यह है कि आमाल पर अज्र और आमाल पर जमे रहना बग़ैर ईमान के बिलकुल मुम्किन नहीं है। न सिर्फ़ आमाल पर अज्र और आमाल पर साबित-क़दम रहना बल्कि नीयत की ख़राबी की वजह और अल्लाह के ग़ैर की नीयत होने की वजह जो बतलाई गई है, वह सिर्फ़ ईमान की कमज़ोरी बतलाई गयी है, कि ईमान की कमज़ोरी से नीयत अल्लाह के ग़ैर की हो जाती है। आ़लिम, सख़ी और शहीद, जिनको जहन्नम में सबसे पहले डाला जाएगा। ये सबसे बड़े-बड़े आमाल वाले हैं। ये सबसे बड़े-बड़े आमाल वाले सबसे पहले जहन्नम में डाले जाएँगे। जहन्नम दहकाई जाएगी उन्हीं से, ये जहन्नम की लकड़ियाँ हैं, ये जहन्नम के दहकाने का सामान हैं, ये बड़े-बड़े आमाल।

सिर्फ़ इसी वजह से मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि सिर्फ़ ईमान की कमज़ोरी से नीयत अल्लाह के ग़ैर की हो गई। इसलिए मेरे दोस्तो! सबसे पहली चीज़ और बुनियादी बात जो काम की बुनियाद है, काम

का मक़सद है, वह तमाम इनसानों के यक़ीनों को तमाम असबाब से और तमाम शक्लों से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फेरना, यह काम का मक़सद है, यही काम की बुनियाद है। आमाल उसका फल है, आमाल उसके परिणाम हैं। अगर यक़ीन की तब्दीली से मेहनत की बुनियादें हट गई हैं, अगर यक़ीन की तब्दीली सामने नहीं है और सिर्फ़ आमाल सामने हैं तो बात सख़्त है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि अगर यक़ीन की तब्दीली के साथ आमाल की मेहनत नहीं है और यक़ीन की तब्दीली पर आमाल का मेयार क़ायम नहीं किया जा रहा है, एहतिसाब पर, अज्र पर, अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर, और अल्लाह के तमाम अहकाम के अस्बाब के मुक़ाबले में दुनिया के तमाम असबाब को नाकारा क़रार यक़ीन करते हुए काम करने वाले नहीं चल रहे हैं, तो यह फ़रमाते थे कि ये बड़े-बड़े आमाल जहन्नम की बड़ी-बड़ी सज़ाओं का ज़रिया बनेंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो इस रिवायत को बयान करने में बेचैन हैं, वह अपने आमाल सामने रखकर बेचैन व परेशान हैं। सहाबा का ईमान नमूना है, उस ईमान पर ये आमाल करके इतना ख़ौफ़ है कि बार-बार की बेहोशी और बेचैनी और बेक़रारी।

हर नबी ने आकर सबसे पहले मेयार क़ायम किया है ईमान का। सहाबा खुद फ़रमाते हैं कि हमने ईमान सीखा क़ुरआन सीखने से पहले। ईमान किसको कहते हैं? ईमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ख़बरों को यक़ीनी मानना, ईमान का लुग़वी तर्जुमा है लुग़त में। ईमान किसे कहते हैं, किसी की ख़बर को ख़बर देने वाले के एतिमाद और भरोसे पर यक़ीनी बनाना।

"ला इला-ह इल्लल्लाहु" यानी अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकाम (जिनके करने का उसने हुक्म दिया है) और तमाम 'नवाही' (यानी जिन चीज़ों को न करने का हुक्म दिया है) को यक़ीनी मानना, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर, यह तर्जुमा हुआ **"ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि"** का।

जो कुछ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह की तरफ़ से लेकर आए हैं उस सबको आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, यह ईमान कहलाता है। अगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए को मूसा अ़लैहिस्सलाम के एतिमाद पर या इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के

एतिमाद पर यक़ीनी मान रहा है तब भी ईमान कामिल नहीं होगा। जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शरीअ़त है उसके हर हिस्से को, उसके हर हुक्म को, उसकी हर बात को, चाहे वह किसी शोबे से मुताल्लिक़ है, उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, तब ईमान कामिल होगा। इसलिए अ़र्ज़ यह है कि दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन को तरक़्क़ी देना है। यक़ीन को पैदा करना है। हमारे दावत देने का मक़सद यक़ीनों की तब्दीली है। अगर इस मेहनत से यह यक़ीन की तब्दीली वजूद में आ जाए तब आमाल का मेयार क़ायम होगा। इबादत का, मामलात का, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े का, अख़्लाक़ का, इन तमाम चीज़ों का मेयार ईमान पर क़ायम होगा।

इसलिए बात क्या है? बात यह है कि मुस्तक़िल लड़ाई होगी यक़ीनी असबाब और ग़ैर-यक़ीनी असबाब से। अल्लाह के अहकाम वाले असबाब और उसके मुक़ाबले में दुनियावी असबाब, माद्दी असबाब और आमाल की लाईन के असबाब, उनका हर वक़्त टकराव होगा, हर वक़्त मुक़ाबला होगा।

मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! यह सोचना कि अल्लाह ने ये असबाब बनाए हैं हमारे लिए, नहीं! बल्कि बात यह है कि असबाब इसलिए नहीं हैं कि हम यूँ कहें कि दुनिया असबाब की जगह है, इसलिए सबब इख़्तियार करो।

मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हम तो अपने ख़्वास को, अ़वाम को, पुरानों को और नयों को, सबको इस रुख़ की तरफ़ लाना चाहते हैं कि यक़ीनी अस़बाब अल्लाह के अहकाम हैं, ग़ैर-यक़ीनी असबाब दुनिया की सारी शक्लें हैं। अब अपने यक़ीनों को ग़ैर-यक़ीनी असबाब से यक़ीनी असबाब की तरफ़ फेरना है। हम यह कहते हैं कि दुनिया दारुल-असबाब (साधनों का घर) है कारख़ानों की हैसियत से, ज़मीनों के एतिबार से, हुकूमतों के एतिबार से, खेती-बाड़ी के एतिबार से, नौकरियों और मुलाज़मतों के एतिबार से, हथियारों और दवाओं के एतिबार से।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि बस नबियों की लड़ाई उनकी अपनी क़ौमों से यही थी कि अम्बिया क़ौमों से यूँ कहते थे कि दुनिया दारुल-अस्सबाब (असबाब और साधनों का स्थान) अल्लाह के अहकाम की हैसियत है अल्लाह पर ईमान लाने वालों लिए। और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों और शक्लों की हैसियत से है अल्लाह की ज़ात का इनकार करने वालों के लिए। अब बिलकुल साफ़ बटवारा हो जाएगा कि दुनिया दारुल-असबाब है लेकिन आमाल की हैसियत से है हमारे लिए। दुनिया

दारुल-असबाब आमाल की हैसियत से है और हम यह बोल रहे हैं कि दुनिया दारुल-असबाब ज़मीन की हैसियत से, नौकरी की हैसियत से, व्यापार की हैसियत से, कारख़ानों की हैसियत से, हुकूमतों की हैसियत से है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! हर नबी की दावत पर दुनिया के दारुल-असबाब होने के एतिबार से ही उनकी क़ौमों की तबाही व बरबादी हुई है। क़ौमे शुऐब तिजारत (व्यापार) में हलाक हुई है, बहैसियत तिजारत को दारुल-असबाब क़रार देने पर। नूह की क़ौम हलाक हुई है अक्सरियत (बहुसंख्या) को बुनियाद बनाने की वजह से। क़ौमे सबा नाकाम हुई है बाग़ात में, बाग़ों को असबाब बनाने की वजह से। क़ौमे सालेह नाकाम हुई हे कारख़ानों और कारीगरी को असबाब बनाने की वजह से।

बिलकुल अलग-अलग रास्ते हैं। अम्बिया अपने साथ अल्लाह के यहाँ से अल्लाह के अहकाम लेकर आते हैं, उनके साथ असबाब होते हैं अल्लाह के अहकाम की लाईन के। उनकी क़ौमों के साथ असबाब होते हैं दुनिया की शक्लों की लाईन के। अब उन दोनों असबाब का मुक़ाबला होता है। अम्बिया दावत के ज़रिये से उनके यक़ीन को उनके असबाब से अपने साथ लाए हुए असबाब की तरफ़ फेरना चाहते हैं, क़ौम अपने-अपने असबाब पर ज़िद करती है, कि हम अपने असबाब पर जमे हुए हैं, मुक़ाबला यहाँ से होता है। अगर अम्बिया की आवाज़ क़ौम की आवाज़ के मुवाफ़िक़ हो जाती तो किसी नबी का अपनी क़ौम के साथ कोई झगड़ा नहीं था।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हम दावत में चल रहे हैं असबाब से दोस्ती करके, इसलिए आमाल का वह मेयार क़ायम नहीं हो रहा है जो होना चाहिए। उम्मत सिर्फ़ आमाल पर आ जाए। सच कहता हूँ याद रखियो यह हमारी हद और आख़िरी दरजा नहीं है। हमारा मक़सद, हमारी मन्ज़िल, हमारा निशाना तो यह है कि हर उम्मती अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो अल्लाह के अहकाम लाए हैं, अपने यक़ीन को असबाब से उन अहकाम की तरफ़ फेर ले, यह हमारी मन्ज़िल है, यह हमारा काम है।

सिर्फ़ आमाल पर आ जाना एक दर्जा है। आमाल पर आ जाना, आमाल पर ले आना यह एक दर्जा है। असल मेहनत यक़ीन की तब्दीली की है, कि आया नमाज़ अ़मल में आई या यक़ीन में आई, हमारी जो मेहनत है दोस्तो बुज़ुर्गो! इस मेहनत की ख़ुसूसियत ही यही है कि हम उम्मत को आमाल के यक़ीन पर लाना चाहते हैं। अब आमाल वालों को भी दावत देंगे, यह नहीं कि

जो अ़मल पर आ गए उनसे हमारा काम पूरा हो गया, जो अ़मल पर नहीं आए उनपर हम मेहनत करेंगे, हमारी मेहनत आमाल के यक़ीन पर लाने की है। अब दावत का जो अपना ख़ास्सा है, यक़ीन की तब्दीली का, हर अ़मल करने वाला भी उसकी दावत देगा और हर अ़मल करने वाला उस दावत को सुनेगा, चाहे वह आदमी अ़मल करता हो या अ़मल न करता हो। हर एक दावत देने का मोहताज होगा, इसलिए कि दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, अ़मल पर आए यक़ीन पर न आए तो अ़मल पर जमे रहना नसीब न होगा। हमारी मेहनत का मक़सद दोस्तो, बुज़ुर्गो! सारे आ़लम के इनसानों को दुनिया की तमाम शक्लों से और असबाब से अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के अहकाम के असबाब होने की तरफ़ फेरना है। यह हमारी मेहनत का मक़सद है। अगर यह मक़सद हमारे सामने नहीं तो दावत देने वाले के दावत देने की इस्तिक़ामत (यानी अपने अ़मल पर जमे रहने) की कोई बुनियाद नहीं, कि किस बात पर दावत दे। असल में दावत ख़ुद दावत देने वाले के लिए है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जब दावत देने वाला एक चीज़ की दावत देनी शुरू करेगा तो उस दावत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी की तरफ़ बढ़ेगा, आप वाले तरीक़ों की तरफ़ बढ़ेगा। दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, दावत देने वाला अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है। दावत असल में यक़ीन की तब्दीली के लिए है, दावत पर जमने और साबित-क़दम रहने की जो वजह है अम्बिया हज़रात दावत में 'बसीरत' पर होते हैं, (यानी उनको अपने दावत देने और उसके मक़सद के बारे में कोई तरद्दुद नहीं होता बल्कि पूरा इत्मीनान होता है)। उनकी दावत यह नहीं कि जो बात सुने तो उसको सुनाए, जो न सुने उससे मुँह फेर लें। नहीं! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपसे पहले अम्बिया वे दावत में इतनी बसीरत पर होते थे कि रुकावटों और उनकी दावत का रद्द कर देना, उनकी बात का न सुनना, उनको दावत से पीछे न हटाता था, कि रुकावाट आ गई तो काम छोड़ दो, नहीं! काम करने वाले बसीरत पर हों कि मैं इस काम से कामयाबी यक़ीनी समझता हूँ, कि नबी दावत में बसीरत पर होते हैं, अब बसीरत पर कौन, मैं बसीरत पर और जो मेरा एतिबार करे वह बसीरत पर है।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِيْ

तर्जुमाः आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) अल्लाह (के एक होने) की तरफ़ बुलाता हूँ कि मैं दलील पर क़ायम हूँ। मैं भी और मेरे साथ वाले भी।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! काम करने वालों को भी काम के ज़रिये से अपने मसाईल के हल का यक़ीन नहीं। बात यह है कि हम अपने काम के साथ असबाब को जोड़कर चल रहे हैं, कि काम सर आँखों पर, बड़ा अच्छा काम है कि इससे लोग आमाल पर आ रहे हैं, तस्बीहात पर आ रहे हैं, ज़िक्र व तिलावत (कुरआन पाक पढ़ने) पर आ रहे हैं।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! सवाल इस बात का है कि ये आमाल की शक्लों पर आ रहे हैं या उनकी हक़ीक़त पर आ रहे हैं? एक आमाल की शक्ल है एक आमाल की हक़ीक़त है। शक्ल का शक्ल से जब मुक़ाबला होगा तो यह आमाल की शक्ल वाला नाकाम हो जाएगा, कि नमाज की शक्ल के मुक़ाबले में दुकान की शक्ल आयेगी तो दुकान की शक्ल के लिए नमाज़ की शक्ल को छोड़ देगा। अभी हम जिस सतह (स्तर) पर आए हैं मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो यह आमाल की शक्ल है, शक्ल से शक्ल का जब मुक़ाबला होगा तो दो क़िस्म की शक्लें हैं। एक कारोबारी शक्लें, हुकूमती शक्लें हैं और एक उसके मुक़ाबले में अल्लाह के अहकाम की शक्लें हैं। जब शक्ल का मुक़ाबला शक्ल से होता है तो आदमी दुनियावी तक़ाज़ों की वजह से दावत और इबादत के तक़ाज़ों को छोड़ देता है, इसलिए कि शक्ल के मुक़ाबले में शक्ल आई है, हक़ीक़त के मुक़ाबले में जब शक्ल आया करती है तो शक्ल को छोड़ दिया जाता है, हक़ीक़त को इख़्तियार कर लिया जाता है। हम आमाल की शक्ल पर चल रहे हैं, इसलिए जब आमाल की शक्ल के मुक़ाबले में असबाब आते हैं तो हम यूँ कहते हैं कि हाँ! ये आमाल आख़िरत में काम आने वाले हैं, लेकिन दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) असबाब पर चलेगा।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा-ए-किराम को उन असबाब पर उठाया था जो असबाब यक़ीनी थे, दुनियावी असबाब पर सहाबा-ए-किराम को नहीं उठाया, जिनको अल्लाह ने दुनियावी असबाब दिए उनको उनके चलाने के तरीक़े ज़रूर बतलाए। लेकिन यह नहीं कि आपने उनकी तश्कीलें और आपने उनको तरग़ीब दुनियावी असबाब की दी है, नहीं! बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको उठाया था और उनकी तरबियत की थी।

सहाबा ने फ़रमाया है कि हमने पहले ईमान सीखा और उसके बाद कुरआन को सीखा है। उनको पहले ईमान सिखलाया था।

ईमान कैसे सिखलाया था? कि उनसे मश्क़ कराई थी इसपर कि तुम अपनी हाजत और ज़रूरत पर नमाज़ कितनी बार अदा करते हो, और अपनी हाजत और ज़रूरत पर 'सबब' कितनी बार इस्तेमाल करते हो, दोनों में बिलकुल वाज़ेह और स्पष्ट फ़र्क़ बतलाया, बिलकुल ज़ाहिरी फ़र्क़ बतलाया, कि तुम अपनी हाजत पर आमाल इख़्तियार करते हो या असबाब, इसलिए कि असबाब वाले मौजूद थे आमाल वाले बहुत कम थे, आमाल वालों को असबाब वालों के मुक़ाबले पर लाए। जब कोई शिकायत लेकर आता था, अपनी कोई हाजत, अपनी कोई बीमारी, अपना कोई मुक़द्दमा, अपना कोई मसला लेकर जब हाज़िर होता था उसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथ लाए हुए अल्लाह के अहकाम बतलाया करते थे, कि देख तेरे इस मर्ज़ के लिए यह नमाज़, तेरे फ़क्र और तंगदस्ती के लिए ये आयतें हैं। यह नहीं कि हुज़ूर पाक ने उनको दुनियावी असबाब बतलाए।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहिब यूँ फ़रमाते थे कि अब तो हमने तक़सीम कर ली है कि आमाल काम आयेंगे आख़िरत में और असबाब काम आयेंगे दुनिया में, कि ये असबाब (यानी साधन) अल्लाह ने बेकार थोड़ा ही बनाये हैं, इन असबाब को इख़्तियार करो। नहीं! मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! यह दुनिया साधनों और असबाब की जगह है अल्लाह के अहकाम के हमारे लिए। और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों और शक्लों की हैसियत से ग़ैरों के लिए। यह सबक़ याद करना पड़ेगा कि दुनिया दारुल-असबाब अहकाम की हैसियत से हमारे लिए, और दुनिया दारुल-असबाब शक्लों की हैसियत से अल्लाह को न मानने वालों के लिए।

आज दुनिया भर में फिर कर देख लें, जितना असबाब का ढेर अपने न मानने वालों पर लगाया है अल्लाह ने वह असबाब ईमाना वालों को नहीं दिए। सबसे कम साधन होंगे उनके पास जो अल्लाह को मानने वाले हैं, बल्कि इतना ही नहीं, जब अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त किसी नबी से काम लेने का इरादा फ़रमाते हैं तो उन असबाब को कम-से-कम करते चले जाते हैं, यहाँ तक कि जो सबब उनके हाथ में रह जाता है उसको इतनी भयानक शक्ल अता फ़रमाते हैं और उसे इतनी भयानक शक्ल देते हैं कि वह जो उस असबाब के मुनाफ़े और उस असबाब के फ़ायदे और उनसे अपनी हाजतों के पूरा होने की

तफ़सील बयान करते हैं, वह अब उन असबाब से डरकर भागते हैं और उनसे पनाह माँगते हैं। मूसा अ़लैहिस्सलाम पर उनके सबब को इतना भयानक बनाया, इतना भयानक उनके सबब को बनाया कि वही नहीं जिनके पास असबाब थे वह भी डरे और जिनके हाथ में यह सबब था वह भी डरे।

बात यह है कि बात यहाँ से चलेगी कि अम्बिया अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के यहाँ दावत देने वाले कब शुमार किए जाते हैं? चयन अल्लाह की तरफ़ से इसपर होता है कि देखें तुम असबाब का कितना यक़ीन लेकर चल रहे हो, असबाब का कितना असर क़बूल करते हो। अगर असबाब का असर क़बूल करके चल रहे हो तोः

اِنِّیْ لَا یَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ

कि हमारे यहाँ काम की शर्तों में सबसे पहली शर्त यह है कि हम जिस काम के लिए भेजें उसमें असबाब का ख़ौफ़ बिलकुल नहीं होना चाहिए। हम तुम्हें जिस काम के लिए भेज रहे हैं उसमें असबाब का ख़ौफ़ किसी दरजे में नहीं होना चाहिए। लेकिन अब यह हो रहा है कि भाई कोई पुराना बात करेगा तो बात शुरू होगी समाज से। कोई यूँ कहेगा कि यहाँ मामलात में बड़ी कमी है, तो बात शुरू हो जाएगी मामलात से। कोई कहेगा कि मजमा इस क़िस्म का है, इसलिए बात की जाए अख़्लाक़ की बुनियाद पर, तो बात शुरू हो जाएगी अख़्लाक़ से। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि इस कोशिश में थे कि हमारा मजमा और हमारा स्टॉफ़ उसकी हर मजलिस की शुरुआ़त ईमान से हो। जब वह बुनियाद सामने नहीं जिस बुनियाद पर आमाल का मेयार क़ायम होगा, अख़्लाक़ और समाज का मेयार कायम होगा, इबादत और मामलात का मेयार क़ायम होगा।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! तुम सिर्फ़ आमाल से बातिल का मुक़ाबला हरगिज़ नहीं कर सकते। बातिल आएगा इल्म के मुक़ाबले में तो इल्म छोड़ दोगे। बातिल आएगा ज़िक्र के मुक़ाबले में तो ज़िक्र छोड़ दोगे। बातिल आएगा नमाज़ के मुक़ाबले में तो नमाज़ छोड़ दोगे। बातिल आएगा इख़्लास के मुक़ाबले में तो इख़्लास छोड़ दोगे। बातिल आएगा इकराम के मुक़ाबले में तो इकराम छोड़ दोगे।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि ग़ैरों के मुक़ाबले में मुसलमानों को अ़मल से नहीं चमकाया जाएगा, बल्कि यक़ीन से चमकाया

जाएगा। मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है, भाई बात ठीक है कि तुम्हारी मस्जिद में सौ-फ़ीसद नमाज़ी हो गए, लेकिन उन सौ-फ़ीसद नमाज़ियों की नमाज़ वहाँ तक है जहाँ तक कोई दुनिया का सबब या कोई ताक़त कोई मख़्लूक़ उनके मुक़ाबले में न आ जाए। इसलिए कि हमने अ़मल सीखा, यक़ीन नहीं सीखा। अब इल्म के मुक़ाबले पर हुकूमतें आयेंगी, पर तुम्हारे पास कोई मुक़ाबले की चीज़ नहीं, तुम यूँ कहोगे कि चार बातें हम तुम्हारी मान लेते हैं और चार बातें तुम हमारी मान लो, ख़ुदा की क़सम यह नाकामी का रास्ता है। किसी नबी ने आकर अपनी क़ौम से अल्लाह के अहकाम के मुक़ाबले में कभी दोस्ती नहीं की, हम इसपर चल रहे हैं कि चलो चार बातें हम तुम्हारी मान लेतें हैं और चार बातें तुम हमारी मान लो। तायफ़ के क़बीले सक़ीफ़ ने आकर कहा कि अच्छा हम इस बात पर इस्लाम लाते हैं कि हम अपने बुत को एक साल तक बाक़ी रखेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहा कि हम उसको एक मिनट भी बाक़ी नहीं रखेंगे। हाँ! यह नहीं होगा कि शिर्क के साथ आमाल को करो, वे नमाज़ पर राज़ी हो गए थे लेकिन वे यूँ कहते थे कि हमारा बुत बाक़ी रहेगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं! तुम्हारा बुत हम तुड़वायेंगे क्योंकि आमाल के साथ शिर्क नहीं चलेगा। उन्होंने कहा अच्छा ठीक है, पर हमारी क़ौम अभी उससे मानूस नहीं है, जब क़ौम मानूस हो जाएगी तब बुत को तोड़ देंगे, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नहीं, यह तो पहले दिन ही करना पड़ेगा, अब बात क्या है?

मेरे दोस्तो! सच्ची बात यह है कि तुम हुकूमत के यक़ीन के साथ आमाल कर लोगे, तुम हुकूमत के यक़ीन के साथ क़ुरआन पाक की तिलावत कर लोगे, हुकूमत के यक़ीन के साथ तुम ज़िक्र, तस्बीह पूरी कर लोगे, लेकिन जब आमाल के मुक़ाबले में बातिल ताक़तें आएँगी तो क़सम खाकर कहता हूँ कि आमाल वाले आमाल छोड़ देंगे, ज़िक्र वाले ज़िक्र छोड़ देंगे, इल्म वाले इल्म छोड़ देंगे। बात क्या है? बात यह है कि बातिल के मुक़ाबले पर अ़मल नहीं आया करता बल्कि बातिल के मुक़ाबले पर यक़ीन आया करता है। फिर जो आमाल यक़ीन वाले होंगे वे तमाम असबाब का मुक़ाबला करेंगे, यक़ीन वाले आमाल करेंगे मुक़ाबला असबाब का, वरना आमाल का असबाब से कोई मुक़ाबला नहीं, इसलिए कि इसके पास अ़मल की शक्ल है और उसके पास कारख़ाने की शक्ल है। शक्ल के मुक़ाबले पर शक्ल आ गई। जब शक्ल के मुक़ाबले पर शक्ल आएगी तो उसमें से एक शक्ल को छोड़ दिया जाएगा। कौनसी शक्ल को

छोड़ा जाएगा? जो शक्ल वायदा की हुई है, कि नमाज़ पर अल्लाह यह देंगे। यह मौजूद शक्ल को इख़्तियार करेगा, वायदा की हुई और आने वाली शक्ल को छोड़ देगा।

मौजूद शक्ल क्या है? मौजूद शक्ल कारख़ाने हैं, दुकाने हैं, नौकरी है, ज़मीनें हैं, हुकूमतें हैं, खेती-बाड़ी हैं, सरमायादारियों के नक़्शे हैं, ये तमाम की तमाम मौजूद शक्लें हैं। और वायदा की हुई शक्लें क्या हैं, यह नमाज़ है, ज़िक्र है, तिलावत है, यह नेक आमाल हैं, ये सारी की सारी की वायदा-शुदा शक्लें हैं। अगर यक़ीन न बदले गए तो मौजूद शक्लों के मुक़ाबले में वायदा की हुई शक्लों को छोड़ दिया जाएगा। इसलिए उम्मत के अन्दर जो दीन आ रहा है वह नाक़िस (अधूरा) आ रहा है, इस नाक़िस दीन पर अल्लाह के वायदे न कभी पूरे हुए हैं न कभी पूरे होंगे। इसलिए कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! कामयाबी का जो वायदा है वह कामिल दीन पर है, हमारा दीन 'जुज़वी' (यानी आंशिक) है, इसलिए कि दीन हमारी ज़िन्दगियों में दावत के रास्ते से नहीं आ रहा है। हम दावत देते हैं आमाल की, देखो मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जब दावत दी जाएगी ईमान की तब दीन यक़ीन के रास्ते से ज़िन्दगियों में आएगा। हम बुला रहे हैं सिर्फ़ आमाल की तरफ़।

'हय्-य अ़लस्सलाति, हय्-य अ़लल्-फ़लाहि' का दर्जा बाद में आया, **'अल्लाहु अकबर् अल्लाहु अकबर्, अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु, अश्हदु अन्-न मुहम्मदर्-रसूलुल्लाहि'** अज़ान में पहले है। बड़ाई पर पहले बुलाया, अल्लाह के माबूद होने पर पहले बुलाया, नबी-ए-पाक के रसूल होने की गवाही पर पहले बुलाया, कि अगर तुम अ़मल से पहले यक़ीन पर नहीं बुलाओगे तो उस अ़मल पर 'इस्तिक़ामत' यानी जमाव नहीं होगा। और अगर यह उस अ़मल पर है तो मौजूद शक्ल वायदा की हुई शक्ल को आकर ख़त्म कर देगी।

देखो मेरे दोस्तो! अगर यक़ीन नहीं सीखा तो हमारा दीन 'जुज़वी' (यानी आंशिक) होगा, जुज़वी दीन किसे कहते हैं? जुज़वी दीन उसको कहते हैं कि हम दुनिया के साथ मिलकर अपने लिए एक दीन मुरत्तब कर लें कि मेरे माहौल में इतने दीन पर चलना मुनासिब है। यह हालात का दीन, यह माहौल का दीन, यह सियासत का दीन, ये सारे-के-सारे दीन वक़्ती हैं, ये सारे-के-सारे दीन जुज़वी हैं, इसपर न कभी अल्लाह ने कामयाब किया है और न कभी करेंगे।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! कामिल दीन वह है जो ईमान के तक़ाज़े पर हो। एक दीन वह है जो ईमान के तक़ाज़े पर आएगा। जो दीन ईमान के तक़ाज़े पर आएगा वह दीन माहौल को नहीं देखेगा। वह दीन हालात को नहीं देखेगा। वह दीन हुकूमतों और ताजिरों को नहीं देखेगा। क्योंकि दीन आ रहा है अन्दर के तक़ाज़े पर। माहौल से ईमान वाला दीन टकराया करता है, बग़ैर ईमान वाला दीन कभी माहौल से नहीं टकराएगा, बल्कि बग़ैर ईमान वाला दीन माहौल का पाबन्द होकर चलेगा। इसलिए हमारा दीन जुज़वी है कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं, इसलिए हमारा दीन जुज़वी है।

कामिल दीन किसे कहते हैं? कामिल दीन इसको कहते हैं कि मेरा अल्लाह मुझसे इस वक़्त क्या चाह रहा है, जो मेरा अल्लाह मुझसे इस वक़्त चाह रहा है, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ इस वक़्त हो रहा है कि नहीं हो रहा है, इसका नाम दीन है।

अब बात क्या है? अब बात यह है कि सबसे पहला काम दावत के ज़रिये से अपने यक़ीनों को बनाना है। दावत असल में यक़ीन की तब्दीली के लिए है, और दावत ख़ुद दावत देने वाले के लिए है। दावत किसके लिए है? दावत ख़ुद दावत देने वाले के लिए है, जिसको दावत दी जा रही है उसके लिए बाद का दर्जा है, दावत ख़ुद दावत देने वाले के लिए है। कलिमाः **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की दावत ख़ुद अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए है।

हम यह समझ रहे हैं कि दावत है दूसरों के लिए। मैं नमाज़ी हो गया अब मेरी दावत बे-नमाज़ियों के लिए है। मैं ज़ाकिर हो गया अब मेरी दावत ग़ाफ़िलों के लिए है। मैं आ़लिम हो गया अब मेरी दावत जाहिलों के लिए है। मैं अच्छे अख़्लाक़ वाला हो गया अब मेरी दावत बुरे अख़्लाक़ वालों के लिए है। नहीं! मेरे दोस्तो, यह बात नहीं है बल्कि दावत हमेशा ख़ुद दावत देने वाले के लिए है। जिस तरह व्यापारी का व्यापार ख़ुद व्यापारी के लिए है, उसका नफ़ा दूसरों को पहुँचता है, बिलकुल इसी तरह दावत देने वाले की दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है, उसका नफ़ा दूसरों को पहुँचेगा।

तो कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए है। जितना इस कलिमे की तरफ़ बुलाएगा, जितना इसकी दावत देगा उसी क़द्र उसका यक़ीन अल्लाह के ग़ैर से अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिरेगा। अब तक हमारा ख़्याल यह था कि मैं अ़मल कर रहा हूँ अब दूसरों को दावत दें। नहीं! बल्कि अगर उसकी दावत दूसरों के लिए हो गई तो फिर मेरे दोस्तो,

प्यारो, बुज़ुर्गो! अपनी इस्लाह (यानी सुधार) की नीयत न रहेगी बल्कि दूसरों की इस्लाह की नीयत हो जाएगी। हम बावजूद सालाना चार महीनों के, बावजूद चिल्लों के, बावजूद महीने के तीन दिन के, बावजूद गश्तों के, बावजूद तालीम के, बावजूद दावत देने के, हम क्यों काम में तरक़्क़ी नहीं कर रहे हैं? हमारे अपने यक़ीनों में तरक़्क़ी क्यों नहीं? भाई अब बात असल में यहाँ आकर ठहर गई कि काम करने वाले, उम्मत को आमाल पर आते देखकर मुत्मईन हो जाते हैं। हमारे यहाँ बंगले वाली मस्जिद में बिहार वाले आए। बिहार वालों ने बताया कि जी हमारे यहाँ इतने फ़ीसदी लोग नमाज़ी हो गए। बस दस फ़ीसद लोग रह गए हैं, उनपर मेहनत बाक़ी है। मैंने कहा भाई इसका मतलब यह है कि अब तब्लीग़ तो हो गई ख़त्म, क्योंकि अब तक तुम्हारे सामने अ़मल की फ़ीसद वाले आए, यक़ीन की फ़ीसद वाले नहीं आए। तुम काम का मेयार देख रहे हो कि अ़मल की फ़ीसद कितनी बनी, हम यह देखना चाह रहे हैं कि ऐसे यक़ीन की फ़ीसद वाले कितने बन गए। फिर हमने उनसे यह कहा कि तुम हमें यह बताओ कि तुमने यक़ीन वाली नमाज़ के दावत देने वाले कितने पैदा किए।

देखो मेरो दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! उम्मत का आमाल पर आ जाना यह हमारे काम की आख़िरी हद नहीं है। यह उम्मत अ़मल पर आती रहेगी और अ़मल को छोड़ती रहेगी। अ़मल पर चढ़ती रहेगी और अ़मल से फिसलती रहेगी। बग़ैर यक़ीन के आमाल पर जमाव नहीं होता। हमारे अ़मलों पर जो साबित-क़दमी और जमाव होगा वह यक़ीन के बक़द्र होगा। इसलिए सहाबा कहते हैं कि हमने सबसे पहले दावत के ज़रिये से यक़ीन का बनाना सीखा है, फिर यही दावत ईमान से आमाल में मुन्तक़िल होगी, कि आमाल की दावत दो, उन आमाल की हक़ीक़त को सामने रखते हुए। अगर दावत देने वाले के सामने दावत देते हुए बे-नमाज़ी है तो उस दावत देने वाले के अन्दर उसकी अपनी नमाज़ में हक़ीक़त न आएगी बल्कि दावत देने वाला नमाज़ की हक़ीक़त सामने रखकर दावत दे। देखो दावत देने वाला नमाज़ की हक़ीक़त सामने रखकर दावत दे, बे-नमाज़ी को सामने रखकर दावत नहीं है। अभी हम दावत दे रहे हैं बे-नमाज़ियों को सामने रखकर, या हम दावत दे रहे हैं ग़ाफ़िलों को सामने रखकर, या हम दावत दे रहे हैं जाहिलों को सामने रखकर।

नहीं! मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! दावत सहाबा वाले ईमान को सामने रखकर ईमान की दावत, सहाबा की नमाज़ को सामने रखकर नमाज़ की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इल्म को सामने रखकर इल्म की दावत, हुज़ूर

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़िक्र को सामने रखकर ज़िक्र की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाले अख़्लाक़ को सामने रखकर इकराम की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इख़्लास को सामने रखकर इख़्लास की दावत। असल में दावत के ज़रिये से अपने यक़ीनों की तब्दीली मक़सूद है, यह नहीं कि दूसरों को क़ायल करना मक़सूद है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की हिदायत में यह है कि 'दाअ़ी' (यानी दावत देने वाले) का रुख़ यह न हो कि हम दूसरों को क़ायल करने के लिए दावत दे रहे हैं, नहीं! बल्कि यक़ीन की तब्दीली के लिए हम दावत दे रहे हैं।

अगर यह अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है तो इसकी दावत में वह तासीर पैदा होगी जिसपर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इसकी दावत को दूसरों की हिदायत का ज़रिया बना देगा, या इसकी दावत से दूसरों को हिदायत मिलेगी। और अगर उनकी क़िस्मत में हिदायत नहीं तो फिर यह दावत के इनकार से हलाक होगा।

हलाकत या हिदायत जो अल्लाह की तरफ़ से आएगी वह मेरे दोस्तो इस पर आएगी कि 'दाअ़ी' (दावत देने वाला) अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत देगा, दाअ़ी बसीरत पर होगा कि दावत देने वाला यक़ीन पर हो। उसकी दावत का इनकार कर देने वाले उसे दावत से पीछे न हटा दें। देखो भाई बात यह है कि अगर हम दावत दे रहे हैं दूसरों के लिए तो दो बातों के अ़लावा तीसरी बात न होगी- या तो वे लोग बात क़बूल करेंगे या बात का इनकार करेंगे। अगर उन्होंने बात क़बूल कर ली तो दावत देने वाले में घमण्ड आएगा, दावत देने वाले में तकब्बुर आएगा कि मेरी मेहनत पर इतने लगे, मेरी मेहनत पर इतने बने। मैंने फ़लाँ इलाक़ा उठा दिया। यह क्या हुआ कि दावत उसने दी दूसरों के लिए तो उनके बात मानने से इसमें घमण्ड और तकब्बुर आया। और अगर उन लोगों ने बात न मानी और इनकार किया तो या तो उसके अन्दर गुस्सा आएगा या उसके अन्दर मायूसी आएगी। अब यह काम छोड़ देगा कि लोग बात नहीं मानते। नहीं! बल्कि दावत देने वाला दावत दे रहा है अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए। यह अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है, किसी का बात मानना या किसी का बात न मानना इससे उसकी अपनी दावत में कोई कमी न आएगी, इसलिए कि क़ियामत में अम्बिया पेश किए जायेंगे, और उम्मतें उनपर पेश की जायेंगी।

एक वह नबी होंगे जिनके साथ उनकी बात को मानने वाले बहुत-से

होंगे। एक वह नबी होंगे जिनके साथ एक बड़ी उम्मत होगी। एक नबी वह होंगे जिनके साथ अस्सी लोग होंगे। एक नबी वह होंगे जिनके साथ चन्द लोग होंगे। लेकिन ऐसे भी नबी होंगे जिनके साथ कोई नहीं होगा, किसी ने उनकी बात नहीं मानी, यहाँ तक कि दुनिया में दावत देने का उनका काम पूरा हुआ, काम पूरा कर दिया दावत देने का, इसपर अल्लाह ने उनको हटा लिया और क़ौम को तबाह कर दिया। तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने उनकी दावत पर क़ौम को तबाह किया या क़ौम को हिदायत दी। लेकिन वह नबी जिनके साथ कोई नहीं होगा, वे अपनी दावत में बिलकुल कामयाब हैं। यह नहीं कि वे नबी नाकाम हो गए। अल्लाह की तरफ़ से तमाम अम्बिया अपनी दावत में सौ-फ़ीसद कामयाब हैं। जिसको दावत दी जा रही है अगर वह बात नहीं ले रहा है तो दावत देने वाला इसको अपनी कोताही समझे। यह नहीं कि ये बात नहीं मानते।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी कमज़ोरी का इक़रार कर रहे हैं। अपनी कमी अल्लाह के सामने रख रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मैं नहीं कर सका। यह नहीं कि दावत देने वाला 'मदऊ' (जिसको दावत दी गयी है) की शिकायत करे। दावत देने वाला शिकायत करेगा कि ऐ अल्लाह! मैं उनको समझा नहीं सका। बात क्या है कि दाओ़ी की दावत उसके अपने लिए है, इसलिए कभी उसमें मायूसी नहीं आएगी और कभी गुस्सा नहीं आएगा, कि अगर ये बात नहीं मानते तो गुस्सा आ जाये, क्योंकि दावत अपनी ज़ात के लिए है।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! हम जो दावत दे रहे हैं, यह बात अच्छी तरह याद रखें कि हम दावत दे रहे हैं अपने यक़ीनों को बदलने के लिए। हमारी दावत अपने यक़ीनों की तब्दीली के लिए है। अगर यह दावत दूसरों के यक़ीनों को बदलने के लिए या दूसरों को अ़मलों पर लाने के लिए दी जा रही है तो फिर इसका मतलब यह है कि हमारी अपनी दावत से हमारे यक़ीन न बदलेंगे।

फिर दावत नबियों से नबियों में मुन्तक़िल हुई है। हर ज़माने में एक नबी आए दावत दी और चले गए। दूसरे नबी आए, दावत दी और चले गए। जब एक नबी काम करके जाते तो उनके बाद दूसरे नबी आ जाते। अम्बिया का सिलसिला इसी तरह जारी रहा। हर ज़माने में नबियों का सिलसिला जारी रहा। जब अगला नबी आता तो कहते कि पिछले नबी भी नबी थे, अल्लाह के बन्दे थे। असल में होता यह था कि उम्मत उस नबी को उनके मोजिज़ों की वजह

से खुदा समझ बैठती थी। जब यह नबी चले जाते तो फिर अगले नबी उनके यक़ीन की तब्दीली के लिए आते। यही काम आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने और आप से पहले अम्बिया ने किया था।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह काम उम्मत को सिखलाया, यहाँ आकर मेहनत का नक़्शा बदल गया। आपकी ज़िम्मेदारी बदली, आपने उम्मत को काम भी सिखलाया और दीन भी सिखलाया, यानी दीन भी सिखलाया और दीन की मेहनत भी सिखलाई। यहाँ आकर मेहनत का रुख़ बदल गया। यहाँ आपने आकर उम्मत को यक़ीन की तब्दीली की मेहनत भी सिखालाई और यक़ीन भी सिखलाया। ईमान भी सिखलाया और ईमान की मेहनत भी सिखलाई। नमाज़ भी सिखलाई और नमाज़ को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। इल्म व ज़िक्र भी सिखलाया और इल्म व ज़िक्र को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। उम्मत को सिर्फ़ दीन पर नहीं डाल दिया कि तुम अपने इन्फ़िरादी (अकेले के) आमाल करो, बल्कि उम्मत को दीन भी सिखलाया और दीन को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। बल्कि मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दीन सिखलाने से ज़्यादा मेहनत दीन की मेहनत सिखलाने पर की है कि उम्मत को नुबुव्वत वाला काम दिया, नुबुव्वत वाला काम उम्मत के हवाले किया।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! अगर हम इसपर हैं कि उम्मत आमाल पर आ जाए तो इसका मतलब यह है कि हम दावत की मेहनत को ज़िन्दा नहीं कर रहे हैं। जो ज़िम्मेदारी हम पर एक आदमी को नमाज़ी बनाने की है वही ज़िम्मेदारी हम पर उसे नमाज़ का 'दाअ़ी' (दावत देने वाला) बनाने की है। एक ज़िम्मेदारी हम पर जिस तरह एक आदमी को कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** सिखाने की है जिसे कलिमा नहीं आता, इसी तरह उसको कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** का दाअ़ी बनाने की है। यह बिलकुल काफ़ी नहीं है कि हम एक आदमी को अ़मल पर लाकर छोड़ दें। हमारी ज़िम्मेदारियाँ दो हैं- कलिमा सिखलाना, कलिमे का दाअ़ी बनाना, नमाज़ सिखलाना और नमाज़ का दाअ़ी बनाना, इल्म व ज़िक्र सिखलाना और इल्म व ज़िक्र का दाअ़ी बनाना, इकराम सिखलाना और इकराम का दाअ़ी बनाना, इख़्लास सिखलाना और इख़्लास का दाअ़ी बनाना, दावत सिखलाना और दावत देने वाला बाना। ये दो ज़िम्मेदारियाँ हैं उम्मत की। सिर्फ़ अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना इस उम्मत की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि इस तरह ज़िम्मेदारी नहीं। उम्मत के घाटे से निकलने के लिए भी इस उम्मत का

अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है। यह बात बिलकुल यक़ीनी है और दावे के साथ कही जा सकती है कि यह उम्मत बग़ैर दावत के कभी घाटे से निकल नहीं सकती।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस उम्मत को इन्फ़िरादी बुनियाद पर उठाया ही नहीं था, इरशाद है: **कुन्तुम् ख़ै-र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल् मुन्करि व तुअ्मिनू-न बिल्लाहि।** तुम्हें भेजा ही गया है इनसानों के लिए **'लाम'** ख़ास करने के लिए है। तुम्हें ख़ास तौर से भेजा गया है, किस लिए भेजा गया है: **तअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि** अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) कराना, अल्लाह की क़ुदरत को, उसके रब होने को, ग़ैबी निज़ाम को, ग़ैबी ख़ज़ानों को समझाना और अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात में किसी भी चीज़ के शरीक करने से लोगों को रोकना। तुम्हें ख़ास तौर पर इसी लिए भेजा गया है। अब मेहनत शख़्सी, अब मेहनत क़ौमी, अब मेहनत इलाक़ाई या ज़बान की बुनियाद पर, या मुल्क की बुनियाद पर, या राज्य की बुनियाद पर, या मेहनत ज़िलों की बुनियाद पर, इन बुनियादों पर मेहनत करके यह उम्मत कभी कामयाब नहीं हो सकती, क्योंकि यह मेहनत अम्बिया की है, ख़ातिमुल-अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मेहनत की बुनियाद यह नहीं। पिछले नबी किसी क़ौम के या किसी इलाक़े के या किसी मुल्क के या किसी बस्ती के या यह नबी किसी पेशे वालों के, या यह नबी किसी अक्सरियत वालों के, यह नबी दस्तकारों के, यह नबी वज़ीरों और ताजिरों में, अम्बिया अपने-अपने ज़माने में अपनी-अपनी क़ौमों में मेहनत करने के लिए भेजे गए। वहाँ अ़ज़ाब आया तो सीमित, मदद आई तो वह सीमित, वहाँ अ़ज़ाब आया तो सीमित कि इस क़ौम पर आएगा दूसरी क़ौम पर नहीं आएगा। एक क़ौम बन्दर बनाई गई तो दूसरी क़ौम की शक्लों में कोई तब्दीली नहीं हुई। ज़लज़ले आए उनकी ज़मीनों में, सैलाब आए उनकी ज़मीनों में। लेकिन यह उम्मत, इस उम्मत के साथ जो मामला अल्लाह का होगा। पहली बात तो यह दोस्तो बुज़ुर्गो! ख़ुशख़बरी है इस उम्मत के लिए वह यह कि इस उम्मत पर आ़म अ़ज़ाब नहीं आएगा। क्यों नहीं आएगा? इसलिए कि अ़ज़ाब आता है उस उम्मत पर जिस पर नबी के बाद नबी आना है, उस उम्मत पर अ़ज़ाब नहीं आना, जिस उम्मत पर नबी के बाद नबी नहीं आना, बल्कि उम्मत को नुबुव्वत वाला काम दिया गया है, जिसे नुबुव्वत वाला काम करना है। इसलिए इस उम्मत पर

उमूमी अज़ाब नहीं आना है, क्योंकि यह उम्मत तबाह नहीं होगी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँग लिया अल्लाह से कि "ऐ अल्लाह! यह मुठ्ठी भर लोग हैं, अगर ये हलाक हो गए तो फिर इस ज़मीन पर तेरा तआरुफ़, तेरी ज़ात और सिफ़ात की पहचान न कराई जा सकेगी।

अब बात क्या है? बात यह है कि दावत की मेहनत नुबुव्वत से उम्मत की तरफ़ मुन्तकिल हुई है। किस तरह हुई है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले लाकर कलिमे को जो पेश किया है, वह उम्मत के तीनों तब्क़ों पर पेश किया है- औरत, मर्द और बच्चा। हज़रत ख़दीजा, अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुम। इनसानियत के तीनों तब्क़ों पर आपने आकर दावत को पेश किया, फिर दुनिया से तशरीफ़ ले जाते हुए उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की रवांगी, दावत को उम्मत पर यूँ पेश किया। जब नबी बनाए गए और दावत को उम्मत पर यूँ पेश किया, जब आप दुनिया से तशरीफ़ ले गए। आते हुए जाते हुए दोनों मौक़ों पर उम्मत को काम देकर गए हैं।

मेरे दोस्तो, प्यारो! अगर इस वक़्त उम्मत इलाक़ाइयत की या क़ौमियत या ज़बान की या बिरादरी की या रंग की, इन बुनियादों पर सोचेगी तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का इस उम्मत के साथ "मदद" का वायदा इन बुनियादों पर हरगिज़ नहीं है, ये सारी बुनियादें ख़त्म हो गईं। **"इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमीअन्"** मैं एक वक़्त में तुम सब पर नबी बनाकर भेजा गया हूँ।

आप चूँकि शुऐब अलैहिस्सलाम के इमाम हैं इसलिए आप तिजारत (व्यापार) से न होने के यक़ीन को भी लाए। आप नूह अलैहिस्सलाम के इमाम हैं आप अक्सरियत से न होने के यक़ीन को लाए। आप सालेह अलैहिस्सलाम के इमाम हैं आप कारख़ानों से न होने के यक़ीन को लाए। आप यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के इमाम हैं आप विज़ारतों से न होने के यक़ीन को लाए। आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इमाम हैं आप बादशाहों से और हुकूमतों से न होने के यक़ीन को लाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक वक़्त में इन सारी शक्लों से न होने के यक़ीन को लाए। जिन सारी शक्लों से न होने के यक़ीन को अपने ज़माने में अम्बिया आदम अलैहिस्सलाम से लेकर ईजादात (आविषकारों) के दौर ईसा अलैहिस्स्लाम तक लेकर आए हैं। मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इस दावत को हम समझ लें ज़रा ग़ौर से जिस तरह अर्ज़ किया जा रहा है। इसलिए कि उम्मत

तो बेचारी इस मुग़ालते और धोखे में पड़ गई है कि दावत तो ग़ैर-मुस्लिमों के लिए है, इतना बड़ा धोखा लगा मुसलमानों को कि यूँ समझे कि दावत ग़ैरों के लिए है। अब दावत दी जाएगी ग़ैरों को। मेरे दोस्तो उम्मत में दीन से फिर जाने और मुंह मोड़ लेने के आने का रास्ता मुसलमानों के अन्दर से दावत का निकल जाना है। जब उम्मत दावत की मेहनत छोड़ेगी, उम्मत में से उसका उम्मत होना ही ख़त्म हो जाएगा। इतना बड़ा धोखा यह है मुसलमानों को कि दावत ग़ैरों के लिए है, नहीं! बल्कि दावत मुसलमान, मुसलमान को देगा, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ईमान लाने का हुक्म ईमान वालों को दे रहे हैं: **या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू** यह नहीं फ़रमा रहे हैं **या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू आमिनू** कि काफ़िरो! ईमान लाओ। बल्कि काफ़िरों को तो मुसलमान होने की दावत दी जा रही है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जितना मुसलमान, मुसलमान को दावत देगा यह मुसलमान बाक़ी रहेगा।

यह न जाने कहाँ से ग़लत-फ़हमी पैदा हुई कि दावत ग़ैरों के लिए है, नहीं! बल्कि मूसा बनी इस्राईल पर मेहनत फ़िरऔ़न से ज़्यादा कर रहे थे। फ़िरऔ़न को दावत सिर्फ़ इतनी थी कि इस्लाम ले आए, लेकिन सब्र की, तवक्कुल की, अल्लाह के साथ ताल्लुक़ की, अल्लाह के वायदों पर यक़ीन करने की, फ़िरऔ़न की तरफ़ से आने वाली तकलीफ़ों और दुखों पर सब्र करने की, इस सबकी मेहनत जो मूसा अ़लैहिस्सलाम कर रहे थे वह बनी इस्राईल पर कर रहे थे। ईमान की मेहनत ईमान वालों के ऊपर होगी। अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मेहनत ईमान की ईमान वालों के ऊपर है: **इज्लिस् बिना आमिनू साअ़तन्** कि ईमान की मजलिसें ईमान वाले ईमान वालों के साथ लगायेंगे, ग़ैरों को तो इस्लाम की दावत है कि इस्लाम ले आओ। लेकिन असल में दावत ईमान वाला ईमान वालों को देगा।

अब बात क्या है? अब बात यह है कि अब जिस तब्क़े में घुसकर दावत दोगे, अगर ताजिरों में घुसकर दावत दोगे तो शुऐब अ़लैहिस्सलाम के अनवारात आयेंगे। तुम ज़मीनदारों में घुसकर दावत दोगे, तुम कारख़ाने वालों में घुसकर दावत दोगे तो सालेह अ़लैहिस्सलाम की दावत के अनवारात आएँगे। तुम अक्सरियत वालों में घुसकर दावत दोगे तो नूह अ़लैहिस्सलाम की दावत के अनवारात आयेंगे। जिस क़ौम की तरफ़ जो नबी भेजे गए आज उस क़ौम में घुसकर दावत अगर हम देंगे तो उस क़ौम की तरफ़ जो नबी भेजा गया है उस

नबी की दावत के अनवारात आयेंगे।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि दावत की मेहनत करने वालों में और अम्बिया में सिर्फ़ नुबुव्वत के दरजे का फ़र्क़ रह जाता है। यह दावत नुबुव्वत से उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल हुई है, गुनाहों से साफ़-सुथरा करना उम्मत के ज़िम्मे होगा, तालीम उम्मत के ज़िम्मे होगी। जिस तरह अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को 'मुअ़ल्लिम' (सिखलाने वाला) बनाकर भेजा है। आपने फ़रमाया **"इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्"** कि अल्लाह ने मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा है। बिलकुल इसी तरह आपका एक-एक उम्मती 'मुअ़ल्लिम' है। जिस तरह आप मुअ़ल्लिम थे इसी तरह आपने अपने उम्मती को मुअ़ल्लिम बनाया है। फ़रमायाः **बल्लिग़ू अ़न्नी व लौ आयतन्"** कि मुझसे अगर एक आयत भी ले रहे हो तो उसको पहुँचाओ।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अब मेहनत शख़्सी या मुल्की या इलाक़ाई और क़ौमी नहीं है, बल्कि अब मेहनत 'आलमी' (यानी पूरी दुनिया के लिए) है। फ़रमायाः **मुझे तुम सब की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया है।** उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली मदद जिसका अल्लाह ने वायदा किया है वह मदद जो अल्लाह की तरफ़ से होगी, अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली मदद वह अम्बिया वाले दावत के तर्ज़ पर न होगी, इस ज़माने में उम्मत की जो मदद होगी।

अव्वल तो 'नुसरत' (मदद) कहते किसे हैं? किसे मदद कहें? भाई हमने तो यह सोचा हुआ है कि दो आदमी सफ़र में जा रहे थे कि सामने से शेर आ गया, उससे मुक़ाबला हुआ तो शेर डरकर भाग गया, अल्लाह ने मदद कर दी, यह नुसरत और मदद का आ़म मफ़्हूम है। मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अगर तब्लीग़ से 'अफ़राद' (अकेले-अकेले व्यक्तियों) के काम बन रहे हैं तो उसको नुसरत और मदद नहीं कहेंगे, उसको या तो करामत कह लो या उसको बरकत कह लो, यह विलायत के साथ करामत तो हो सकती है लेकिन नुसरत किसे कहते हैं? नुसरत इसको कहते हैं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की सुन्नत के ख़िलाफ़ उसकी आ़दत के ख़िलाफ़ उसके ग़ैबी निज़ाम का उम्मत के साथ उम्मत के मुवाफ़िक़ हो जाना, यह नुसरत और मदद है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, प्यारो! हम तो अभी नुसरत इसको कहते हैं कि असबाब में अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर हो। नहीं! नुसरत कहते हैं जिससे सबको फ़ायदा पहुँचे। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के यहाँ सब ख़ंदक़ वालों

की दावत है, यह दावत किसकी तरफ़ से है? यह जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से नहीं है, यह दावत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से है, जो नुसरत नबी पर नाज़िल होगी वह नुसरत पूरी उम्मत पर आएगी, जो उम्मत, 'उम्मते इजाबत' (यानी नबी की दावत को कुबूल करने वाली) है। कि चलो जाबिर के यहाँ खाना है, कितने आदमियों का खाना है, तीन आदमी भर का खाना है, पर तुम सब चलो। करामत होगी वली के साथ, करामत उम्मत के साथ नहीं होती, लेकिन नबी पर जो नुसरत आई, मेरे दोस्तो, उससे फ़ायदा सबको पहुँचा। इन नुसरतों (मददों) का दरवाज़ा बन्द है? बन्द इसलिए है कि अब मेहनत इलाक़ाई और क़ौमी हो रही है, ख़ुद काम करने वालों में इलाक़े तक़सीम होंगे। यह मेरा मौहल्ला यह तुम्हारा मौहल्ला, यह मेरा हल्क़ा यह तुम्हारा हल्क़ा।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गो! इलाक़ाइयत या हल्क़े इनकी हैसियत ख़ंदक़ की तक़सीम से ज़्यादा नहीं है। ख़ंदक़ को जो तक़सीम किया गया है वह आसानी के लिए किया गया है। हमारे काम में जो हल्क़े बने हुए हैं वे सिर्फ़ सहूलत और आसानी के लिए बने हुए हैं। ये हल्क़े इसलिए नहीं हैं कि तुम अपना हल्क़ा देखो हम अपना हल्क़ा देखें, अगर कोई बात पेश आएगी तो यूँ कहेंगे कि तुम्हारे हल्क़े में पेश आई है। अब मेहनत इलाक़ाई या क़ौमी या ज़बान की बुनियाद पर नहीं है, अब जो मेहनत होगी मेरे दोस्तो पूरी दुनिया के लिए होगी, जैसा कि फ़रमाया गया है: **'इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीअ़न्'** मैं एक वक़्त में तुम सबकी तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ। तो क्या होगा कि एक वक़्त में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक-एक उम्मती सारी दुनिया के एतिबार से सोचेगा। अब जो नुसरत और मदद आएगी मेरे दोस्तो वह नुसरत आएगी 'इजतिमाई' (यानी सामूहिक और सबके लिए) और वह नुसरत आएगी आ़लमी (यानी पूरी दुनिया के लिए)। अगर एक मुसलमान अमेरिका में है तो अल्लाह उसकी वहाँ मदद करेगा। यह न होगा कि जो मुसलमान काम के माहौल में आ गए उन्हीं की मदद होगी, कि नहीं जिस तरह अल्लाह की तरफ़ से न मानने वालों पर अ़ज़ाब आता है कि वह अल्लाह का नाफ़रमान अ़ज़ाब की जगह न हो तो उसके अ़ज़ाब का हिस्सा जहाँ पर भी वह रह रहा होगा उसी जगह पर पहुँचेगा, इसी तरह जब उम्मत दावत की मेहनत पर आएगी तो जो नुसरत मजमूए की होगी अफ़राद के हिस्से की नुसरत और मदद वहाँ पहुँचेगी। नुसरत किस तरह हुई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जो

अल्लाह की तरफ़ से मददें आईं वे ख़िलाफ़े आ़दत आईं।

अब तो काम करने वाले भी इन नुसरतों (मददों) से मायूस हैं कि भाई जो होगा असबाब से होगा। अब अगर यह कह दिया जाए कि खाने में बरकत हो जाएगी कि नहीं, अब तो चार महीने की जमाअ़त निकलेगी, पैसे गिनेंगे और तौल-तौलकर चावल भर लेंगे कि भाई यह एक आदमी की इतनी ख़ुराक, एक आदमी का इतना ख़र्चा, इतने ख़र्चे में हिसाब लगाएँगें बैठकर कि तुम इतने रुपये ले चलो। यानी यक़ीन की तब्दीली मक़सद ही नहीं, सारा-का-सारा, अब तो मुझे ताज्जुब होता है मश्विरे में बैठकर कि भाई यह जमाअ़त फ़लाँ मुल्क में पन्द्रह हज़ार रुपये ख़र्च की है, बारह हज़ार रुपये में इसका काम नहीं चलेगा। यानी इसका यक़ीन ही नहीं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त ख़िलाफ़े आ़दत ख़र्च पूरा करा देंगे, इसलिए कि हमने अपने यक़ीन की ख़राबी की वजह से अल्लाह की क़ुदरत को अल्लाह के बनाए हुए असबाबों के साथ बाँधा हुआ है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! उसको क़ुदरत कहते ही नहीं जो असबाब में ही ज़ाहिर होने की पाबन्द हो, क़ुदरत तो कहते ही उसको हैं जिसके असबाब पाबन्द हों। अब अल्लाह की तरफ़ से जो मदद आएगी मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! यह याद रखो कि वह उन बुनियादों पर आएगी जिन बुनियादों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी उम्मत को डाल गए। अब इलाक़ाइयत और क़ौमियत की बुनियाद पर अल्लाह की मदद न होगी, क्योंकि बात यह है कि मेहनत है एक और मैदान हैं उसके तीन। मेहनत एक है मैदान तीन हैं।

मेहनत एक क्या है? मेहनत यह है कि दीन ज़िन्दगियों में आ जाए, मेहनत यह है। देखो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हर इनसान के साथ दो चीज़ें हैं- एक उसकी ज़रूरत, एक उसकी ज़िम्मेदारी। ताजिर के साथ दो चीज़ें लगी हुई हैं, एक उसकी ज़रूरत एक उसकी तिजारत। मुलाज़िम के साथ भी दो चीज़ें लगी हुई हैं, एक उसकी ज़रूरत एक उसकी नौकरी। हर एक के साथ ये दो चीज़ें हैं, हर एक के साथ उसका खाना उसका कपड़ा उसकी ज़रूरत, यह उसकी ज़रूरत है। एक उसके साथ उसकी ज़िम्मेदारी है, किसी ने अपनी ज़िम्मेदारी तिजारत को बनाया हुआ है, किसी ने अपनी ज़िम्मेदारी ज़मीनदारी को बनाया है, किसी ने मुलाज़मत और नौकरी को बनाया हुआ है।

तो एक ज़रूरत है और एक ज़िम्मेदारी है। हर इनसान के साथ हैं ये दो चीज़ें। बिलकुल इसी तरह हर उम्मती के साथ दो चीज़ें लगी हुई हैं- एक उसकी ज़रूरत एक उसकी ज़िम्मेदारी। ज़रूरत क्या है? ज़रूरत दीन है। दीन

ज़रूरत है कि उसके बग़ैर कामयाबी नहीं है। लेकिन ज़िम्मेदारी वह क्या है? यूँ कहें कि वह ज़िम्मेदारी दावत है। दीन ज़रूरत है, ज़िम्मेदारी दावत है। जैसे यूँ कह दो कि खाना ज़रूरत है और तिजारत ज़िम्मेदारी है। मिसाल के तौर पर यूँ कहें कि खाना ज़रूरत है और तिजारत ज़िम्मेदारी है। बिलकुल इसी तरह दीन ज़रूरत है और दावत ज़िम्मेदरी है। जो अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी नहीं करता उसकी ज़रूरत पूरी नहीं हुआ करती। यक़ीनी बात है कि तुम अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करो तो तुम्हारी ज़रूरत पूरी होगी। बिलकुल इसी तरह यह समझ लो कि अगर दावत की ज़िम्मेदारी पूरी न की तो दीन ज़िन्दगी में न आएगा। दीन आएगा दावत की ज़िम्मेदारी को पूरा करने से। बज़ाहिर जो यक़ीन की ख़राबी की वजह से एक बात दिल में बैठी हुई है कि तिजारत से मसाइल (समस्याएँ) हल होंगे।

तो इस तरह से यह अ़र्ज़ है कि मेहनत एक है, मैदान उसके तीन हैं। अपनी ज़ात मेहनत का मैदान हो। मेरी नमाज़, मेरा रोज़ा, मेरा हज, मेरी ज़कात, मेरा ज़िक्र, मेरी तिलावत, मेरे नेक आमाल, मेरी क़ब्र, मेरा हश्र, मेरी जन्नत, मेरी दोज़ख़, मैं जानूँ। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि यह मेहनत है 'सालिहीन' (नेक लोगों) वाली, कि मैं अपनी ज़ात से नेक बन जाऊँ और कोई करे या न करे।

फिर एक दूसरा मेहनत का मैदान है। दूसरा मेहनत का मैदान क्या है? दूसरा मेहनत का मैदान यह है कि एक क़ौम एक बस्ती एक इलाक़ा एक गाँव, इस ज़बान वाले या इस पेशे वाले, सिर्फ़ कोई इलाक़ा और कोई क़ौम हो, मेहनत की। फ़रमाते थे मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि कि मेहनत का मैदान तो है लेकिन यह अम्बिया की मेहनत का मैदान है। यह मैदान किसका है? यह मैदान अम्बिया का है, कि एक क़ौम, एक बस्ती, एक इलाक़ा, एक शहर, यह मेहनत का मैदान बना।

फिर एक तीसरा मेहनत का मैदान है जो सबसे कामिल और मुकम्मल है। यह मेहनत का मैदान तमाम नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का है। यह मेहनत का मैदान कामिल है। अब उनपर उनके साथ अल्लाह की मददें और नुसरतें, वे भी उन्हीं मैदानों के एतिबार से होंगी। अगर 'सालिहीन' (नेक लोगों) वाली मेहनत है तो करामतें होंगी। अगर अम्बिया वाली मेहनत है तो फिर नुसरत क़ौम तक या बस्ती तक या शहर तक या नबी तक 'महदूद' (सीमित) होगी, कि क़ौम जो चाहेगी नबी से कहेगी, नबी अल्लाह से कहेंगे, कि

मूसा अपने रब से यूँ कहो, मूसा अपने रब से यह कहो। जब तक नबी है क़ौम के और ख़ुदा के दरमियान वास्ता है, लेकिन नुबुव्वत वाली मेहनत उम्मत को इस तरह मिली कि इस उम्मत का ताल्लुक़ अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त से बिना किसी वास्ते के है, इस उम्मत का ताल्लुक़ अब अल्लाह से डायरेक्ट है। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है: **उद्ऊ़नी अस्तजिब् लकुम्** यानी मुझसे माँगो मैं दूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उम्मत को किसी पर छोड़कर नहीं गए बल्कि आपने अपनी उम्मत को बराहे-रास्त (डायरेक्ट) अल्लाह से जुड़ने वाले रास्ते पर डाल दिया, कि भाई एक नबी गए दूसरे आ गए, दूसरे गए तीसरे आ गए, आकर उम्मत को संभाल लिया, लेकिन जिस नबी के बाद नबी नहीं उस उम्मत का क्या होगा?

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस उम्मत को दावत वाली मेहनत देकर गए हैं कि अब उम्मत, देखो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अ़र्ज़ यह कर रहा था कि अगर उम्मत के साथ उम्मत का कोई मसला आ गया तो यह उम्मत कहाँ से मसले हल करेगी। कुछ जाएँगे ताजिरों के पास, कुछ जाएँगे हुकूमतों के पास, कुछ जाएँगे अपने यक़ीन की ख़राबी की वजह से, अपने अ़क़ायद की कमज़ोरी की वजह से अल्लाह के ग़ैर की तरफ़, कि भाई कोई मुझे नक़्श बना दे, उस नक़्श से मेरा काम हो जाए। नहीं! मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वह काम देकर भेजा है जिससे आपने अपनी उम्मत को किसी के हवाले नहीं किया, कि आप उम्मत को ताजिरों के हवाले कर गए हों, या ज़मीनदारों के हवाले कर गए हों, या मुलाज़िमों के हवालो कर गए हों, या हुकूमतों के हवाले कर गए हों। बल्कि वह काम देकर गए हैं जिससे ये मददें अल्लाह से बराहे-रास्त (बग़ैर किसी वास्ते के) ले। अब मेहनत का मैदान एक क़ौम और बस्ती बनेगी तो अल्लाह की तरफ़ से मदद आएगी अम्बिया वाली। लेकिन एक तीसरा मेहनत का मैदान है, वह यह है कि हम एक वक़्त में पूरी दुनिया को मेहनत का मैदान बनाएँ। एक वक़्त में पूरी दुनिया के इनसानों को मेहनत का मैदान बनायें, कि जब यह मेहनत 'आ़लमी' (पूरी दुनिया पर) होगी और हर उम्मती सारे आ़लम के एतिबार से सोचेगा तो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से मददें जो आएँगी वे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली आयेंगी।

इसलिए दुनिया दारुल-असबाब (साधनों का घर) आमाल की हैसियत से है हमारे लिए, और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों की हैसियत से और शक्लों

के एतिबार से है अल्लाह को न मानने वालों के लिए। लेकिन बात यह चल रही है कि दुनिया का काम तो असबाब से चलेगा, बिलकुल यही बात चल रही है। अब अ़र्ज़ क्या करूँ कि यही बात चल रही है, हमारे अपने दरमियान यही बात चल रही है। मुझे बाज़े अपने साथियों पर ताज्जुब होता है।

वहाँ बंगले वाली मस्जिद में एक साहिब ने बयान किया कि भाई दुनिया दारुल-असबाब (साधनों की जगह) है, इसलिए तिजारत तो करनी है। मैंने कहा कि भाई तूने तो काम ही सारा ख़त्म कर दिया। यह कोई बात हुई। यानी सारे काम की बुनियाद ही ख़त्म कर दी। हम तो अपने मजमे को इसपर लाना चाहते हैं कि हमारे सारे कारकुन, सारा मजमा वह दिन भर इसी बात को बोलेगा, सुनेगा और सोचेगा, और इसपर उम्मत को लाएगा कि यह दुनिया आमाल के एतिबार से दारुल-असबाब है, वरना मरने के बाद एक अ़मल का भी वहाँ मौक़ा नहीं मिलेगा।

बताओ आमाल आख़िरत के लिए हैं? आख़िरत में किस अ़मल का मौक़ा होगा। मैंने कहा भाई तूने यह बुनियाद सारी उखाड़ कर फेंक दी कि दुनिया दारुल-असबाब तिजारत के एतिबार से है और आख़िरत आमाल के एतिबार से। आमाल आख़िरत में नहीं होंगे दुनिया में होंगे, कि उनसे कामयाबी दुनिया में पहले लो।

यह क्या बात हुई कि तुम यह कहो कि दुनिया दारुल-असबाब है, कि हाँ है दुनिया दारुल-असबाब मगर ग़ैरों के लिए होगी, हमारे लिए तो दुनिया दारुल-असबाब अल्लाह के अहकाम की हैसियत से है। अब अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त क़ियामत तक ख़िलाफ़े आ़दत और ख़िलाफ़े सुन्नत अपनी क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाएँगे। ख़लाफ़े आ़दत अपनी क़ुदरत दिखलाएँगे। दाऊद अ़लैहिस्सलाम के हाथ में लोहे को नरम कर दिया। बात क्या है? बात यह है कि जब तुमने हमारे हुक्म पर क़दम बढ़ाया तो हमने तुम्हारी दुनिया को तुम्हारे लिए आसान कर दिया।

अब तो लोग यूँ कहते हैं कि मोजिज़ा तो नबियों के साथ है। नहीं! मेरे दोस्तो मोजिज़े दावत के साथ हैं। मोजिज़ा नुसरत और मदद है। मोजिज़े अल्लाह की तरफ़ से मददें हैं, वे दावत के साथ हैं। अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से मदद का जो वायदा नबियों के साथ है वही वायदा हर उम्मती के साथ है। यह बात नहीं कि भाई चलो एक चीज़ पेश आई थी नबी के साथ तो नबी के जाने पर ख़त्म हो गई। फिर एक चीज़ पेश आ गई सहाबा के साथ

तो वह सहाबा के साथ ख़त्म हो गई। आज तो भाई दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) दुनिया पर ही चलेगा, हम असबाब के मुक़ाबले में आज कैसे कामयाब होंगे?

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है कि हम दावत की मेहनत छोड़ देने की वजह से आज इस दावत की मेहनत के ज़रिये से यक़ीन की तब्दीली को इस काम को ज़रिया न समझने की वजह से हम इस बात से बिलकुल मायूस हो चुके हैं कि अब अल्लाह की कुदरत कैसे ज़ाहिर के ख़िलाफ़ इस्तेमाल होगी, इस बात से बिलकुल मायूस हो गए।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ

कि हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और तमाम ईमान वालों की मदद करेंगे, और क़ियामत तक आने वालों की मदद करेंगे, उनकी नुसरत करेंगे।

حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

यानी आपको और मोमिनों में से जो आपकी पैरवी करें उनके लिए अल्लाह तआ़ला काफ़ी है।

अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से जो वायदा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मदद का है बिलकुल वही वायदा आपके बाद आपकी उम्मत की मदद का है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जो दावत की मेहनत को करेंगे इस यक़ीन के साथ कि अल्लाह की मददें इस काम के साथ हैं, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त इस ज़माने में उनकी मदद सहाबा के मुक़ाबले पचास गुना ज़्यादा करेंगे और सहाबा के मुक़ाबले उनको पचास गुना ज़्यादा अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! दावत को समझो कि दावत क्या है, और इसपर ग़ैबी निज़ाम किस तरह हरकत में आता है। अब बात यह है कि भाई मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि तुम अगर ईमान को बोलते हुए अपने दिल के अन्दर अपने ज़ेहन में सहाबा के ईमान को नहीं रखोगे तो फिर यह ईमान सिर्फ़ ज़बान का बोल बनकर रह जाएगा। इसलिए फ़रमाते थे कि जब ईमान बोलो तो सहाबा के ईमान को सामने रखो, जब ईमान को बोलो तो अल्लाह की कुदरत को सामने रखकर बोलो। किसी सबब को सामने रखकर ईमान का बोलना यह भी शिर्क पैदा करेगा। इसलिए जब ईमान को बोलो किसी सबब को सामने रखकर न बोलो।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! असल में मदद और नुसरत दावत के साथ है। आमाल के साथ अगर कोई आसानी आ भी जाए तो वह नुसरत न कहलाएगी, करामत कहलाएगी जो वलियों के साथ मख़्सूस है, कि मुरीद लोग देखेंगे कि हमारे वली के साथ यह नुसरत और मदद हुई, वे उसे वली मान लेंगे, उसको बुजुर्ग मान लेंगे। बस इतना होगा लेकिन उम्मत से बारिश रुक जाये, वली कुछ न कर सकेंगे। साफ़-साफ़ बात है, हदीस का मतलब है, जो लोग दावत देना छोड़ेंगे, अच्छे कामों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना छोड़ देंगे, उनपर जब दावत छोड़ देने की वजह से हालात आएँगे, ये उन हालात से तंग आएँगे, फिर ये अपने मशाइख़ के पास, वलियों के पास, अपने बुजुर्गों के पास, दुआ कराने के लिए जायेंगे तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त उनके वलियों की, उनके मशाइख़ की, उनके बुजुर्गों की दुआओं को उनके हक़ में क़बूल नहीं फ़रमायेंगे। हदीस है कि बारिश रुक गई, चलो बुजुर्गों के पास, चलो वलियों के पास, नहीं! जिनकी अल्लाह ने बारिश रोकी है दावत की मेहनत छोड़ देने की वजह से, हदीस में आता है कि जो दावत की मेहनत छोड़ देगा फिर उसपर हालात आयेंगे, वे हालात के आने पर बुजुर्गों के पास दुआ कराने के लिए जायेंगे, उनके बुजुर्ग उनके लिए दुआएँ करेंगे, अल्लाह उनकी दुआओं को उनके हक़ में क़बूल नहीं फ़रमाएँगे। बात क्या है? बात यह है कि हमने ग़ैबी मददों के शामिले-हाल होने के रास्तों को बन्द किया हुआ है।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! एक उम्मती जब दीन की हिफ़ाज़त के लिए क़दम उठाता है तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ग़ैबी निज़ाम को किस तरह हरकत में लाते हैं। देखो 'अस्हाबे कहफ़' क्या थे, यह शहज़ादों की एक जमाअत थी। बात समझ में आ गई कि पालने वाली ज़ात अल्लाह की है। अब यह बात लेकर उठे तो चारों तरफ़ से मुख़ालफ़त होने लगी। ये वे हैं जो अपने यक़ीन को बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़े।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुजुर्गो! बात ज़रा ध्यान से सुनना है, और फ़र्क़ पैदा करना है दोनों में कि इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) मेहनत और इज्तिमाई (सामूहिक) मेहनत में क्या फ़र्क़ है। अपना दीन बचाने पर क्या होता है और सारी उम्मत का दीन बचाने और सारे माहौल के बनाने पर क्या होता है। सिर्फ़ अपने दीन की फ़िक्र कर लेने पर और सारी उम्मत के दीन की फ़िक्र करने पर अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का दुनियावी निज़ाम किस तरह मुवाफ़िक़ होता है। आलम का निज़ाम किस तरह हरकत में आता है।

देखो 'अस्हाबे कहफ़' का क़िस्सा मशहूर है। क़िस्सा सुनाने का वक़्त नहीं है, यह वह जमाअ़त है जो अपना दीन बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़े। तो दुनिया का निज़ाम है, सूरज का निज़ाम है। वह अल्लाह की तरफ़ से तयशुदा है, मुतैयन है कि उससे एक इंच एक सूत या इससे भी कोई छोटी चीज़ हो उतना भी उसके अन्दर कोई फ़र्क़ या तब्दीली आने की कोई गुंजाइश नहीं है। यह नहीं कि चाँद और सूरज का निज़ाम आगे-पीछे हो जाये। नहीं! ये बिलकुल अपने निज़ाम पर चल रहे हैं। उनकी मन्ज़िलें और उनके ठिकाने तय हैं। दुनिया का सारा निज़ाम उसपर चल रहा है, पल-पल का हिसाब है, लम्हे-लम्हे का हिसाब है। लेकिन जब यह सूरज गुज़रता है अस्हाबे कहफ़ के ठिकाने के पास से तो यह रास्ता काटकर निकलता है, यह सूरज रास्ता काटकर निकलता है यहाँ से, कि जब यह गुरूब होने जाता है तो फिर रास्ता काटकर जाता है।

बात क्या है? बात यह है कि यहाँ वे लोग सो रहे हैं जो अपना दीन बचाने के लिए ग़ार में आकर छुप गए। यह सूरज उनके लिए अपनी चाल से और अपने रास्ते से, अपनी तरतीब से हटकर चल रहा है। यह इकराम और सम्मान तो उनका हो रहा है जो अपना दीन बचाने के लिए ग़ार में आकर छुप गए थे। **ला रहबानिय्य-त फ़िल-इस्लामि** इस्लाम में रहबानियत नहीं है (यानी सब कुछ छोड़-छाड़कर पहाड़ों में निकल जाना, कि दुनिया के बखेड़ों से आज़ाद होकर अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल रहें)। मेरी उम्मत की रहबानियत क्या है: **अल-जिहादु फ़िल-इस्लामि** यानी मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना है। यह मेरी उम्मत की रहबानियत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर क़ौम की कोई रहबानियत है, मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह के रास्ते का जिहाद है।

اَلرَّهْبَانِيَّةُ لِاُمَّتِىْ جِهَادٌ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

मैं अ़र्ज़ यह करना चाहता हूँ कि जो जमाअ़त अपना दीन बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़ी, जब सूरज उनकी नींद को बचाने के लिए, उनको आराम देने के लिए अपने रास्ते को बदलकर चल रहा है, तो जो लोग सारे आ़लम को दीन पर लाने के लिए और सारे आ़लम के लोगों का दीन बचाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों को ईमान पर लाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों को आमाल पर लाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों की ज़िन्दगी बनाने के लिए अपने दीन को लेकर बजाय कहीं कोने में बैठने के, सारे आ़लम के

अन्दर फिरेंगे, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का सूरज का निज़ाम, चाँद का निज़ाम और पूरे आलम का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम, यह क्यों हरकत में नहीं आएगा, यह क्यों उनके हाथों के ताबे न होगा।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है कि अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदे उठाने का ताल्लुक़ आमाल से नहीं है, यक़ीन से है। तुम लाख नमाज़ पढ़ो, लाख तहज्जुद पढ़ो, लाख तुम तिलावत करो, लाख तुम सुबह व शाम के ज़िक्र पूरे करो, तुम अल्लाह के नाम की ज़रबें लगाओ। अगर असबाब के ख़िलाफ़ नहीं चलोगे तो कभी यक़ीन नहीं बदलेगा। हमें तो अपनी दावत को लेकर हर-हर शोबे में जाना है। असबाब के ख़िलाफ़ बोलना पड़ेगा, तब कहीं जाकर यक़ीन बदलेगा। आमाल से यक़ीन कभी नहीं बदला करता, यक़ीन बदलेगा जब असबाब पर दावत की चोंट पड़ेगी। भाई यूँ आता है रिवायत में कि इतना ज़िक्र करो, इतना ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। लोग क्या कहने लगें? लोग तुम्हें पागल कहने लगें, इतना ज़िक्र करो। क्या हदीस का मतलब यह निकालोगे कि इतना ज़िक्र करो कि दिमाग़ ख़राब हो जाए। क्यों भाई क्या हदीस का मतलब यह निकालोगे कि इतना ज़िक्र करो कि पागल हो जाओ।

नहीं! यह बात नहीं कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। अगर तन्हाई में बैठकर ज़िक्र कर लिया तो वहाँ तुम्हें पागल कौन कहेगा? कोई कहेगा भाई पागल? कि यह पागल है, नहीं! बल्कि रिवायत यूँ कह रही है कि लोग तुम्हें पागल कहें इतना ज़िक्र करो। **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत, कितनी कसरत, इतनी कसरत कि लोग तुम्हें पागल कहें।

न रिवायत से यह मालूम होता है कि जब तन्हाई में ज़िक्र कर रहा है तो कौन पागल कहेगा, तो फिर रिवायत का क्या मतलब है। यूँ कहें कि रिवायत का मतलब यह है कि उसके **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत असबाब की कसरत के मुक़ाबले में आएगी, कि उसे पागल वे कहेंगे जिनके असबाब से उसकी दावत टकराएगी, कि असबाब के साथ टकराव होगा दावत का। अब जो नबी भेजा है हमने क़ौमों की तरफ़, हर क़ौम ने नबी को पागल कहा, यह है मतलब रिवायत का, कि इतनी कसरत से **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। तिजारतों का यक़ीन रखने वाले यूँ कहेंगे कि तिजारतों से न होने को कहने वाले पागल हैं, कारख़ानों से, दस्तकारियों से यक़ीन रखने वाले यूँ कहेंगे कि कारख़ानों का इनकार करने वाले पागल हैं, कि हर आने वाले नबी को उनकी क़ौम ने जो पागल कहा है:

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ

यानी उनके पास जो भी नबी आया उसे उन्होंने पागल या जादूगर ही बतलाया। इसके कहने की वजह यह है कि नबी की आवाज़ असबाब के ख़िलाफ़ है। अब बनेगा मतलब कि **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत करने वाले को पागल क्यों कहा जाता है। अगर दोस्ती कर ली है असबाब से और मेहनत हो रही है आमाल की तो मेरे दोस्तो, बग़ैर ईमान के बग़ैर अल्लाह के वायदों के यक़ीन के आमाल का मेयार क़ायम न होगा।

अब एक मेहनत है सालिहीन वाली, एक मेहनत है इलाक़ाई और क़ौमी अम्बिया वाली, एक मेहनत है सारे आलम के इनसानों को एक वक़्त में मेहनत का मैदान बनाने की। तमाम नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला मैदान हमारी मेहनत का मैदान है।

अगर कोई यह सोचे कि मैं तो अपनी ज़ात से अ़मल कर ही रहा हूँ कोई करे या न करे, तो मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! सिर्फ़ अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है, अब तो अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

असल में दावत के दो बुनियादी मक़ासिद हैं- पहला मक़सद यक़ीन की तब्दीली और दूसरा मक़सद माहौल की तब्दीली। यक़ीन की तब्दीली और माहौल की तब्दीली, ये दो असल में दावत के ख़ास बुनियादी मक़सद हैं। माहौल मजमूए की मेहनत के बग़ैर नहीं बदला करता, क्योंकि मजमूए का नाम माहौल है, अफ़राद (अलग-अलग व्यक्तियों) के अ़मल को माहौल नहीं कहते। अ़मल तो है माहौल नहीं है। माहौल बदलता है मजमूए से, अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना यह काफ़ी नहीं है, इसलिए कि जो आदमी अपनी ज़ात से अ़मल कर लेगा और दूसरों को अ़मल पर लाने की मेहनत न करेगा, उस माहौल की ख़राबी उसके अ़मल को ज़ाया कर देगी। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है। उम्मत को ख़सारे (घाटे) से निकालने का जो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त रास्ता बतला रहे हैं वह क्या है? यूँ कहते हैं कि उम्मत के ख़सारे से निकलने का रास्ता वह अल्लाह की तरफ़ दावत देना है।

दावत किसे कहते हैं? दावत कहते हैं एक-एक उम्मती को ईमान पर लाना और एक-एक उम्मती को आमाल पर लाना, यह दावत है। जो इस तरह दावत देगा यूँ कहें कि उससे माहौल बदलेगा। असल में ख़सारे (यानी घाटे) से निकलने के लिए चार चीज़ें शर्त हैं। क़ुरआन में अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त क़सम

खाकर फ़रमाते हैं कि उम्मत के इस ख़सारे से निकलने के लिए चार चीज़ें शर्त हैं- एक 'ईमान' दूसरा 'नेक आमाल' तीसरा **'एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद पर क़ायम रहने की हिदायत व तलक़ीन करते रहना'** चौथी **'एक-दूसरे को नेक आमाल की पाबन्दी की तंबीह व तलक़ीन करते रहना।**

चार चीज़ें ख़सारे से निकलने के लिए शर्त हैं। सिर्फ़ ईमान और नेक आमाल, यह भी ख़सारे से निकलने के लिए काफ़ी नहीं हैं। ख़सारे से निकलने के लिए सिर्फ़ ईमान और नेक आमाल काफ़ी नहीं हैं, यूँ क़ुरआन बतला रहा है। क़ुरआन बिलकुल अलग-अलग गिनवा रहा है चारों चीज़ों को। **एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद पर क़ायम रहने की हिदायत व तलक़ीन करते रहना,** और **एक-दूसरे को नेक आमाल की पाबन्दी की तंबीह व तलक़ीन करते रहना,** इसका नतीजा है ईमान और नेक आमाल। जितना दूसरों को ईमान पर लाएँगे उतना उसका ईमान बनेगा, जितना दूसरों को आमाल पर लाएँगे यह अपने आमाल में तरक़्क़ी करेगा। दो पर इसकी ज़िम्मेदारी है, दो इसके ज़ाती हैं। इसके दो ज़ाती क्या हैं? ईमान और नेक आमाल। हर शख़्स का अपना ईमान बने और हर शख़्स के अपने नेक आमाल। और दो की इस पर ज़िम्मेदारी है कि हर उम्मती को ईमान पर, हर उम्मती को आमाल पर लाना है। ये चार काम हैं ख़सारे से निकलने के लिए। दो इसके ज़ाती दो पर इसकी ज़िम्मेदारी। जब ये चार काम होंगे तब उम्मत ख़सारे से निकलेगी वरना मेरे दोस्तो! उम्मत ख़सारे (घाटे) में पड़ी हुई है।

मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह लिखा है 'मआ़रिफुल क़ुरआन' में कि जो आदमी अपनी ज़ात में अ़मल करने को काफ़ी समझे और अपने मुताल्लिक़ीन, अपने दोस्त-अहबाब और दूसरों के ईमान और आमाल की फ़िक्र न करे तो उसने अपनी नजात का रास्ता बन्द कर लिया है। यह साफ़ लिखा है कि उसने अपनी नजात का रास्ता बन्द कर लिया जिसने अपनी ज़ात से ईमान और अपनी ज़ात से आमाल को काफ़ी समझ लिया।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! असल में दावत की मेहनत अब आ़लमी है कि हर उम्मती ईमान और नेक आमाल पर आ रहा हो। ईमान और नेक आमाल पर लाने से मजमूआ़ बदलेगा, और जब मजमूआ़ बदलेगा तो ईमान और आमाल का माहौल क़ायम होगा, वह होगा इज्तिमाई (सामूहिक) मेहनत से। अभी हम जिस रुख़ पर जा रहे हैं, हमारा रुख़ यह बना हुआ है कि भाई मेहनत करो ताकि लोग आमाल पर आ जाएँ। एक है इज्तिमाई काम और एक है इन्फ़िरादी

आमाल। इन्फ़िरादी आमाल में जो हक़ीक़त पैदा होगी वह इज्तिमाई दावत से होगी।

असल में हमें दावत के ज़रिये से उस मेहनत को ज़िन्दा करना है जो मेहनत आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ईमान और आमाल को बनाने के लिए अ़ता फ़रमाई। अभी तो उस मेहनत को वजूद देना है। यह हर साल के चार महीने और महीने के दस दिन और रोज़ाना के आठ घन्टे।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि साल का चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, रोज़ाना की मस्जिद और घर की तालीम, यह तो सिर्फ़ अपनी ज़ाती ज़िन्दगी में दीन आते रहने के लिए है। अगर यह चाहते हो कि माहौल बदले, मजमूआ बदले और आ़लमी सतह (स्तर) पर हक़ क़ायम हो और बातिल मग़लूब हो, अगर यह चाहते हो तो उसके लिए लाज़िम होगा कि अब अपनी ज़िन्दगियों और अपने जान व माल का तिहाई निकालो।

असल दावत आधे की थी, आधी जान और आधा माल और आधा वक़्त, लेकिन अगर आधे की हिम्मत नहीं है तो तिहाई जान और तिहाई माल और तिहाई वक़्त आठ घन्टे मस्जिद की आबादी के लिए, दस दिन अपने मक़ाम के तक़ाज़ों के लिए, चार महीने बाहर के लिए कि जहाँ का तक़ाज़ा हो, अन्दरूनी या बाहर का, साल के चार महीने, महीने के दस दिन और रोज़ाना के आठ घन्टे। यह निसाब है माहौल को बदलने के लिए। वह निसाब था सिर्फ़ अपनी ज़ाती ज़िन्दगी में दीन लाने के लिए। इसलिए मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! अब नीयतें करो हर साल चार-चार महीने की।

واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰه رب العالمین

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कामयाबी का दारोमदार अल्लाह तआला ने ईमान के साथ मश्रूत किया है।

तारीख़ 16 नवम्बर 1998 ई. स्थान बाँदा हथौरा (उ. प्र.)

मेरे भाइयो, दोस्तो बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसान को दुनिया में सबसे ज़्यादा अशरफ़ (सम्मानित) और सबसे ज़्यादा क़ीमती बनाया है। हर चीज़ फ़ना के लिए, हर चीज़ टूटने के लिए बनाई है, लेकिन इनसान को अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए बनाया है। यह अपने बनने के एतिबार से हमेशा से तो नहीं है लेकिन रहने के एतिबार से यह हमेशा के लिए है। हमेशा के लिए जन्नत या हमेशा के लिए दोज़ख़।

यह इनसान वक़्ती नहीं है कि यह खा-पीकर और अपनी ज़रूरतें पूरी करके दुनिया में ख़त्म हो जाए और इसका वजूद बाक़ी न रहे, बल्कि इनसान दुनिया के अन्दर आख़िरत को बनाने के लिए भेजा गया है। यहाँ से इसे दूसरे आ़लम (दूसरी दुनिया यानी आख़िरत) में मुन्तक़िल होना हैं इसी पर हमारा ईमान है और इसी पर हमारा यक़ीन है, कि मरना है, ख़ुदा के सामने हाज़िरी देनी है, और ख़ुदा के सामने हाज़िरी देकर हर एक को हिसाब देना है। तो दुनिया में इनसान ख़त्म हो जाने के लिए नहीं है, दुनिया में इनसान अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए नहीं है बल्कि अल्लाह तआला ने इसे कामयाब करने के लिए बनाया है। अब कामयाबी का दारोमदार अल्लाह तआला ने ईमान के साथ मश्रूत किया है। बग़ैर उसकी ज़ात को पहचाने हुए इनसान किसी लाईन से कामयाबी हासिल कर ले, ख़ुदा की क़सम नाकामी के अ़लावा और हमेशा की नाकामी के अ़लावा कोई रास्ता नहीं है। अगर यह इनसान ईमान को बनाए बग़ैर दुनिया से जा रहा है।

इसलिए हर उम्मती की उसकी सबसे पहली हाजत, यह पानी के बग़ैर तो रह सकता है, हवा के बग़ैर तो रह सकता है। ये अल्लाह तआला ने दो चीज़ें ऐसी बनाई हैं कि हर अ़क़्लमन्द यह कहता है कि हवा और पानी के बग़ैर गुज़ारा नहीं है, लेकिन यह मुम्किन है कि हवा और पानी के बग़ैर आदमी जी

ले, लेकिन यह मुम्किन नहीं है कि बग़ैर ईमान और नेक अ़मल के कामयाब हो जाए। इसकी कोई संभावना नहीं है। इसलिए अम्बिया को हर ज़माने में इनसानों की कामयाबी के लिए भेजा और हर ज़माने में अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया कि इनसानों की कामयाबी के लिए अम्बिया को एक मेहनत और अम्बिया को एक कलिमा देकर भेजा है। तमाम अम्बिया की यह मुश्तरका (संयुक्त) बुनियाद है, कि अम्बिया अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ इनसान के रुख़ को **"असबाब से ईमान की"** और **"दुनिया से आख़िरत"** की और **"चीज़ों से आमाल"** की तरफ़ फेरने के लिए भेजे जाते हैं। अम्बिया आकर अपनी मेहनत का मैदान किसी चीज़ को नहीं बनाते हैं, इनसानों को मेहनत का मैदान बनाकर उनके दिलों को अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फेरते हैं, कि दिल अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और दिल अल्लाह की ज़ात से फिरे होते हैं।

अपने बनाने वाले को, अपने पैदा करने वाले को, अपने पालने वाले को, यह इनसान जब भूल जाता है तो यह ज़िन्दगी की हर लाईन में, यह ताजिर हो तो तिजारत में, मुलाज़िम हो तो मुलाज़मत में, हाकिम हो तो हुकूमत में, ज़मीनदार हो तो काश्तकारी में, यह दुनिया की जिस लाईन में भी होता है, जब अल्लाह को नहीं पहचानता और अपने बनाने वाले को नहीं जानता तो यह दुनिया के किसी भी शोबे में अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर चलना तो दूर की बात है, यह अल्लाह को भूलकर, यह अल्लाह के अहकामों को तोड़कर चलता है। ख़ुदा का हर हुक्म इस बुनियाद पर टूटता है कि यह अल्लाह तआ़ला को पहचानता नहीं है, और अपने बनाने वाले को जानता नहीं है। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम आकर इसकी मेहनत करते थे कि उनका रुख़ अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिर जाए।

मेरे प्यारो, दोस्तो! इसके लिए पहले अम्बिया का रुख़ ठीक किया जाता है। अल्लाह तआ़ला अपनी बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को कराते हैं, और अम्बिया के रुख़ को सही करते हैं, और उनके रुख़ को सही करके फिर उनको क़ौम के रुख़ को सही करने के लिए भेजते हैं। अल्लाह तआ़ला पहले नबियों के रुख़ को सही करते हैं कि अल्लाह का ग़ैर पहले उनके अन्दर से निकल जाए। फिर नबियों को अल्लाह तआ़ला बराहे-रास्त (बिना किसी वास्ते के, डायरेक्ट) हिदायत देते हैं, और दूसरों की हिदायत का उनको ज़रिया बनाकर भेजते हैं।

अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात का तआ़रुफ़ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को पहले खुद करवाते हैं, और अल्लाह के ग़ैर से उनके रुख़ को फेरकर सिर्फ़ अपनी ज़ाते आ़ली की तरफ़ फेर लेते हैं। और फिर जब अच्छी तरह ठोंक-बजाकर उनको देख लेते हैं कि उनका रुख़ हमारे ग़ैर की तरफ़ से फिर गया है, फिर अल्लाह तआ़ला उनसे काम लेते हैं, फिर अल्लाह तआ़ला उन्हें काम के लिए भेजते हैं कि जाओ तुम ताजिरों में काम करो और तुम ज़मीनदारों में काम करो, तुम कारख़ाने वालों में काम करो, तुम अक्सरियत वालों में काम करो, हर लाईन के लोगों में अल्लाह तआ़ला ने नबियों को भेजा है। लेकिन अल्लाह तआ़ला पहले नबियों का रुख़ सही करवाते हैं कि उनके दिल में से अल्लाह का ग़ैर निकल जाए। तो जितना नबियों के अन्दर से अल्लाह का ग़ैर निकल जाता है उतना ही ये दूसरों की हिदायत का सबब बनते हैं। अल्लाह तआ़ला एक-एक चीज़ से होने का यक़ीन उनके दिलों से निकालते हैं।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम तो जब यह कह उठे कि मैंने हर बने हुए से अपने रुख़ को बनाने वाले की तरफ़ फेर लिया, जब उनका रुख़ इस तरह फिर जाता है अल्लाह के ग़ैर से, फिर अल्लाह तआ़ला उनसे काम लेते हैं। इसलिए बुनियादी बात और तमाम अम्बिया की बुनियादी चीज़ कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** है, यही सबकी बुनियाद है। जब तक यह कलिमा दिल का कलिमा नहीं बनेगा और जब तक दिल का रुख़ सही नहीं होगा और जब तक दिल से अल्लाह का ग़ैर नहीं निकलेगा उस वक़्त तक कोई अ़मल नहीं बन सकता। और जब तक आमाल नहीं बनेंगे कामयाब नहीं होंगे। सारे आमाल का दारोमदार ईमान पर और सारी कामयाबियों का दारोमदार आमाल पर। इसलिए अम्बिया सबसे पहले इस कलिमे की दावत देते हैं:

قُولُوا لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوا

यानी ऐ लोगो! **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कह लो कामयाब हो जाओगे। ताजिरों पर भी यही कलिमा, काश्तकारों पर भी यही कलिमा, बाग़ वालों पर भी यही कलिमा, अक्सरियत वालों के भी ख़िलाफ़ यही कलिमा, अम्बिया की मेहनत का नक़्शा और उनके कलिमे की बुनियाद उनकी हर क़ौम के ख़िलाफ़ होती है, इसलिए अम्बिया पर हालात आते हैं, क्योंकि उनकी आवाज़, उनका कलिमा उन लोगों के ख़िलाफ़ होता है जिन लोगों की तरफ़ उनको भेजा जाता है, कि कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** उनके हर छोटे बड़े नक़्शे के ख़िलाफ़ होगा, कि अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के ग़ैर से नहीं होता है।

यह इस यक़ीन के बनाने का और यक़ीन के पैदा करने का, यह सारी मेहनत, "**दावत इलल्लाह**" (यानी अल्लाह की तरफ़ बुलाने) की इस मेहनत का मक़सद और ख़ुलासा यही है, कि अल्लाह का ग़ैर हमारे अन्दर से निकल जाए और अल्लाह की बुलन्द ज़ात से ताल्लुक़ पैदा हो जाए। इसकी मेहनत के लिए अम्बिया को भेजा जाता है। ये आकर मुल्क या माल को या चीज़ों को या दुनिया के नक़्शों को अपनी मेहनत का मैदान नहीं बनाते, बल्कि ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इसलिए भेजे जाते हैं ताकि अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली की तरफ़ हर एक का रुख़ फिर जाए। पहले ही दिन से जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमाया:

قُمْ فَاَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ

कि नबी जी! उठिए डराइये और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

मेरे प्यारो, दोस्तो बुज़ुर्गो! हमारे माहौल में अल्लाह के ग़ैर को इतना बोला जाता है कि अल्लाह की बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ कराना हम अपनी ज़िम्मेदारी महसूस ही नहीं करते, कि मुझे तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की ज़ात व सिफ़ात का तआ़रुफ़ कराने के लिए ही भेजा गया था। यूँ कहें कि हमारे माहौल में अल्लाह के ग़ैर को इतना बोला जाता है कि अल्लाह की ज़ात का यक़ीन बनना तो दूर की बात है अल्लाह की ज़ाते आ़ली से होने का यक़ीन पैदा ही न हो। यह जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आप से पहले सारे अम्बिया की मेहनत की बुनियाद रही है: **ला इला-ह इल्लल्लाहु।**

और ऐसा नहीं है कि नबियों का कलिमा बदल गया हो, अक्सरियत को देखकर या किसी और सबब इख़्तियार करने वालों को देखकर उनका कलिमा बदल गया हो। यूँ कहें ऐसा नहीं होता, बल्कि हर ज़माने में अम्बिया की बुनियाद **अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के ग़ैर से नहीं होता,** यह बुनियाद मेरे दोस्तों जितनी मज़बूत हो जाती है उतना ईमान दिल के अन्दर मज़बूत हो जाता है। ख़ैर की तमाम वज्हों (यानी कारणों) और दुनिया में जो ख़ैर अल्लाह की तरफ़ से आनी है, और जो दुनिया का निज़ाम चलेगा, वह सारा-का-सारा ईमान ही की बुनियाद पर चलेगा। इनसान पर हालात आते हैं, यह उन हालात में अपनी मरज़ी के मुताबिक़ हालात चाहता है। हालात से तंग आया हुआ है, उन हालात के बनाने का कोई रास्ता नहीं सिवाय ईमान बनाने के। अल्लाह तआ़ला ने सारे निज़ाम को, न चीज़ों से जोड़ा है, न मुल्क व माल से जोड़ा है, न कारख़ानों से जोड़ा है और न हुकूमतों से जोड़ा है, किसी

से नहीं जोड़ा है, अल्लाह तआ़ला ने तमाम हालात को आमाल से जोड़ा है। दुनिया के तमाम हालात को आमाल से जोड़ा है और तमाम आमाल को ईमान से जोड़ा है, कि इनसान के जिस्म से निकलने वाले हालात जैसे होंगे अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ज़ाते आ़ली की तरफ़ से उसके मुताबिक़ फ़ैसले होंगे।

यह देखा जाएगा कि अ़मल कैसा है। अगर अ़मल ऐसा है कि अल्लाह तआ़ला कामयाब करें तो बावजूद मुल्क व माल के न होने के और चीज़ें न होने के अल्लाह तआ़ला आमाल पर हर हाल में कामयाब फ़रमाएँगे। अगर चीज़ों का ढेर है और माल सरमायादारी के नक़्शों में है और अक्सरियत के नक़्शों में है, या तिजारतों के नक़्शों में है, हथियारों के नक़्शों में है, और जिस्म से निकलने वाले आमाल अगर ठीक नहीं हैं तो उन सारे नक़्शों के बावजूद अल्लाह तआ़ला उसे नाकाम करके दिखाएँगे जैसा कि पहले दिखला चुके हैं। सारा कुरआन इसकी गवाही देता है, सारा कुरआन इससे भरा हुआ है। अल्लाह तआ़ला ने जब फ़ैसला किया है किसी की कामयाबी और नाकामी का, वह अल्लाह तआ़ला ने ईमान और आमाल पर किया है।

इसलिए मेरे प्यारो, दोस्तो! बुनियादी बात, बुनियादी चीज़ सारे नयों से और पुरानों से, अपनों से और ग़ैरों से, जो बुनियादी बात कहनी है वह यह है कि जब तक कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की बुनियाद मज़बूत नहीं होगी उस वक़्त तक न इबादत बनने वाली है, न मामलात बनने वाले हैं, न अख़्लाक़ बनने वाले हैं, न ही समाज बनने वाला है। कुछ नहीं होने वाला जब तक कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** दिल का कलिमा न बन जाए। तमाम हालात का बनना और बिगड़ना वह इसपर मौक़ूफ़ है।

इसलिए जब अम्बिया अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते थे तो उनकी क़ौमों का हाल बहुत बिगड़ा हुआ होता था। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो सबसे सख़्त ज़मीन मिली, क़ुरैश की, ऐसे अखखड़ और ऐसे ज़ाहिल कि अंधेरों पर अंधेरे। न अल्लाह को जानते थे न पहचानते थे। ऐसे माहौल में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा गया। तमाम अम्बिया की तरह आपने भी यही मेहनत की और आपकी मेहनत की बुनियाद भी यही कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** था। आपने हर एक को इसी पर दावत दी कि **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहो कामयाब हो जाओगे। फिर इस **ला इला-ह इल्लल्लाहु** के साथ एक मेहनत दी, इसलिए कि हर कलिमे के साथ एक मेहनत है और कोई कलिमा बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं होता।

कलिमा **'तिजारत'** (व्यापार) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत है। कलिमा **'ज़राअ़त'** (खेती-बाड़ी) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत छुपी हुई है। कलिमा **'मुलाज़मत'** (नौकरी) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत है।

इसी तरह कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** एक कलिमा है और इस कलिमे के साथ एक मेहनत है। उस मेहनत को जब किया जाता है तब कलिमा बनता है। कलिमा क्या बनता है? यूँ कहें कि उस मेहनत से यह कलिमा दिल का कलिमा बनता है। फ़रमाया है कि तू अपने दिल से पूछ ले इसलिए कि कलिमे की जगह दिल को बनाया है। न हाथों को, न ज़बानों को, न आँखों को, न दिमाग़ों को, न किताबों को, मेरे प्यारो, दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह कलिमे की जगह सिर्फ़ दिल में है। अगर यह इस कलिमे को ज़बान से कह रहा है तो ये कलिमे के अल्फ़ाज़ हैं। अगर लिख रहा है तो ये कलिमे के हुरूफ़ हैं। अगर कानों में है तो यह कलिमे की आवाज़ है। अगर दिमाग़ में है तो यह कलिमे का मफ़्हूम और मतलब है। इसको कलिमा नहीं कहते, कलिमा कहते हैं जो दिल के अन्दर जम जाए और जड़ पकड़ जाए। यह कलिमा दिल के अन्दर उतर कर हर-हर अंग से इस कलिमे के तक़ाज़े पूरे होंगे और जिस्म के हर-हर अंग से इस्लाम ज़ाहिर होगा।

इस्लाम तो जब नज़र आएगा जब ईमान होगा। अगर ईमान नहीं है तो इस्लाम को नहीं देखा जा सकता। इस्लाम मदीना मुनव्वरा में हर आदमी के सर से पैर तक नज़र आता था कि यह है इस्लाम।

मेरे दोस्तो, आज दुनिया के अन्दर जितने हालात बिगड़ रहे हैं और जितनी अफ़रातफ़री है। इज़्ज़तें वे ख़तरे में, माल-दौलत वे ख़तरे में, जानें वे ख़तरे में, इस सबकी वजह यह है कि हमने कलिमे की मेहनत को छोड़ दिया है। जब इस कलिमे पर मेहनत हो रही थी तो ईमान बन रहा था। जब ईमान बन रहा था तो इबादत बन रही थी। मामलात बन रहे थे। अख़्लाक़ दुरुस्त हो रहे थे। समाज साफ़-सुथरा हो रहा था, बल्कि इनसान बन रहा था। इनसान बन रहा था ईमान के बनने से, अब ईमान के बनाने की जब मेहनत छूटी और ईमान के बनाने की मेहनत क्यों छूट गई? मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! ईमान के बनाने की मेहनत इसलिए छूट गई कि इनसान ने अपनी ज़िम्मेदारी छोड़ दी:

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ، تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ.

तुम इनसानों को नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजे गए थे। तुम काश्तकार बनाकर, ताजिर बनाकर, ज़र्मीनदार बनाकर, मुलाज़िम बनाकर नहीं भेजे गए थे। बल्कि तुम इनसानों को नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजे गए थे। और वह नफ़ा पहुँचाना क्या है? कि इनसान यूँ सोचता रहे कि जानवरों की तरह मेरी ज़ात से किसी को फ़ायदा पहुँच जाए। क्या फ़ायदा, नफ़ा पहुँचाना किसको कहते हैं? कि जिसके पास अक़्ल है उसकी अक़्ल से दूसरों को फ़ायदा, कि जिसके पास माल है उसके माल से दूसरों को फ़ायदा, कि जिसके पास इज़्ज़त और ओहदा है उससे दूसरों को फ़ायदा।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! बेशक यह एक बात है, एक अख़्लाक़ी तक़ाज़ा है कि इनसानों को इनसानों से फ़ायदा पहुँचे, लेकिन इसमें तो इनसान और हैवान सब बराबर हैं। बहुत-से जानवर ऐसे हैं जिनसे इनसानों को फ़ायदा पहुँचता है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने सारे जानवर इसी लिए बनाए हैं कि ये बोझ उठाने वाले, ये दूध देने वाले, ये हल खींचने वाले, ये काटकर खाए जाने वाले, अल्लाह तआ़ला ने जितनी भी क़िस्म के जानवर बनाए हैं, मेरे दोस्तो! ज़रा सोचने की बात है कि हमारी ज़ात से इनसानों को फ़ायदा सिर्फ़ उनकी दुनिया को पहुँच रहा है, क्या इसलिए हम भेजे गए थे? या मुझसे मुताल्लिक़ कोई दूसरा काम है? हर चीज़ का बनाने वाला वह इनसान का ख़ालिक़ है, इनसान को बनाने वाला है, वह ख़ुद फ़रमाता है कि वही बनाने वाला है जिसने बनाया है, अगर वह नहीं जानेगा कि किस लिए बनाया है तो और कोई क्या जानेगा। उसने इनसानों को इसी लिए बनाया है:

تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

यानी तुम लोगों को अच्छे कामों का हुक्म करो और उन्हें बुराइयों से रोको। यह है हमारे बनाए जाने का मक़सद, यह है भेजे जाने का मक़सद, कि हमने तुम्हें इनसानों की भलाई के लिए, नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजा है। यह थी वह मेहनत जिस मेहनत पर ईमान बन रहा था, लेकिन जब उम्मत के अन्दर से मेहनत छूट गई तो ईमान के बनाने का उमूमी ज़ेहन और उमूमी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई, कि ईमान को बनाना उमूमी ज़िम्मेदारी है। बहुत कम लोगों में ईमान और आमाल के बनाने का ख़्याल पैदा हुआ कि भाई ईमान और आमाल बनाने चाहिएँ, इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो मेहनत लेकर तशरीफ़ लाए उससे आपने ईमान और आमाल के बनाने का इज्तिमाई (सामूहिक) ज़ेहन

बनाया था, कि हर एक इज्तिमाई तौर यह ज़िम्मेदारी महसूस करता था कि ईमान और आमाल के बग़ैर कामयाबी नहीं है।

यह सारी मेहनत और यह काम और नेक आमाल के बनाने का मेरे दोस्तो! हर फ़र्द के ज़िम्मे है, और इसके बने बग़ैर दुनिया के अन्दर न दुनिया में कोई कामयाबी है और न आख़िरत में कामयाबी है। इसलिए तमाम हालात का सुधार और तमाम कामयाबियों की बुनियाद वह ईमान का बनाना है। जब ईमाना वाले पर हालात आते हैं तो यह ईमान वाला हालात के अन्दर अपने आमाल को बनाता है। और जब इनसान ईमान को नहीं सीखता और हालात उसके ऊपर अल्लाह की तरफ़ से आते हैं, तब यह बजाय आमाल के बनाने के अपने अ़मलों को और बिगाड़ता है, इसलिए हदीस में आता है कि ईमान की मिसाल और मोमिन की मिसाल ऐसी है कि जैसे घोड़ा होता है कि घोड़े का मालिक उसे बाँध देता है और उसके पावँ में बाँधकर लम्बी रस्सी छोड़ देता है, और यह घोड़ा मैदान के अन्दर घास खाता फिरता है, लेकिन जब इस घोड़े की रस्सी पूरी होती है और इसके पैर में झटका लगता है तो फ़ौरन यह घोड़ा अपने खूँटे पर वापस आ जाता है। यह घोड़े का मिज़ाज है कि जब उसको झटका लगता है तब यह अपने खूँटे पर वापस आ जाता है, वरना खाँता हुआ आगे-आगे चलता रहता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह दुनिया बड़ी हरी-भरी और मीठी है कि ताजिर भी इसमें चलता रहेगा और ज़मीनदार भी इसमें चलता रहेगा और मुलाज़िम भी इसमें चलता रहेगा और कहीं ख़्याल भी नहीं आएगा कि झटका लगा है। इस झटके का क्या मत्लब है? जब ईमान होता है तो झटके बतलाते हैं कि मियाँ यह झटका इसलिए लगा है कि तुम्हारा यह अ़मल ख़राब हो रहा है, इस अ़मल को दुरुस्त कर लो। ताजिरों को उनकी तिजारत में, ज़मीनदारों को उनकी काश्तकारी में, मुलाज़िमों को उनकी मुलाज़मतों में, सुबह व शाम जो झटके लगते हैं वे इसलिए लगते हैं ताकि सही रास्ते पर आ जाएँ। लेकिन अगर ईमान होता है तो यह बात दिल में आती है कि ये जो हालात आ रहे हैं, ये हालात बतला रहे हैं कि आमाल बिगड़ रहे हैं, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने हालात को कहीं से नहीं जोड़ा सिवाय आमाल के।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! चीज़ों से हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है। शिफ़ा से दावाओं का कोई ताल्लुक़ नहीं है। इसी तरह मसाइल के हल का मालों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, और मसाइल का हुकूमतों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, बल्कि

ज़मीन और आसमान के दरमियान जो कुछ होता है, वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला अपने हुक्म से करते हैं। लेकिन यह अल्लाह तआला का उसूल है, क़ानून है, हमेशा का यह ज़ाबता है कि वह जो कुछ करते हैं वह इनसानों के अ़मलों पर करते हैं। तो यूँ कहें कि यह जो घोड़ा चलता रहता है घास खाते हुए, जब इसको झटका लगता है रस्सी पूरी होने पर तो यह अपने खूँटे पर वापस आ जाता है, लेकिन यह इनसान जानवर से भी गया-गुज़रा है कि जब यह ईमान नहीं बनाता और अल्लाह की बुलन्द ज़ात को सामने रखकर नहीं चलता, इसपर सुबह व शाम हालात आयें लेकिन यह उन हालात में अपने अ़मलों को दुरुस्त नहीं करता और अ़मलों को अपने और बिगाड़ता है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हम बड़ा अ़ज़ाब लाने से पहले छोटे-छोटे हालात उसपर लाते हैं ताकि उसकी समझ में आ जाए, यह मेरी तरफ़ रुजू हो जाये और सीधे रास्ते पर आ जाए। शायद उसकी समझ में आ जाए, यह अपना रुख़ सही कर ले। लेकिन अगर उन हालात में उसकी आँख नहीं खुलती तो फिर अल्लाह तआला उसे मौत देकर हमेशा के लिए आख़िरत का अ़ज़ाब शुरू कर देते हैं। यूँ कहें कि यह ईमान सिखलायेगा और ईमान बतलायेगा, जितने भी हालात इस वक़्त दुनिया में आ रहे हैं यह इनसान अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिर आये, इसके लिए यह आ रहे हैं। लेकिन बड़े ख़ुश-क़िस्मत (भाग्यशाली) हैं वे इनसान जिनको ये हालात पलट दें और ये हालात उनको सही रास्ते पर ले आयें।

इसलिए मेरे प्यारो, दोस्तो, बुज़ुर्गो! बुनियादी चीज़ यक़ीन का बनाना है। यह ईमान बन जाएगा तो हर चीज़ बनती चली जाएगी, हर चीज़ अपनी जगह पहुँच जाएगी। लेकिन अब यह इनसान अपने हाल को हाल से बदलना चाहता है। यह देखता है कि मेरी तिजारत पर हालात आ रहे हैं तो यह अपनी तिजारत को बढ़ा देता है, कि एक दुकान से दो दुकानें, दो दुकानों से चार दुकानें। अब भी हालात ठीक नहीं हो रहे तो एक दुकान और ले लो। हालात से हालात नहीं बना करते, आमाल से हालात बना करते हैं। अल्लाह तआला ने तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रिये से यही बात कहलवाई है और यही मेहनत अम्बिया ने आकर की है, और सारे नबियों का ख़ुलासा यही है कि हालात से हालात नहीं बना करते, बल्कि आमाल से हालात बना करते हैं। हालात का तो चीज़ों से कोई ताल्लुक़ ही नहीं है, कि चीज़ों पर मेहनत करो और हालात दूर हो जायें। दवाएँ बनाओ ताकि बीमारी ख़त्म हो जाए।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है चीज़ों से, और हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है हुकूमतों से, हालात का तो ताल्लुक़ आमाल से है और आमाल का ताल्लुक़ ईमान से है। अब अल्लाह तआ़ला के यहाँ अ़क्लमन्द इनसान वे कहलाते हैं जो अपने हालात को सुधारने के लिए अपने आपको अ़मलों पर ले आते हैं, और अपने हालात को सुधारने के लिए अपने आपको ईमान पर ले आते हैं।

यूँ कहें कि यह ईमान क्या है? यह अल्लाह का ग़ैर हमारे दिलों से कैसे निकले? अल्लाह की ज़ाते आ़ली के साथ हमारा ताल्लुक़ कैसे मज़बूत हो?

यूँ कहें कि इसको सिखाने के लिए और इसको बताने के लिए अम्बिया भेजे गए और सबसे ज़्यादा मेहनत इसी बात की की गई। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तैईस (23) साल, आप आख़िरी नबी, आपकी शरीअ़त, कामिल शरीअ़त, आपकी उम्मत सबसे बड़ी उम्मत, आपकी उम्मत आख़िरी उम्मत, आपके पास कुल वक़्त तैईस (23) साल का। उन तैईस (23) सालों में से तेरह (13) साल ईमान ईमान ही की मेहनत करते रहे। दस (10) साल में तो सारे अहकामात दिए लेकिन तैईस (23) साल में से तेरह साल वह ईमान, ईमान, ईमान। ईमान इस तरह सिखाया है कि सहाबा ख़ुद फ़रमाते हैं कि हमने ईमान सुना नहीं हमने ईमान पढ़ा नहीं कि ईमान का मुताला (अध्यन) किया हो, या ईमान सुना हो या एक बार **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहकर मुत्मईन हो गए हैं, बल्कि हमने ईमान सीखा है। किस तरह सीखा है कि हमने ईमान की मजलिसें क़ायम कीं, एक-एक को दो-दो को चार-चार को लेकर बैठे, कि आओ थोड़ी देर ईमान ले आयें:

اجلس بنا آمنوا ساعة

यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा यह तो यूँ कहें कि आओ थोड़ी देर के लिए ईमान ले आयें। वहाँ यह दावा करने वाला कोई नहीं था कि मैं ईमान वाला हूँ। बल्कि यूँ कहें कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें। जब यह जुमला अ़जीब-सा लगा कि क्या हम ईमान वाले नहीं हैं तो एक सहाबी ने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शिकायत की कि यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा हमसे यूँ कहता है कि आओ थोड़ी देर ईमान ले आयें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हंसकर फ़रमाया कि अल्लाह रहम फ़रमाये इसपर कि ईमान की मजलिसों को पसन्द करता है ताकि ईमान की तरफ़ से बेफ़िक्री न होने पाए।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! सहाबा-ए-किराम ईमान के बनाने की मेहनत में हर वक़्त लगे रहते थे, कि जब ईमान की बात नहीं होगी, जब अल्लाह की ज़ात की तारीफ़ नहीं होगी, जिस लम्हे जिस रात में, जिस दिन में, जिस बाज़ार में, जिस मस्जिद में, जिस घर में, जिस कारख़ाने में, जिस हुकूमत में जहाँ अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ नहीं होगा, जिस लम्हे नहीं होगा, उसी लम्हे अल्लाह के ग़ैर को बोलेगा, जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को बोलेगा, जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को सोचेगा और जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को सुनेगा, उस लम्हे उसका ईमान मुतास्सिर होगा और उसका ईमान कमज़ोर होगा। वहाँ तो ऐसा माहौल बनाया था कि अल्लाह के ग़ैर के बोलने का कहीं मौक़ा ही नहीं था।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! अल्लाह तआ़ला के यहाँ ज़बान से **ला इला-ह इल्लल्लाहु** ख़ाली कह देना, इतनी आसानी से कुबूल नहीं हो जाता, बल्कि अल्लाह तआ़ला आज़माइशों में डालकर और अल्लाह तआ़ला हालात में उसको फंसाकर उसके ईमान को परखते हैं, कि देखें इन हालात में यह अ़मलों को बनाता है या अ़मलों को बिगाड़ता है। तो अल्लाह तआ़ला हालात से उसके ईमान को बनवाते हैं और यह देखना चाहते हैं कि यह आदमी ईमान में पुख़्ता है या नहीं। सहाबा-ए-किराम ईमान में ऐसे पार उतर गए थे कि अगर सोते हुए आदमी को भी उठाकर पूछा जाए कि **"ऐ हारिस! तुम अपनी सुबह कैसे करते हो?"** तो हारिस सोते में उठकर कच्ची नींद में जबकि दिमाग़ सोया हुआ है और हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हु दावे के साथ यूँ कहें कि **मैं ईमान के साथ सुबह कर रहा हूँ।**

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! यह ईमान इस तरह नहीं बन जाएगा बैठे-बैठे, इस ईमान के साथ एक मेहनत है, कि अल्लाह की बुलन्द ज़ात का यकीन दिल में इस तरह दाख़िल हो जाए कि अगर कोई यूँ कहे कि फ़लाँ ने यूँ कर दिया और फ़लाँ से यूँ हो गया और फ़लाँ यह कर देगा, तो फ़ौरन यह बात दिल में खटके कि यह आदमी ग़लत कह रहा है, करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। वह अकेले जो चाहते हैं करते हैं। वह अपने काम में किसी के मश्विरे के, किसी की मदद के, किसी की नुसरत के पाबन्द नहीं हैं। वह जो चाहते हैं तने-तन्हा करते हैं। यह हर आदमी के हर वक़्त दिल में उतरी हुई बात हो कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है वह बराहे-रास्त (डायरेक्ट) अल्लाह की ज़ात से हो रहा है।

जब तक चप्पे-चप्पे पर इसका बोला जाना नहीं होगा और सुबह व शाम

इसको सोचना नहीं होगा उस वक़्त तक ईमान हमारे दिलों में नहीं जमेगा। जब तक ईमान नहीं बनेगा तब तक कुछ नहीं बनेगा। इसलिए कुरआन वाला ईमान चाहिए हमारे वाला ईमान नहीं, बल्कि कुरआन वाला ईमानः

امِنُوا كَمَا امَنَ النَّاسُ

कि ऐसा ईमान हो जैसा ईमान सहाबा-ए-किराम लाए हैं। सहाबा का ईमान सिर्फ़ इतना ही नहीं कि मैं नबी के नबी होने पर ईमान ले आया, बल्कि हर-हर चीज़ पर ईमान लाए हैं, यानी जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कुछ लेकर आए हैं, जितना यक़ीन आपके नबी होने पर था उतना ही यक़ीन उस तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी पर था जो ज़िन्दगी का तरीक़ा लेकर आप आए हैं। उस तरीक़े को इख़्तियार करके कामयाबी का उतना ही यक़ीन था जितना यक़ीन नबी के नबी होने का था। यह नहीं कि मैं यक़ीन करता हूँ कि आप नबी हैं, आप आख़िरी नबी हैं, आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है, इसका तो यक़ीन करता हूँ, लेकिन मेरे मसाइल का हल, वह नबी वाले इल्म में, वह नबी वाली तालीम में, वह नबी वाले तरीक़े में, या वह नबी वाले आमाल में, मेरे मसाइल का हल इसमें है या नहीं इसका यक़ीन इनसान नहीं रखता। इनसान यह तो कह देगा कि हमें आपके नबी होने का यक़ीन है, लेकिन ज़िन्दगी के हर शोबे में नबी की तालीमात पर और नबी के तरीक़े पर चलने में कामयाब होने का यक़ीन और मसाइल के हल का यक़ीन इनसान नहीं रखता है, जिस तरह नबी के नबी होने पर यक़ीन रखता है।

सहाबा-ए-किराम जितना यक़ीन नबी का 'नबी-ए-मुर्सल' (यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से नबी बनाकर भेजा हुआ) होने का रखते थे, उतना ही मसाइल के हल का यक़ीन आपकी लाई हुई तालीमात पर रखते थे। अगर कोई आकर अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से यह कहे कि तुम्हारा मकान जल गया तो अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु जितना यक़ीन नबी के नबी होने का रखते हैं उतने ही यक़ीन के साथ यूँ कहते हैं कि मुझे नबी ने वह दुआ सिखलाई है कि अगर वह उस दुआ को पढ़ लें तो कोई मुसीबत और कोई तकलीफ़ पहुँचने वाली नहीं है। मैं उस दुआ का यक़ीन रखता हूँ:

مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَا لَمْ يَكُنْ، اِعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

कि जो अल्लाह चाहते हैं वह होता है, जो वह नहीं चाहते वह नहीं होता। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम को ईमन सुनाया नहीं बल्कि सिखलाया।

हाँ तो मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! क्या अ़र्ज़ करूँ। यूँ कि सारे-के-सारे पुराने सुबह से शाम तक बावजूद इसके कि अल्लाह की तरफ़ दावत देने की मेहनत कर रहे हैं और तब्लीग़ से जुड़े हुए हैं, और इस सारे काम की बुनियाद ही अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाना है। लेकिन मैं क्या अ़र्ज़ करूँ कि हमारे माहौल में भी अल्लाह के ग़ैर को बोला जाता है। काम करने वाले, जबकि काम करने वाला पुराना होगा, लेकिन अगर उसकी बात सुनोगे तो ऐसा अन्दाज़ा होगा कि बेचारा नया आदमी है।

मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ तो इतना भी बरदाश्त नहीं था कि कोई यूँ कह दे कि यह काम इत्तिफ़ाक़ से हो गया। फ़रमाते थे इत्तिफ़ाक़ से नहीं हो गया, यूँ कहो कि अल्लाह ने यूँ चाहा तो हुआ। यूँ क्यों कहते हो कि इत्तिफ़ाक़ से हो गया। जब इस तरह ईमान बनाया जाएगा, इस तरह ईमान की मेहनत की जाएगी और इस तरह अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ज़ाते आ़ली का तआ़रुफ़ कराना जब अपनी ज़िम्मेदारी समझी जाएगी, तब हालात और आमाल बनेंगे। ईमान के बनने पर अ़मल तो अन्दर का तक़ाज़ा बन जाएगा, अगर ईमान बन जाएगा। लेकिन अगर ईमान नहीं बना और जैसा ईमान होना चाहिए अगर ऐसा ईमान नहीं बना तो हालात दूर न होंगे।

मेरे प्यारो, दोस्तो! सारे आमाल इसी बुनियाद पर बरबाद हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने तआ़रुफ़ के साथ अ़मल को जोड़ दिया। ये आमाल तो अल्लाह का ध्यान लायेंगे, आमाल अल्लाह का ध्यान लाने का सबब हैं। इस ईमान के बनने पर तमाम चीज़ों का बनना मौक़ूफ़ है। अब हमारा काम यह होगा कि सुबह से शाम तक एक-एक फ़र्द उम्मत को अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाये। तमाम अम्बिया की मुश्तरका मेहनत है अल्लाह की तरफ़ दावत देना।

हमें तो दुनिया के अन्दर भेजा ही इसी काम के लि गया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे तो **दाओ़ी** (दावत देने वाला) और **मुबल्लिग़** (तब्लीग़ करने वाला) बनाकर भेजा गया है कि अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाना ही मेरा काम है। जो आदमी अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ इस तरह बुलायेगा जिस तरह तमाम अम्बिया ने अल्लाह की ज़ात की तरफ़ बुलाया है। अल्लाह के एक होने की तरफ़, उसके राज़िक़ होने की तरफ़, उसके शाफ़ी और उसके काफ़ी होने की तरफ़, और हर-हर चीज़ के

होने की निस्बत को अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ करेगा, अंधेरियाँ उतनी ही ख़त्म होती चली जाएँगी और बरकतें आती चली जाएँगी।

हमारी सारी मेहनत का खुलासा, यह जितनी भी भाग-दौड़ हो रही है और जितना यह जमाअ़तों में फिरना हो रहा है, ये मश्विरे पर मश्विरे, ये गश्त पर गश्त, यह तालीम पर तालीम, यह तीन रोज़ा पर तीन रोज़ा, यह चिल्ले और चार महीने, इन सब का खुलासा।

दोस्तो, बुज़ुर्गो! मुझे तो आप सेबसे यही बात अ़र्ज़ करनी है कि यह जो हमारी बुनियाद कमज़ोर होती जा रही है कि भाई किसी को देखो तो वह तक़रीर कर रहा है किसी मौज़ू (विषय) पर, कोई किसी मौज़ू पर, हर एक के ऊपर किसी-न-किसी चीज़ का ग़ल्बा है। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ जितनी ईमान के बनाने की बात, जितनी ईमान के बनाने की फ़िक्र थी उतनी किसी और चीज़ की फ़िक्र नहीं थी। इसलिए कि अगर ईमान बन गया तो हर चीज़ बन जायेगी। लेकिन अगर ईमान न बना और अल्लाह की ज़ाते आ़ली पर वह एतिमाद और भरोसा न हुआ जो होना चाहिए तो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! मौलाना इलियास साहिब फ़रमाते थे कि अगर ईमान नहीं बना तो अ़मलों पर 'इस्तिक़ामत' (यानी जमाव और साबित-क़दमी) न होगी। ये अ़मल रस्मी होंगे। उसकी नमाज़, यह नमाज़ उसकी आ़दत की नमाज़ होगी, या उसकी नमाज़ माहौल की होगी। उसकी नमाज़ वह ईमान वाली नमाज़ न होगी जो नमाज़ उसके मसाइल को हल करवा दे। नमाज़ तो उसके ईमान के बक़द्र होगी कि जैसा ईमान होगा वैसी नमाज़ होगी। इसलिए हमारा सबसे पहला काम यह है कि हम ईमान को बनाने की मेहनत पर लगें ताकि यह अल्लाह का ग़ैर हमारे अन्दर से निकले।

हम तो सुबह व शाम देखते हैं कि जिन्होंने दावा कर लिया है कि हम काम करने वाले और हम ईमान वाले हैं। अब क्या अ़र्ज़ करूँ, बात तो सख़्त है कि उनके एक-एक जुमले में से शिर्क की बू आयेगी। अब अगर बैठकर सोचो कि ऐसा बोला जाना क्या जायज़ था, क्या ऐसा बोला जाना मुनासिब था, और ऐसा बोले जाने से हमारे ईमान पर क्या धक्का लगा है, बैठकर सोचो तो अन्दाज़ा हो कि हम काम करने वाले दिन भर में कितना शिर्क बोल रहे हैं। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! किसी चीज़ की निस्बत अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ न करो। अगर कोई कहे कि यह मैंने किया है, या उसने किया है, या उस चीज़ या उस सबब से यह काम हुआ है, तो तुम यह कहो कि नहीं! यह

अल्लाह ने किया है। यह बात कहने के लिए ख़ुद अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं कुरआन पाक में।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने तो ईमान, ईमान, ईमान, ईमान जितना बोला है, शायद मौलाना यूसुफ़ साहिब ने अपनी उम्र में ईमान से ज़्यादा कुछ बोला हो। अल्लाह तआ़ला हालात में अपने बन्दों का ईमान देखते हैं। हालात लाते हैं फिर देखते हैं कि ईमान का क्या हाल है। देखते हैं कि हमारे ग़ैर की तरफ़ तो यह अपने हालात को रुजू नहीं करते हैं।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ईमान तब नहीं देखा जब यह नमरूद के सामने थे, वहाँ अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ (परिचय) करा रहे थे। हम लोग तो अपना ईमान उस वक़्त देखते हैं जब हम अल्लाह का तआ़रुफ़ करवा रहे होते हैं, नफ़्स समझाता है कि हाँ! मैं बड़ा ईमान वाला हूँ। और जब हम पर हालात आते हैं तो उन हालात में हमसे बड़ा बेईमान कोई नहीं होता।

जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम नमरूद के सामने अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ करा रहे थे, कि अल्लाह लाता है सूरज को पूरब से पश्चिम को, तू पश्चिम से लाकर दिखला दे। अल्लाह मारता है, ज़िन्दा करता है, मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है। कि अपने पैदा होने से लेकर क़ियामत में उठाए जाने तक और अपनी ख़ताओं को माफ़ करवाने तक हर चीज़ की निस्बत अल्लाह की ज़ात की तरफ़ कर रहे थे, उस वक़्त नहीं अल्लाह ने उनके ईमान को देखा, कि अभी तो यह हमारा तआ़रुफ़ करा रहे हैं, जब इनको हम चारों तरफ़ से हालात डालकर घेरेंगे, जब काम करने वालों पर हालात चारों तरफ़ से आयेंगे फिर देखेंगे उनका यक़ीन, कि किस चीज़ पर है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को सारी नमरूदियत में जितने हालात आए उनमें कहीं भी अल्लाह तआ़ला ने उनके यक़ीन का इम्तिहान न लिया, लेकिन जब नमरूद ने आग में डालने का इरादा कर लिया और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जब आग में डाला जाने लगा उस वक़्त जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर, दो फ़रिश्ते भी साथ में हैं, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास आकर कह रहे हैं कि मुझे अल्लाह ने वे सारी ताक़तें दी हुई हैं, और हम क़ौमे लूत की बस्ती को ले गए अपने 'पर' के ऊपर उठाकर बस्ती को वहाँ से उल्टा है, कि जहाँ पहुँचकर आसमानों पर बस्ती के मुर्ग़ों की आवाज़ें सुनाई दीं।

इतनी बड़ी ताक़त वाला और इतना बड़ा फ़रिश्ता जिसे "अमीन" कहा जाता है "जिब्राईल अमीन" अमानतदार फ़रिश्ता है। जो अल्लाह के ग़ैर की

तरफ़ से आते नहीं, नबियों के अलावा किसी के पास जाते नहीं, अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उतरते नहीं, इतना भरोसे वाला फ़रिश्ता जब वह आकर यूँ कहे कि ऐ इब्राहीम! आप जो चाहें हमें हुक्म दें, जो ज़रूरत हो वह आप हमसे कहें। यह पानी का फ़रिश्ता मेरे साथ है और पहाड़ों का फ़रिश्ता है, आप जो चाहें इनको हुक्म दें, यह सारी नमरूदियत उसी में झुलस कर ख़त्म हो जाए। यह दोनों पहाड़ों को एक ही में मिला दें और ये सब उसमें झुलस जायें, बस आप हुक्म करें कि क्या चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला को क़ियामत तक के लिए इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मिल्लत को मुतैयन करना है कि इब्राहीम को अल्लाह तआ़ला ने अपना दोस्त बना लिया।

दोस्त किस बात पर बना लिया? कि जब सारी नमरूदियत उनके ख़िलाफ़ हो गई और जिब्राईल जैसी ताक़त आपकी मदद करने के लिए आ गई, उनकी हिफ़ाज़त के लिए अपनी सारी ताक़त और क़ुव्वत लेकर पहुँची, कि आप कहें तो इस आग को यहाँ से ग़ायब कर दूँ। आप कहें तो यह पहाड़ों का फ़रिश्ता है, यह दोनों पहाड़ों को आपस में मिलाकर उन्हें ख़त्म कर दे। या यह पानी का फ़रिश्ता आग पर पानी बरसा दे। लेकिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उस आज़माइश से नजात पाने के बजाय जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से यूँ फ़रमायाः

أَمَّا إِلَيْكَ فَلَا

कि हमें हरगिज़ तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। ऐ जिब्राईल! हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जब यहाँ हालात इतने तंग हो गए और नंगा करके 'मिन्जनीक़' (यह पुराने ज़माने में पत्थर फेंकने की एक दस्ती मशीन थी, आजकल की तोप को इसकी आधुनिक शक्ल कहा जा सकता है) पर बैठा दिया, कि अब यह तोप के ज़रिये आग में फेंके जाने वाले हैं। अब भेजा जिब्राईल को, कि हमारी ज़रूरत? इब्राहीम ने कहा, नहीं तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। जब यह कह दिया कि हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। 'जिस तरह मददें किसी वास्ते से की जाती हैं, इसी तरह मददें बराहे-रास्त (यानी बिना किसी वास्ते और ज़रिये के) की जाती हैं'।

अल्लाह तआ़ला ने तमाम अम्बिया के लिए किसी-न-किसी सबब को इख़्तियार किया है। किसी पर बिजली गिराई, किसी को धँसाया, किसी को डुबोया, किसी पर ज़लज़ले लाए, किसी की बस्ती को उठाकर पल्टा और किसी के लिए फ़रिश्ते नाज़िल किए। फ़रिश्ते के ज़रिये मदद की, लेकिन हज़रत

इब्राहीम के हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को इनकार करने पर अल्लाह तआ़ला ने आग को बराहे-रास्त ख़िताब फ़रमाया तो आग ठंडी हो गई।

जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपनी मदद के लिए किसी को वास्ता और ज़रिया नहीं बना रहे हैं तो हमें क्या पड़ी है कि हम मदद करें किसी वास्ते से। जब इब्राहीम जिब्राईल को 'वास्ता' नहीं बना रहे हैं तो अब कौनसा वास्ता रह गया, कि हम अपने इब्राहीम की किसी वास्ते और किसी ज़रिये से मदद करें।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हालात में ईमान और यक़ीन परखा जाता है। काम करने वालों की भी आज़माइश हालात में होगी। ताजिरों पर हालात लाए जाते हैं ताजिरों को समझाने के लिए। काश्तकारों पर हालात लाए जाते हैं काश्तकारों को समझाने के लिए। उनकी साल में एक़-एक या दो-दो फ़सलें ख़राब होती हैं, लेकिन अगर अल्लाह की ज़ात से उगने का यक़ीन नहीं होगा तो उस वक़्त तक अल्लाह की ज़ात से ख़राब होने का यक़ीन कैसे होगा। तो अब अगर नुक़सान हो तो यह उस नुक़सान को भी अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ मन्सूब करेगा। अल्लाह तआ़ला तो क़ुरआन में हमारा ऐसा नक़्शा खींचते हैं कि जब उनपर हालात आते हैं तो यह कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तू करेगा। और उनके हालात जब हम ख़ुद बना देते हैं तो ये हमारे साथ फिर शिर्क करते हैं। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें अपने अन्दर से अल्लाह के ग़ैर को दावत के ज़रिये से निकालना है। हर एक से अल्लाह की बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ करवाना है। हर माहौल में अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) करायें। अब हमारे अन्दर ईमान से 'इस्तेदाद' (क़ाबलियत) पैदा होगी अ़मलों पर चलने की।

ताजिर अपनी तिजारत में, ज़मीनदार अपनी ज़मीनदारी में, मुलाज़िम अपनी मुलाज़मत में, हर जगह अहकामात को पूरा करेगा, कि मुझसे मुताल्लिक़ अल्लाह का क्या हुक्म है? और जहाँ-जहाँ ईमान पहुँच जायेगा हुक्म वहाँ पहुँचेगा, कि यह हुक्म तेरे कान से मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरे हाथ के मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरी ज़बान के मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरी शर्मगाह के मुताल्लिक़। जहाँ-जहाँ ईमान पहुँच जायेगा, तो हर हुक्म का हर जगह पहुँचना यह हुक्म ज़िन्दा ही ईमान पर होगा, कि जब ईमान दिल में आ जायेगा तो जिस्म के तमाम अंगों में आ जायेगा। यानी अल्लाह का ध्यान आ जायेगा, अब यह सही मायने में ज़ाकिर बन जाएगा, यानी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने वाला बन जाएगा। ताजिर का ज़िक्र क्या है? ताजिर का उसकी तिजारत का

ज़िक्र यह है कि वह अल्लाह तआला को देख रहा है, अब यह ताजिर ख़ियानत नहीं करेगा। हाकिम अपनी हुकूमत में जुल्म नहीं करेगा। ज़मीनदार अपने ज़मीनदारे में जो 'उशर' (यानी दसवाँ) और जो ज़कात आएगी उसे देगा। कि हर लाईन के अन्दर उन लाईनों में चलने वाले, उस लाईन के मुताबिक़ आमाल में अल्लाह तआला को देखकर चल रहे हैं।

मेरे दोस्तो! नमाज़ में जब अल्लाह का ध्यान आएगा तो यह नमाज़ उसके हर अमल को नमाज़ पर ले जाएगी। कि यह ज़िन्दगी के हर शोबे में अल्लाह तआला के तमाम अहकामात का पाबन्द होकर चलेगा। यूँ आया है कि इतना ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! ज़िक्र क्या है? ज़िक्र यह है कि मैं किसी भी माहौल में और किसी भी नक़्शे में, किसी भी चीज़ की निस्बत अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ नहीं करूँगा। बस यह ज़िक्र है। यूँ आता है कि जो आदमी अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ इस तरह कराएगा, ताजिरों से, काश्तकारों से, मुलाज़िमों से, कि जो कुछ दुनिया में होता है वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात से होता है, तो ये सारे-के-सारे ताजिर सारे काश्तकार, सारे मुलाज़िम, जो ग़लत यक़ीन लिए बैठे हैं, वे सारे-के-सारे उसको पागल कहेंगे। अब बनेगा मतलब हदीस का कि इतना कसरत से ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। तो अगर यह तन्हाई में ज़िक्र करता रहे और बाहर निकल कर दावत न दी और एक-एक से अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ न कराया कि हमारा बनाने वाला, हमारा पैदा करने वाला, हमें खिलाने वाला, हमें पिलाने वाला, हमें मारने और ज़िन्दा करने वाला, हमें दोबारा ज़िन्दा करके खड़ा करने वाला, यह सारी ज़मीन और आसमान के दरमियान की चीज़ें बनाने वाला, यह कौन है?

अब हर चप्पे-चप्पे पर जब उसका तआरुफ़ कराएगा, अब जब ताजिरों से जाकर यह कहेगा तो ताजिर कहेंगे कि यह पागल है। हम तो यक़ीन रखते थे कि तिजारतों से माल आता है और हुकूमतों से मसाइल (समस्याएँ) हल होते हैं। लेकिन यह आकर आज यूँ कह रहे हैं, और कहीं मौक़ा ही नहीं देते कि किसी सबब से भी कुछ होता है। तो अब ये सारे उस ज़ाकिर को पागल कहेंगे। सारे काश्तकार, सारे हुकूमत वाले, सारे हथियारों वाले, सारे दवाओं वाले उस ज़ाकिर को पागल कहेंगे। अब यह नबियों की तरह पागल कहलाया।

अब जब चल-फिरकर यह ताजिरों से, हुकूमत वालों से, काश्तकारों से यह कहेगा कि तिजारतों से कुछ नहीं होता, हुकूमतों से कुछ नहीं होता, जो

कुछ होता है या जो हो रहा है सब कुछ अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के करने से होता है। ये सारे असबाब (साधन) तो ख़ाली बरतन हैं। इन ख़ाली बरतनों में अल्लाह चाहेंगे तो इन बरतनों में डालकर दें और अल्लाह चाहें तो बग़ैर बरतनों के देंगे।

अल्लाह तआ़ला ने ये असबाब इसलिए नहीं बनाए कि अल्लाह तआ़ला यह देख रहे थे कि इनसान को इन असबाब की ज़रूरत है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने ये असबाब इसलिए बनाए हैं ताकि यह देखें कि तुम यक़ीन इन असबाब पर रखते हो या यक़ीन मेरी ज़ात पर और मेरे अहकामात पर, जिस पर हमने वायदे कर रखे हैं दुनिया और आख़िरत के सारे मसाइल के हल होने के। अल्लाह तआ़ला ने ये असबाब इसलिए बनाए हैं ताकि हमें आज़माएँ यह कि यक़ीन असबाब पर रखते हो या मेरी ज़ात पर रखते हो, वरना अल्लाह तआ़ला को हमें पालने के लिए असबाब की ज़रूरत नहीं थी, अल्लाह की पनाह। अल्लाह तआ़ला को असबाब की ज़रूरत नहीं है, अल्लाह तआ़ला असबाब का मोहताज नहीं है। इसलिए हम सब यह जान लें कि यह काम हम सबके करने का है, हर फ़र्द के करने का है, हर साथी इस काम को अपना काम समझकर करे, फिर जो तक़ाज़े हमारे ज़िम्मे आ रहे हैं अगर हम वे तक़ाज़े पूरे करेंगे तो अल्लाह हमें दूसरों की हिदायत का ज़रिया बनाएँगे। और अगर यह तक़ाज़ा दूसरों पर डालेगा तो उसका मुजाहदा नाक़िस हो जाएगा।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! जितनी मेहनत अल्लाह के करम से हो रही है, यह बात तो ज़ाहिर है कि अल्हम्दु-लिल्लाह काम हो रहा है। लेकिन जो बात चाही जा रही है उसको वजूद में लाने के लिए उसको अ़मल में लाने के लिए हमें अपनी क़ुरबानी की सतह (स्तर) को बुलन्द करना होगा। क़ुरबानी की सतह बढ़ाते-बढ़ाते इसपर आ जायें कि क्या अ़र्ज़ करूँ। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि साल का चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, घर की और मस्जिद की तालीम, रोज़ाना कम-से-कम ढाई घन्टे, यह तो हर उम्मती के अपनी ज़ात की तब्दीली लाने के लिए है। लेकिन अगर ये यूँ चाहें कि सारे आ़लम से बातिल ख़त्म हो और सारे आ़लम में हक़ क़ायम हो, अगर यह चाहते हो कि सारे आ़लम में तब्दीली आ जाये तो उसके लिए अपनी ज़ाती तब्दीली को छोड़कर आ़लमी तब्दीली वाला निसाब (कोर्स) इख़्तियार करना पड़ेगा।

यह साफ़ लिखा हुआ है मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की हिदायत के अन्दर कि इसको छोड़ो और अब अपनी मेहनत का रुख़ बदल कर अपनी कुरबानी की सतह बुलन्द करके अब इसपर आओ कि आ़लम में तब्दीली आए। और मेरे दोस्तो! जब तक आ़लमी तब्दीली वाली मेहनत नहीं करेगें उस वक़्त तक हमारे अपने अन्दर हरगिज़ तब्दीली नहीं आ सकती। इसलिए कि यह तो अपनी ज़ात को बदल रहा है, माहौल को थोड़े ही बदल रहा है, अफ़राद (व्यक्तियों) से थोड़े ही माहौल को बदला जा सकता है, माहौल तो मजमूए से बदलता है, और मजमूआ़ उस मेहनत्त से बदलेगा जिस तरह से सहाबा-ए-किराम के दौर में बदला है। जब तक मेहनत की वह सतह नहीं होगी जो सतह सहाबा-ए-किराम की थी उस वक़्त तक तब्दीली वह नहीं आएगी जो तब्दीली सहाबा के दौर में आई थी। उस तब्दीली के लिए तो हमें सहाबा-ए-किराम वाली मेहनत करनी होगी। वह मेहनत कैसे होगी।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! पुराने अपनी सतह को छोड़कर जब आगे बढ़ेंगे यानी जब ये अपनी सतह छोड़ेंगे तब नए आगे बढ़ेंगे। ये पुराने आगे बढ़ेंगे तब नए आगे बढ़ेंगे। यह भी ज़रा सोचने की बात है कि कहीं हम पुरानों ने दूसरों का रास्ता तो नहीं रोका हुआ है, कि अ़वाम यह कहे कि पुराने अगर हर साल के चार महीने पर आयें तो हम चारे महीने दें। अभी तो मेरे दोस्तो जो सतह हमारे सामने है हम उसी को सतह समझे हुए हैं। और अगर हमने यह मामूल बनाया हुआ है कि बस इसी तरह करते-करते मर जाना है तो ऐसे लोग तरक़्क़ी नहीं किया करते। इसलिए हमें अपनी कुरबानी की सतह बढ़ाना है। जब इस सतह से आगे हम बढ़ेंगे तब हमें पता चलेगा कि हमने पीछे वालों के लिए कैसे रास्ता रोका हुआ था।

अब क़दम पर क़दम उठाओ और कुरबानियों पर कुरबानियाँ दो, और हिम्मत करके हर साल के चार महीने पर और रोज़ाना के आठ घन्टे पर और बजाय हर महीने तीन दिन के महीने के दस दिन पर आना चाहिए। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि हमें हर उम्मती की तिहाई जान, तिहाई माल और तिहाई वक़्त चाहिए।

واٰخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین